Creation Autonomous Academy

प्रचार कौशल

लेखक
डॉ0 रामराज डेविड

आभार

सर्वप्रथम मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि उसने मुझे अपनी बुद्धि और समझ प्रदान की कि मैं प्रचार कौशल पर कुछ लिख सकूं। तत्पश्चात मैं अपने शिक्षकों के प्रति आभार प्रकट करना चाहता हूं जिन्होंने मुझे इतनी गहनता से वचन की शिक्षा प्रदान किया। जिन्होंने मुझे यह पुस्तक लिखने के लिए प्रेरित किया। में उन सभी व्यक्तियों का आभारी हूं जिन्होंने पुस्तक के लेखन, संशोधन, टाइपिंग, और अंतिम रुप देने में, मुझे सहयोग प्रदान किया। उन मित्रों का भी मैं आभारी हूं जिनका स्नेह और सहयोग मुझे हमेंशा मिलता रहा।

Creation Autonomous Academy

लेखक का प्राक्कथन

आज कल खराई से प्रचार करने की आदत कलीसिया में नहीं रह गयी है। अधिकांश प्रचारक व्यस्तता का बहाना कर परिश्रम पूर्वक तैयारी नहीं करना चाहते हैं। जो तैयारी करते भी हैं वे विभिन्न कारणों से करते हैं, न कि खराई से प्रचार करने के लिए।

दुर्भाग्यवश खराई से वचन का प्रचार करने को बहुत से प्रचारक अनदेखी करते हैं। बहुत से अगुवे सेवकाई की मांग से इतने अधिक व्यस्त हो जाते हैं कि वे प्रचार को कामचलाऊ तरीके से तैयार करते हैं। दूसरे कुछ ढीले -ढाले या अनुशासनहीन हैं।

ऐसी स्थिति में इस विषय पर हिन्दी में सामग्री भी उपलब्ध नहीं है। जो कुछ उपलब्ध है भी वह नगन्य है और आम प्रचारकों की पहुंच से बाहर है।

यह अध्ययन इस बात पर ध्यान केन्द्रित करेगा कि किस प्रकार पवित्र आत्मा की अगुवाई में वचन से परिश्रम पूर्वक सही प्रचार तैयार करने वाली आदत को विकसित किया जाए।

‘उपदेश कला’ नामक यह पुस्तक अनेक वर्षों के अध्ययन-अध्यापन के उपरान्त हिन्दी भाषी प्रचारकों की आवश्यकता के अनुसार तैयार की गयी है। यह पुस्तक प्रचारकों और अगुवों के अन्दर सही प्रचार तैयार करने व वचन का सही प्रचार करने की आदत डालने के लिए लिखी गयी है। ताकि कलीसिया के विश्वासियों को उनकी आवश्यकता के अनुसार वचन का सही भोजन खिलाया जा सके एवं कलीसिया को झूंठी शिक्षा के हमले से बचाया जा सके।

यह पुस्तक सभी पाठकों के लिए सरल, रोचक एव व्यवहारिक है। इसमें प्रत्येक पाठ को नमूने के साथ समझाया गया है। पुस्तक में उदाहरणों का समुचित प्रयोग किया गया है।

मेरी इच्छा है कि बाइबल के प्रचारक एवं अगुवे इस पुस्तक से सहायता प्राप्त करें। बाइबल से सही व्यवहारिक प्रचार तैयार करने एवं प्रचार करने हेतु इस पुस्तक का उपयोग करें। मैं वस्तुतः इस पुस्तक को प्रस्तुत करने के द्वारा पाठकों के साथ अपने उस दर्शन को बांटना चाहता हूं, जो परमेश्वर ने मुझे दिया है। ‘प्रत्येक प्रचारक परमेश्वर के वचन को खराई से सुनाने वाला हो।’

डॉ० रामराज डेविड

Creation Autonomous Academy

विषय-सूची

भूमिका

1-प्रचार का इतिहास 07

2-उपदेश कला 12

3-मूलपाठ विषयक उपदेश 22

4-जीवन चरित्र पर आधारित उपदेश 33

5-व्याख्यात्मक उपदेश 38

- क-अच्छे व्याख्यान की बुनियाद
- ख-कार्य परिभाषा
- ग-खण्ड का अर्थ निकालना
- घ-सन्दर्भ का अनुशासन
- च-सन्देश का लागूकरण
- छ-सन्देश की तैयारी
- ज-प्रचार को प्रस्तुत करना
- झ-मिट्टी के पात्रों में धन

6-प्रचारक 92

बिब्लियोग्राफी

Creation Autonomous Academy

भूमिका

कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने पाए, पर वचन और चाल चलन, और प्रेम, और विश्वास और पवित्रता में विश्वासियों के लिए आदर्श बन जा। जब तक मैं न आऊं, तब तक पढ़ने और उपदेश देने और सिखाने में लौलीन रह। भविष्यद्वाणी के द्वारा प्राचीनों के हाथ रखते समय जो वरदान तुझे मिला था, निश्चिंत मत रह। उन बातों को सोचता रह और उन्हीं में अपना ध्यान लगाए रह। ताकि तेरी उन्नति सब पर प्रकट हो। अपनी और अपने उपदेश की चौकसी रख। (1 तीमु० 4:12-15)

ये निर्देश पौलुस ने तीमुथियुस को दिए परन्तु ये हमारे लिए भी लागू हो सकते हैं। परमेश्वर के लिए बोलने के लिए एक वरदान की आवश्यकता होती है जो परमेश्वर की ओर से प्राप्त होता है तथा कलीसिया के द्वारा अनुमोदित व दृढ़ किया जाता है। यह वरदान न कमाया जा सकता है न सीखा जा सकता है, उसे खरीदा नहीं जा सकता न उसे पढ़ाया जा सकता है।

वे जिनको यह वरदान दिया गया है उन्हें आदेश दिया गया है कि वे इसे अनेदखा न करें परन्तु इसे विकसित करें। वे मनन के साथ इसका अभ्यास करें। इसका लक्ष्य दक्षता को प्राप्त करना नहीं परन्तु विकास है। वे जिनसे परमेश्वर ने बात की है उनके परमेश्वर ने बातें की इसका भी उन्हें अनोखा अनुभव हो सकता है।

कई लोग बाइबल कालेज में इसलिए आते हैं कि वे ये सीखें कि परमेश्वर का वचन कैसे प्रचार किया जाता है। वे बाइबल सम्बन्धी विषयों, अध्यात्म विज्ञान, कलीसियाई इतिहास, तथा मसीही सेवकाई का अध्ययन करते हैं। उनकी यह आशा होती है कि सारे पाठ्यक्रम/विषय परमेश्वर का वचन कैसे प्रचार किया जाता है इसे उन्हें पढ़ाने में सहायक होंगे। वे चाहते हैं कि परमेश्वर उन्हें उन लोगों की सहायता करने के लिए उपयोग करे जिन्हें परमेश्वर का वचन सुनने की आवश्यकता है।

क्या ऐसा हो सकता है? क्या स्त्री-पुरुष यह सीख सकते हैं कि परमेश्वर के वचन से कैसे प्रचार किया जाता है। उत्तर एक ही समय में हां या न दोनों हो सकता है।

परमेश्वर के वचन में से प्रचार करने से सम्बन्धित बहुत सी बातें हैं जिसे सीखा नहीं जा सकता उदाहरण के लिए यदि परमेश्वर के वचन को सुनना है तो पवित्र आत्मा की सहायता आवश्यक है। पवित्र आत्मा वक्ता को बोलने में तथा श्रोता को सुनने में सहायता करता है। आप पवित्र आत्मा के विषय किसी शिक्षक से या सेमिनरी में नहीं सीख सकते। शमौन टोना करने वाले ने सामरिया में पतरस और यूहन्ना से पवित्र आत्मा को खरीदना चाहा। (प्रेरितों 5:9-14) पवित्र आत्मा को कैसे प्राप्त करते हैं यह सीख कर कोई भी परमेश्वर के वचन से प्रचार करना नहीं सीख सकता।

हर कोई एक कुशल वक्ता नहीं बन सकता है। कुछ लोग महान गायक कभी नहीं बन सकते हैं क्योंकि उनके पास अच्छी मधुर आवाज नहीं होती है। उसी प्रकार कुछ लोग महान वक्ता कभी भी नहीं बन सकते हैं। क्योंकि उनमें कुछ प्राकृतिक वरदानों तथा योग्यताओं की कमी होती है। जिसे न पढ़ाया जा सकता है न सीखा जा सकता है।

प्रायः फिर भी प्रत्येक जन एक अच्छा वक्ता बन सकता है। वे सीख सकते हैं कि वार्तालाप कैसे कार्य करता है-लोगों को सुनने के लिए, समझने के लिए, बढ़ने के लिए और परिवर्तन के लिए कौन सहायता करता है। वे अपनी आवाज का सही उपयोग करना तथा एक स्पष्ट संदेश लिख सकते हैं।

अध्ययन, विचार तथा अभ्यास की सहायता से आप भी अंतर्ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं और अपनी कला को विकसित कर सकते हैं। जो परमेश्वर के वचन से प्रचार करने में आपकी सहायता करेगी। परमेश्वर द्वारा दिए गए वरदान को तिरस्कृत न किया जाए और न अनदेखा किया जाए। कई ऐसे लोग हैं जो हमारे द्वारा परमेश्वर का वचन सुनना चाहते हैं। कैसी महान जिम्मेदारी है। कैसा अनोखा अवसर है।

Creation Autonomous Academy

अध्याय- 1

प्रचार का इतिहास

प्रेरितों और उनके सहकर्मियों की मृत्यु के बाद एक अवनति का समय तब तक था जब तक धीरे-धीरे क्रमिक रुप से प्रचार, शक्ति में अपनी पुरानी ऊंचाइयों तक चौथी और प्रारम्भिक पांचवी शताब्दियों में नहीं पहुंच जाता है। तब यह अंधकारमय और निर्बलता की एक लम्बी रात्रि में पड़ जाता है। जब तक वह क्रूसेड के समय के प्रवचनों और मध्य युगीन दार्शनिकतावाद के उत्थान के साथ ही पुनर्जीवित होना प्रारम्भ नहीं करता और पुनर्जीवित होकर अपनी मध्य युगीन शक्ति की ऊंचाइयों तक तेरहवीं शताब्दी में न पहुंचा। तब पुनः पवित्रता और शक्ति में एक सामान्य और भयातुर गिरावट का समय आया किन्तु धर्मसुधार का आगमन, प्रारम्भिक सोलहवीं शताब्दी में धीरे-धीरे अपनी चोटी तक बाल पकड़ते हुए एक अन्य ऊंची लहर के रुप में होता है। उसके बाद, जब मसीही जगत की एकता सर्वदा के लिए टूट जाती है और अन्य दूसरी बातें भी सहायक होती हैं, यह आधुनिक काल विभिन्न देशों में प्रचार की प्रकृति में इतनी महान विभिन्नताओं का प्रदर्शन करता है कि सामान्य शब्दों में प्रचार का वर्णन करना इतना सरल नहीं हैं।

निम्नलिखित रुप से प्रचार के सामान्य इतिहास के लिए पांच स्पष्ट परिभाषित कालों को मान सकते हैं।-

प्रथम काल-ई०स० 70-430:-

प्राचीन या धर्मशास्त्रीय युगा प्रेरितिक पिताओं के समय से लेकर क्रिसोस्टोम और अगस्टीन के परिश्रमों की समाप्ति तक।

द्वितीय काल-ई०स० 430-1095:-

प्रारम्भिक मध्ययुगीन या अन्ध युगा क्रिसोस्टोम और अगस्टीन के समयों के बाद से मठवासी पीटर और पोप अर्बन द्वितीय के द्वारा प्रथम क्रूसेड के प्रचार तक।

तृतीय काल- ई०स० 1095-1361:-

संक्रमणकालीन या धर्मसुधार युगा टावलर और विक्लिफ्फ के समयों के बाद से अन्तिम महान धर्मसुधारक जान क्नाक्स की मृत्यु तक।

चतुर्थ काल-1572-1738:-

प्रारम्भिक आधुनिक या मतान्धता युगा महान धर्मसुधारकों के समयों के बाद से व्हिटफील्ड और वेस्ली के अधीन ब्रितानी जागृति के प्रारम्भ तक।

पांचवा काल-1738-1900:-

पूर्व आधुनिक युग या सुसाचार-प्रचारकीय युगा व्हिटफील्ड और वेस्ली के समयों के बाद से उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक।

उक्त पांच काल हैं।

Creation Autonomous Academy

1-पैत्रिकीय प्रचारः-

प्रेरितों की मृत्यु के साथ ही एक ऐसा काल आया जिसे पैत्रिकीय कलीसिया पितरों का युग कहा जाता है। यह द्वितीय शताब्दी के द्वितीयार्द्ध और तृतीय शताब्दी का प्रथम भाग था कि मसीही प्रचार के प्रारुप और संदर्भ में विशिष्ट परिवर्तन आया। आने वाली कुछ शताब्दियों में प्रसिद्ध प्रचारक उदय हुए।

1) शहीद जस्टिन-लगभग 100-175:-

प्रथम और सबसे महान धर्म मंडल शास्त्रियों में से एक था। वह अफलातूनी सिद्धान्तों का एक शिक्षक और दर्शन शास्त्र का एक विद्यार्थी था। उसने रोम में प्रथम मसीही शाला की स्थापना की। उसने कलीसियाई जीवन की उसके सताने वालों से रक्षा की थी।

2) सिकन्दरिया का क्लेमेन्ट-150-220:-

मसीही विश्वास के सिद्धान्तों में कलीसिया सदस्यता के प्रत्याशियों को शिक्षा देने के उद्देश्य से उसने एक कैटेकेटिकल शाला की सिकन्दरिया में स्थापना की। मर० 10:17-31 पर आधारित धनवान व्यक्ति पर उसका प्रसिद्ध प्रचार अभी भी प्रचलित है।

3) तरतलियन-160-230:-

लतीनी मसीही विचारों को एक सूत्र में पिरोने का उसे सम्मान प्राप्त है। रोमी सताव से प्रेरित होकर उसने मसीहियत के बचाव में 'अपोलोजेटिक्स' की भावना रचना की

4) आरिगन-184-254:-

क्लेमेन्ट के बाद वह सिकन्दरिया के कैटेकेटिकल शाला का प्रमुख बना। ऐसा बताया जाता है कि वह एक अच्छा शिक्षक था। पवित्र शास्त्र के अपने प्रतीकात्मक व्याख्या के लिए वह प्रसिद्ध है।

5) सिप्रियन-200-258:-

वह अपने उस प्रचार के लिए माना जाता है जिसमें आचार और व्यवस्था संबंधी व्यवहारिक समस्याओं पर विचार किया गया है।

6) अम्ब्रोस-340-397:-

पश्चिम में वह अपने उन कार्यों के लिए स्मरण किया जाता है जिसमें प्रचार पूर्ण शास्त्र टीकाएं और भक्ति गीत सम्मिलित हैं। दिनांक 25 अप्रैल 397 को उसने अगस्टीन को बपतिस्मा दिया।

तौभी, अगस्टीन (पश्चिम) और क्रिसोस्टोम (पूर्व) दो लोगों को पैत्रिकीय प्रचार के शीर्ष के रुप में देखा जाता है।

पैत्रिकीय प्रचार और लेख, विचारों में समृद्ध, लालित्यपूर्ण मनोहर और कुछ तो उपदेश कला के भव्य उदाहरण हैं। कलीसियाई आराधनाओं में उपदेश का एक परम्परागत स्थान बन गया। उसी के अनुरुप संदेशों को शास्त्र आधारित रखा जाता था जिसका पठन उस दिन की आराधना में किया जाता था। आम तौर पर व्याख्यात्मक प्रकार के उपदेश का प्रचार किया जाता था। क्रिसोस्टोम और अगस्टीन के विचारों में बाइबल के सम्पूर्ण पुस्तकों पर संदेशों के क्रम हैं। परन्तु पांचवी शताब्दी में निम्नलिखित कारणों से मसीही प्रचार में गिरावट आ गयी।-

Creation Autonomous Academy

1-सन्यासवाद, 2-लिखित आराधना पद्धति, 3-राज्य धर्म के रुप में मसीहियत का उदय होना तथा 4-कलीसिया और गैर कलीसियाई शक्ति में उन्नति।

2-अंधकार के वर्षः अवनति और नवीनीकरणः-

ई०स० 476 में रोम के पतन के बाद ही जिन अंधकार वर्षों का आगमन हुआ, काफी मात्रा में प्रचार का स्थान कम हो गया। अधिक औपचारिकतापूर्ण उपासना विधि के कारण उपदेश का स्थान समाप्त हो गया तथा मिस्सा पर अधिकाधिक बल दिया जाने लगा। मसीहियत जिसे आधारभूत रुप से एक जोशीला जन आन्दोलन समझा जाता था, अब अधिकाधिक कलीसियाई संस्था का रुप धारण कर लिया। इस प्रकार प्रारम्भिक अंधकार वर्षों में प्रचार, इतिहास में अपने सबसे निचले बिन्दु पर पहुंच गया। तो भी कुछ ऐसे लोग थे जो अपने डायोसिस की सीमाओं के बाद मिशनरी कार्य का बीड़ा उठाया।

कोलम्बा-521-597ः-

इसका जन्म आयरलैण्ड में हुआ और मोबिल्ले के आयरिश मठ में उसकी शिक्षा दीक्षा हुई। आयोना के द्वीप में सन् 563 में एक मठ की स्थापना की। इस केन्द्र से मसीहियत ने स्काटलैण्ड में प्रवेश किया।

बोनिफेस-675-754ः-

वह एक बेनेडिक्टाईन मिशनरी था परन्तु जरमनी में एक मिशनरी प्रचारक के रुप में विशेष रुप से सफल रहा। उसे जर्मनी का प्रेरित कहा जाता था। किन्तु मिशनरी प्रचारकों की गतिविधियों के बाद भी कलीसिया की दशा आमतौर पर निराशाजनक थी। कई क्षेत्रों में उपदेशों को हटा दिया गया और उनकी जगह पर मिस्सा के समापन के समय एक संक्षिप्त वक्तव्य को रख दिया गया।

ई०स० 1000 के बाद क्रूस युद्ध (क्रूसेड) के लिए सैनिक तैयार करने के लिए बड़े-बड़े प्रचार मिशनों को संगठित किया गया। ध्यान देने योग्य दो प्रचारक थे जो इसी काल में उदित हुए: साधू पीटर और क्लेयर वाक्स का बरनार्ड। किन्तु इन दोनों में से क्लेयर वाक्स का बरनार्ड अधिक अच्छे से ज्ञात प्रचारक था। जो अपने श्रोताओं पर पकड़पूर्ण प्रभाव छोड़ता था। मध्य युग के प्रचारकों ने आरिगैन के प्रतीकात्मक व्याख्या के तरीकों को अपनाया। परन्तु दैनिक जीवन से प्रचारक का बहुत दूर का रिश्ता था। धर्म सुधार से पहले की तीन शताब्दियों ने पूरे पाश्चात्य विश्व में प्रचार पर जोर देने के एक बड़े नवीनीकरण का अनुभव किया।

तेरहवीं शताब्दी में प्रचार-नवीनीकरण के आरम्भ का अनुभव किया गया। उस समय प्रवचन के दो झुण्ड उदित हुएः प्रीचिंग ब्रदर्स आफ डांमिनिक (1170-1221) और ब्रदर्स आफ द पुवर आफ फ्रैन्सिस आफ असिसी (1182-1226) दोनों झुण्डों का विकास ऐसे समय में हुआ जबकि यह देखा गया कि कलीसिया और समाज की भ्रष्ट स्थिति से निपटने के लिए प्रचार की आवश्यकता है। अतः फ्रैन्सिस्कन और डामिनिकन लोगों ने प्रचार के सिद्धान्त और कला के प्रति महत्वपूर्ण योगदान किया। फ्रैन्सिस्कन फायर्स लोगों में पाडेरा का अन्थोनी सबसे अच्छे जाने माने प्रचारकों में से एक था। थामस अक्विनास कदाचित मध्य युग का सबसे महान अध्यात्मवैज्ञानिक था, विषयों के स्पष्टीकरण और तर्क पेश करने के लिए बहुत अधिक सरल और जीवन्त तुलनात्मक प्रचार में भी अच्छे थे।

धर्मसुधार से पहले प्रचार को जांन विक्लिफ (1320-1384) के जिसे धर्म सुधार के लिए सुबह का तारा कहा जाता है, कार्यों में बहुत अधिक सफलता मिली। ऐसा कहा जाता है कि वह प्रचार की प्राथमिकता के नए सिद्धान्त का सबसे शक्तिशाली चैम्पियन था। आम भाषा में बाइबल का उसका अनुवाद जन साधारण को सुसमाचार प्रचार करने के लिए उसकी गहन चिंता को प्रकट करता है।

Creation Autonomous Academy

धर्म सुधार युगः-

इस युग में प्रचार में परमेश्वर के वचन को महत्व देने वाले महान चैम्पियन के रुप में मार्टिन लूथर का उदय हुआ। उसने जोर दिया कि कलीसिया उपासना में उपदेश का केन्द्र स्थान होना चाहिए। जीवित वचन सबसे अधिक क्रियाशील रुप से तब कार्य करता है जब वह पुलपिट से प्रचारा जाता है। उसने प्रचार की प्रक्रिया के साथ परस्पर जूझने में जीवित परमेश्वर को ढूंढ़ने पर जोर दिया। लूथर के लिए, यद्यपि विश्वास की प्राप्ति मात्र प्रचार के माध्यम से ही नहीं होता है किन्तु प्रचार के द्वारा विश्वास में सिद्धता आती है। इस प्रकार उसने पवित्र विधि की जगह परमेश्वर के वचन पर जोर दिया, क्योंकि जब प्रचार में परमेश्वर के वचन को जीवन्त किया जाता है तब यह बाइबल में जीवन्त हो जाता है। प्रचार का ऐसा अध्यात्म ज्ञान लूथर के युग के लिए अतिवादी सिद्धान्त था।

कुछ वर्षों के बाद जिनेवा में जान कैल्विन (1509-1564) प्रगट हुआ। वह एक महान व्याख्याकार हुआ। उसके लिए लिखित वचन बाइबल और प्रचार के द्वारा उसकी व्याख्या सर्वोपरि थी। उपदेशों में सम्पूर्ण बाइबल की खुलासा पूर्ण व्याख्या करने पर उसने बहुत जोर दिया। एक लगातार क्रम में उसने पवित्र शास्त्र की पुस्तकों पर प्रचार किया। उसने जोर दिया कि एक सत्यनिष्ठ कलीसिया के लिए प्रथम और प्रमुख कार्य वचन का विश्वासयोग्यता से प्रचार करना है।

अंग्रेज धर्मसुधारक लोग कैल्विन से बहुत अधिक प्रभावित थे। हघ लेटिमर, अंग्रेज धर्मसुधार का एक लोकप्रिय प्रचारक था। उसने कलीसिया के धर्म सेवकों पर दोष लगाया कि वे वचन के प्रचार का त्याग करते हैं जिसके कारण से ही आत्मिक अंधकार छाया हुआ है।

पवित्रतावादी (प्युरिटन) और सुसमाचारवादी (इवेन्जेलिकल):-

धर्म सुधारकों के द्वारा प्रचार को जो महत्ता प्रदान की गयी थी उसे पवित्रता वादियों ने आगे बढ़ाया। ये लोग प्रचार के लिए पूरी तरह समर्पित थे। पवित्रता के प्रचारक के रुप में सत्रहवीं शताब्दी में रिचर्ड बावस्टर सबसे अलग था, जो ‘दि रिफायर्ड पास्टर’ के लेखक थे। शिक्षा देने में बावस्टर का दोहरा तरीका थाः एक तरफ तो परिवारों में शिक्षा देने के कार्य के अग्रगम्य थे तो दूसरी तरफ वे वचन से सार्वजनिक प्रचार में भी लगे हुए थे।

जान वेस्लीः-

अपने हृदय में गरमाहट अनुभव के बाद वह उस ‘सेंत मेत उद्धार’ का प्रचार करना प्रारम्भ किया जिसका उसने स्वयं अनुभव किया था। प्रचार की जिस शैली को उसने अपनाया वह एकदम नया था। गिरजाघरों में और गिरजाघरों के आंगनों में, गांवों के मैदानों में, खेतों और क्रीड़ा मैदानों में उसने सुनने के लिए आई बड़ी-बड़ी भीड़ को सुसमाचार और मसीह का प्रचार किया। उसका पाठ्य बाइबल था और प्रचार करना उसकी जीविका थी। उसका समकालीन जार्ज व्हिटफील्ड निश्चय ही उससे अधिक शक्तिशाली प्रचारक था।

Creation Autonomous Academy

अध्याय- 2

उपदेश कला

परमेश्वर के वचन का प्रचार करना उन महान सौभाग्यों में से है, जो मनुष्यों को सौंपा गया है। यह उसके महान दायित्वों में से एक है।

प्रचार की मूर्खता के द्वारा (1 कुरि० 1:21) परमेश्वर ने अपने आपको मनुष्यों के ऊपर प्रकट करना चुना। परमेश्वर के विषय का यह ज्ञान, प्रचार के द्वारा व्यक्त किया जाता है, जो मसीह में विश्वास के द्वारा मनुष्यों को सनातन उद्धार की ओर ले जाने में सक्षम है। यह उनको परमेश्वर की समानता और स्वरुप में परिवर्तित करने में सक्षम भी है। (2 कुरि० 3:18)

एक कलीसिया के विकास और वृद्धि के लिए उपयुक्त प्रचार की सेवा आवश्यक है।

प्रचार की कला को 'उपदेश कला' कहा जाता है, जिसे यूनानी भाषा के होमिलियो और होमेलिया शब्दों से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'के साथ होना, अर्थात बातचीत करना और सम्पर्क स्थापित करना, संचारित करना।'

प्रेरितों 20:11 होमिलियो पर आधारित है। इस पर ध्यान दें कि इसका अनुवाद बाइबल में किस प्रकार किया गया हैः 'फिर उसने ऊपर जाकर रोटी तोड़ी और खाकर उनसे इतनी देर बातें करता रहा (प्रचार करता या सिखाता रहा) कि भोर हो गयी, फिर वह चला गया।'

उपदेश कला में उन सब बातों का अध्ययन करना सम्मिलित है जो उपदेश या प्रचार कला से जुड़े हैं। अच्छे उपदेश अच्छी सहभागिता और संगति से उत्पन्न होते हैं।

प्रचार में दो भिन्न पहलू सम्मिलित हैंः प्रथम परमेश्वरीय, द्वितीय मानवीय। उपदेश कला मानवीय पहलू का अध्ययन है।

क-प्रभावशाली किस प्रकार बनें?:-

प्रचार करना मानवीय व्यक्तित्व के द्वारा परमेश्वरीय सत्य को संचारित करने की कला है। एक प्रचारक मूलतः संचारक है। वह परमेश्वर से सत्य को प्राप्त करता है और प्रभावशाली तरीके से मनुष्यों को देता है।

परमेश्वर प्रकाशन देता हैः मनुष्य प्रस्तुति प्रदान करता है।

यह सब प्रभावशाली तरीके से करने के लिए उसे बहुत सी बातों को अच्छी रीति से करना सीखना चाहिए।

1-परमेश्वर की बाट जोहें।:-

Creation Autonomous Academy

प्रथम सीखना चाहिए कि परमेश्वर की बाट किस प्रकार जोही जाए। प्रचारक को अवश्य सीखना चाहिए कि परमेश्वर की उपस्थिति में शांत किस प्रकार रहा जाए और उसकी अपनी आत्मा में प्रभु जो बोल रहा है उस आवाज को पहचाने (परखे)।

प्रत्येक लाभप्रद संदेश परमेश्वर के मन व हृदय से आरम्भ होता है जो प्रत्येक सत्य का स्रोत है। वह सब ज्ञान का झरना (सोता) है। प्रभावशाली प्रचारक का पहला कार्य है परमेश्वर के विचारों को प्राप्त करना सीखना। प्रायः ही वह परमेश्वर की आवाज (वाणी) को कानों के द्वारा सुनने योग्य सुनेगा।

परमेश्वरीय सत्य उसकी आत्मा में भोर की ओस के समान शांतिपूर्वक आसवन होंगे। संभावित अग्रदर्शी प्रचारक को धीरज के साथ परमेश्वर की उपस्थिति में बाट जोहनी चाहिए। वहां वह उन बहुमूल्य विचारों और सच्चाइयों को प्राप्त करेगा जिन्हें परमेश्वर सदा उनके साथ बांटने को इच्छुक रहता है जो उसकी बाट उद्यमी रुप में जोहते हैं।

परमेश्वर की उपस्थिति में समय व्यतीत करने की आदत बनाना अच्छा है। परमेश्वर की उपस्थिति में जाने और धीरज से उसकी बाट जोहने के लिए प्रत्येक दिन का कुछ भाग अलग करें। आप बहुत जल्द ही सीखेंगे कि परमेश्वर की शांतिमय आवाज जो आपकी आत्मा में बोल रही है उसे कैसे समझा जाए।

हमें 'एक संदेश (प्रचार के लिए उपदेश) को प्राप्त करने ' मात्र के विचार के साथ परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश नहीं करना चाहिए। सर्वप्रथम हमें परमेश्वर की उपस्थिति में नियमित रुप से इसलिए जाना चाहिए कि हम परमेश्वर की पूर्ण इच्छा द्वारा जांचे- परखे जाएं।

इस आवश्यकता के साथ परमेश्वर की उपस्थिति में तेजी से जाना कि 'आपको कल की सभा के लिए संदेश (प्रचार करने के लिए उपदेश की विषय वस्तु) की आवश्यकता है,' निश्चय यह हृदय की वह मनोवृत्ति नहीं है जो परमेश्वर के अद्‌भुत सत्य को प्राप्त कर सके। इससे पहले हम इस सत्य को दूसरों को बताने का प्रयत्न करें हमें चाहिए कि हम इस सत्य को मौका दें कि वह हमें प्रभावित करे।

2-बाइबल अध्ययन करें।:-

आदर्शतः प्रचारक को परमेश्वर के सम्मुख अपनी बाइबल को हाथ में लेकर आना चाहिए। इस तरीके से शांतिपूर्वक और धीरज के साथ परमेश्वर के सम्मुख बैठें। उसके वचन के स्पष्टीकरण और प्रेरणा के लिए प्रार्थना करें।

प्रार्थना पूर्वक प्रभु के निर्देश, ज्ञान और उसकी इच्छा को उसके वचन मे खोजें। अपने सामने बाइबल खोल लें और उसे उसकी उपस्थिति में पढ़ें।

कभी-कभी यह अच्छा होता है कि नियमित अध्ययन के तरीके का अनुकरण करें, उसी स्थान से पुनः आरम्भ करें जहां पिछले दिन छोंड़ा था। यह आपकी सहायता करता है कि अविरोध पूरी बाइबल को पढ़ा जाए न कि यहां या वहां से पढ़ें और पवित्र शास्त्र के एक बड़े भाग की उपेक्षा करें।

किसी समय हो सकता है कि आप पवित्र आत्मा से प्रेरणा पाएं कि आपको कहां से पढ़ना चाहिए। इस तरीके से आप एक लीक पर नहीं बने रहते।

3-अपने पास एक कांपी रखें।:-

एक कांपी जिसमें आप उन विचारों और प्रेरणाओं को लिखेंगे जो शांतिपूर्वक परमेश्वर की बाट जोहते समय आपके मन में आएं, यह महत्वपूर्ण है। यह आश्चर्यजनक है कि कोई भी इस अद्‌भुत सत्य को कितना जल्दी भुला देता है, यदि इनको उसी समय लिखा न जाए जबकि ये आपके मन में नवीन (ताजे) ही हैं।

इसका अभ्यास करें कि जब आप प्रार्थना पूर्वक पवित्र शास्त्र को पढ़ते हैं तो प्रत्येक उस अर्थपूर्ण विचार को लिख लें जो आपके मन में आता है। यदि कोई शीर्षक स्वयं आपको कुछ दर्शाता है तो जितनी निकता से उसके पास जा सकते हैं जाएं और प्रत्येक उस बात को इस विषय से जोड़ें जिसे आप जोड़ सकते हैं। इस तरीके से आप उपदेश की सामग्री के अच्छे स्रोत को विकसित करेंगे।

Creation Autonomous Academy

जब भी समय मिले अपनी इस कांपी को पढ़ें। आपके हृदय में विचार बढ़ने आरम्भ हो जाएंगे। आप इस बात को पाएंगे कि कुछ शीर्षक आपके मन में कई सप्ताह तक बने रहेंगे और जैसे-जैसे आप उन पर मनन करेंगे। वे निरन्तर बढ़ते रहेंगे।

आदत बनाएं कि प्रभु से उसके वचन के विषय में बातचीत करें। जब ऐसी बातें दिखायी दें जिनको आप नहीं समझ पा रहे हैं, पवित्र आत्मा से मांगें कि वह इसका अर्थ आप पर प्रकट करे। प्रकाशन की आत्मा को मांगें। (इफि० 1:17)

तब परमेश्वर के सम्मुख शांति और धीरज से उसकी बाट जोहना सीखें, जब वह कोमलता से आपकी आत्मा में उत्तर भेजता है। जैसे ही वे आपके पास आएं उनको लिख लें। सच्चाई को अपनी कांपी में लिखें। मात्र स्मृति पर भरोसा रखकर उनको छोड़ मत दें। यहां तक कि सबसे अच्छी स्मृति को भी बातों के लिखे जाने के द्वारा बल मिलता है।

4-वचन के द्वारा शुद्ध हों।:-

इस प्रकार की मनोवृत्ति से बचने का प्रयास करें जो परमेश्वर से वचन पाने की लालसा रखती है ताकि आप उसके विषय में रविवार की प्रातः प्रचार कर सकें। सर्वदा ऐसी आत्मिक गोलियों की ताक में मत रहें जिनको आप दूसरों पर चला सकें। अपने हृदय की मूल आवश्यकता को स्वीकारें। परमेश्वर को आपके हृदय के साथ अपने वचन और उसके आत्मा के द्वारा व्यवहार करने दें। ऐसा होने दें कि वचन आपको धोए और शुद्ध करे।

इस बात को बताना कि परमेश्वर ने शुद्ध करने और सुधारने के द्वारा आपसे क्या बातचीत की है, उपदेश देने की अच्छी विषय वस्तु हो सकती है।

यह आपके लिए महत्वपूर्ण है कि आप अपने प्राण को तृप्त करें। फन्दों में से एक फन्दा जिसमें प्रचारक गिर सकते हैं वह यह हैः वे कलीसिया के लिए भोजन पाने के लिए इतना उत्सुक रहते हैं कि वे अपने आत्मिक कल्याण की उपेक्षा करते हैं।

यह सेवकाई में आने वाले खतरों में से एक है। इस विचार को श्रेष्ठगीत 1:6 में इस प्रकार अभिव्यक्त किया गया है,'---उन्होंने मुझे दाख की बारियों की रखवालिन बना दिया' परन्तु मैंने अपनी निज दाख की बारी की रखवाली नहीं की।'

ऐसा हो सकता है कि कभी -कभी एक पासवान अपने झुण्ड के आत्मिक क्रियाकलाप के लिए इतना व्यस्त हो सकता है कि वह अपने आत्मिक स्वास्थ्य की उपेक्षा करे। यह एक प्रमुख कारण है कि जिस कारण से सेवक असफल रहते हैं। एक सेवक को चाहिए कि वह किसी भी रीति से अपने आत्मिक जीवन की उपेक्षा न करे।

ऐसा होने दें कि परमेश्वर का वचन आपके अपने हृदय और आत्मा में गहराई से जड़ें पकड़ ले। इसे अपने व्यक्तिगत जीवन और अनुभव में विशालता से बढ़ने दें। तब, जब आप उपदेश देंगे, तो आप अपने अनुभव से प्रचार करेंगे। आप इसे मात्र विचार या सिद्धान्त के कारण नहीं बोल रहे होंगे, बल्कि वह बोल रहे होंगे जिसे आप पूर्णतः समझते हैं और अनुभव कर चुके हैं।

निम्नलिखित पद हमको यह सिखाता है। 'परिश्रमी किसान को ही सबसे पहले उपज का भाग मिलना चाहिए।' (2 तीमु ० 2:6) जो आप बोते और काटते हैं (आत्मिक अर्थ में) -इससे पहले कि आप इसे दूसरों को खिलाएं आपको उसमें सबसे पहले हिस्सेदार (अनुभव करना) होना चाहिए। आप वह कभी भी औरों को न खिलाएं जो पहले आपने स्वयं नहीं खाया। आप उस पथ पर चलने के लिए दूसरों की अगुवाई न करें जिस पर स्वयं पहले नहीं चले हों।

जैसे ही परमेश्वर का वचन आपमें देहधारी होता है (अर्थात आपमें वास करता है) तो आप परमेश्वर की ओर से संदेश बन जाते हैं। आप केवल वह नहीं होंगे जो संदेश का उच्चारण मात्र करता है, परन्तु वह जिसका जीवन और जीवनचर्या उनको जीवन, आशीष और बल देता है जो आपके बारे में जानते और सुनते हैं।

Creation Autonomous Academy

ख-उपदेश कला के विषय में दो गलत विचारः-

कम से कम ऐसी दो सामान्य गलतियां हैं जिनको लोग उपदेश कला के विषय में करते हैं।

1-तैयारी अनावश्यक है।:-

पहला गलत विचार यह है कि तैयारी अनावश्यक है और यह विश्वास की कमी को दर्शाती है। जो लोग इस धारणा को लेते हैं वे ऐसा महसूस करने की ओर प्रवृत्त होते हैं कि मन को किसी भी रीति से तैयार करने का प्रयास वास्तविक विश्वास का तिरस्कार करना है और ऐसे ही लोगों के सामने खड़ा हो जाता है- इस विश्वास के साथ कि परमेश्वर बोलने के लिए शब्द देगा।

ऐसे लोगों को पवित्र शास्त्र का यह भाग प्रिय होता है भजन संहिता 81:10 ‘तू अपना मुंह खोल और मैं उसे भर दूंगा।’ इस भजन का संदर्भ बताता है कि इस पद का प्रचार के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। पवित्र शास्त्र बाइबल के संदर्भ की उपेक्षा करने की यह मनोवृत्ति इस प्रकार के लोगों में विशिष्ट होती है। यह सहज और गैर जिम्मेदार स्वभाव को प्रकट करता है। इस प्रकार के लोगों में प्रायः अनापशनाप (निर्रथक) बोलने के लिए जाना जाता है। हमें इस व्यक्ति के शब्दों के लिए परमेश्वर पर दोष नहीं लगाना चाहिए।

2-मानवीय योग्यता पर्याप्त है।:-

दूसरी गलती प्रायः दूसरी उग्र पराकाष्ठा की ओर ले जाती है। इस स्थिति में पूर्ण भरोसा मानवीय योग्यता और तैयारी पर रखा जाता है। पवित्र आत्मा पर थोड़ा या बिल्कुल भी निर्भर नहीं रहा जाता, परन्तु अपने आप पर भरोसा जो प्रशिक्षण और स्वाभाविक क्षमता के विकास का परिणाम होता है।

ऐसा प्रशिक्षण निश्चय अति रुचिकर और कायल करने वाली बातों को प्रकट कर सकता है। यद्यपि उपदेश पर यह केवल आत्मा का अभिषेक ही है जो परमेश्वर के जीवन मनुष्यों तक ले जा सकता है।

सत्य यह है कि एक प्रभावशाली सेवा को परमेश्वरीय और मानवीय दोनों पहलुओं की आवश्यकता है। परमेश्वर निश्चय उन विचारों को आशीषित और अभिषेक कर सकता है जिनके लिए परिश्रम से प्रार्थना की गयी है और जिन पर सावधानी पूर्वक ध्यान दिया गया है।

ऐसा होने दो कि आपकी तैयारी गंभीर तैयारी और निष्ठावान प्रार्थना से मिलकर बने। जो आप सबसे अच्छा बन सकते हैं वैसा बनने का निश्चय करें, परन्तु इस बात का निश्चय करें कि आपका भरोसा परमेश्वर पर हो अपने आप पर नहीं। अपने उपदेश पर उसके अनिवार्य अभिषेक और आशीष के लिए उस पर सर्वदा विश्वास करें।

ग-उपदेश कला के चार क्षेत्रः-

चार प्रमुख क्षेत्र हैं जिनके साथ उपदेश कला जुड़ी हुई है।-

1-विचार (धारणा):-

इसका सम्बंध उपदेश के लिए मुख्य शीर्षक प्राप्त करने से है। यह इस बात को जानने की कला है कि परमेश्वर के संदेश को किस प्रकार पाया जाए। इसका सम्बंध इस बात से है कि संदेश के लिए मूल विचार या शीर्षक किस प्रकार दिया जाए।

बार-बार विचार रुपी बीज मन में बोया गया और इससे पहले कि वह उस उपयुक्त आकार में बढ़े कि दूसरों के साथ बांटा जाए हो सकता है कि वह वहां महीनों बना रहे। अनुभव के द्वारा कोई व्यक्ति उस क्षमता को बढ़ाने में सक्षम रहता है कि परमेश्वर के लोगों के साथ बांटने के लिए योग्य सत्य की रेखा को पहचाने।

Creation Autonomous Academy

जैसे आप परमेश्वर के वचन पर मनन करते हैं, एक विशिष्ट मनोवृत्ति (धारणा) की उत्तेजना आती है। आपके लिए कुछ अचानक प्रज्वलित होता है। यह पृष्ठ से उछलता हुआ प्रतीत होता है। आपके अन्दर उत्तेजना की अनुभूति उत्पन्न होती है। जैसे कि आपने सोने का एक बड़ा ढेला (पिण्ड) पा लिया हो। आप इसका मूल्य जानने के लिए शायद इसे तोड़ पाते हैं।

2-रचनाः-

विशिष्ट सत्य पर प्रेरणा पाने के पश्चात अब आपको चाहिए कि आप इसका विश्लेषण करें यह वह सब जानने के लिए जो इस सत्य में निहित है। आपकी कांपी आपके पास है। जैसे ही आप प्रार्थना पूर्वक मनन करते हैं, सावधानी पूर्वक प्रत्येक उस विचार को लिखें जो मन में आता है।

इस स्थिति में, आप साधारणतया उस प्रत्येक विचार की सूची बना सकते हैं जो आपका विषय आपको बताता है। इसे तब तक थामे रहें जब तक आप यह महसूस न करें कि आपने शीर्षक को समाप्त कर दिया है। और आपके विषय में पाए जाने वाले प्रत्येक सम्भावित क्षेत्र को देख लिया है।

इस स्तर पर सफाई और क्रम के विषय में चिन्ता मत करें। जिस गति से आप प्रेरणा पा रहे हैं उसको पंक्तिबद्ध और बराबर रखने के लिए आपको बार-बार जल्दी लिखने की आवश्यकता है। इस बात के लिए निश्चित हो जाएं कि जो आप पा रहे हैं वह सब आप कागज पर लिख रहे हैं। आप सबकी छंटाई बाद में कर सकते हैं।

3-वाक्य विन्यासः-

अपनी विषय वस्तु का पूरे तरीके से विश्लेषण करने के पश्चात इसमें सत्य का प्रत्येक विचार दृष्टिकोण जो आप पा सकते हैं अब आपको उन विचारों को क्रमवार तरीके से इकट्ठा करना आरम्भ करना चाहिए। यह महत्वपूर्ण है ताकि आगे को आप विषय वस्तु पर प्रार्थना पूर्वक ध्यान दे सकें।

विषय वस्तु को किसी क्रमवार में रखने से इस विषय में आपको बहुत सहायता मिलेगी। विषय को दूसरों के सामने प्रस्तुत करने में भी यह आपकी बहुत सहायता करेगी। विचारों के बढ़ते क्रम को दूसरों के साथ बांटना दूसरों की सहायता करता है कि वे समझें और आपके विवेक का अनुकरण करें। यदि आपकी प्रस्तुति उलझी हुई होगी, तो लोगों के लिए आपका संदेश ग्रहण करना काफी कठिन होगा। संदेश बनाने का यह उद्देश्य होता है कि जितना सम्भव हो उसे उतना सरल बनाया जाए। ताकि श्रोता इसे समझ लें।

उपदेश तैयार करने का यह सार है। प्रत्येक प्रचारक के लिए यह अति महत्वपूर्ण है कि वह इसे विकसित करे।

4-संचारण (बातचीत):-

अन्ततः हम संदेश की प्रस्तुति के लिए आते हैंः-

-सत्य का स्पष्ट और प्रभावशाली तरीके से संचारण

-किस तरीके से विषय को प्रस्तुत किया जाए? उस तरीके से जिससे वह आपके श्रोताओं के मनों को मुग्ध कर दे।

-अपने विचारों को ऐसे क्रमवार तरीके से विकसित करें कि आपके श्रोतागण आसानी से उस सत्य को पा सकें जो आप उनको बताना चाहते हैं।

-आप अपने श्रोतागणों को उपयुक्त क्रियाकलाप के लिए प्रेरित किस प्रकार करेंगे? क्योंकि ‘अपने आपको वचन पर चलने वाले प्रमाणित करो, न कि केवल सुनने वाले---।’ (याकूब 1:22)

इन धारणाओं में संदेश तैयार करने का महत्वपूर्ण विचार निहित है।

घ-संदेश (उपदेश) तैयार करने के तीन प्रकारः-

1-लिखित संदेशः-

यह वह तरीका है जिसकी तैयारी में काफी समय की आवश्यकता होती है। इसमें काफी लिखित भाग (विवरण) सम्मिलित है। कभी-कभी पूरा संदेश पहले से लिख लिया जाता है। प्रचारक पूर्णतया जानता है कि वह क्या कहना चाहता है और वह इसे कैसे कहना चाहता है। प्रत्येक विचार को पूरी रीति से लिखा जाता है।

इसमें प्रायः काफी पृष्टों के लिखित नोट्स की आवश्यकता होती है। यह विस्तृत जानकारी की ओर ध्यान देता है, वाक्य की सही रचना और शब्द का सही प्रयोग। संभावित संदेश के प्रत्येक दृष्टिकोण को अति सावधानी से बनाया जाता है।

इस तरीके में सुविधा और असुविधा दोनों ही है। एक सुविधा यह है कि सम्पूर्ण संदेश का विषय विवरण बड़ी सावधानी से तैयार किया गया है। अतः इसमें सम्बन्धित सत्य के प्रत्येक महत्वपूर्ण क्षेत्र का पर्याप्त विस्तार होना चाहिए।

Creation Autonomous Academy

कुछ भी छोड़ा नहीं गया हो। इस रुप में इस बात का निश्चय होना चाहिए कि प्रत्येक विषय की व्यापक और पूर्ण विवेचना की गयी है।

संदेश को इस प्रकार से प्रस्तुत करने की हानि यह है कि प्रायः यह अरुचिकर रुप में प्रस्तुत होता है और श्रोताओं के मन को आकर्षित नहीं कर पाता। इस प्रकार की प्रस्तुति आसानी से उबाऊ बन जाती है।

2-रुपरेखा का तरीकाः-

इस तरीके को सबसे अधिक प्रयोग किया जाता है और जिसे मैं महसूस करता हूं कि इसका अपना एक स्थान है। लिखित नोट को कम से कम रखा जाता है, जिसमें संदेश की पर्याप्त रुपरेखा हो, स्मरण शक्ति को अविलम्ब बढ़ाने के लिए।

संदेश से ली गयी संक्षिप्त रुपरेखा, वे हड्डियां हैं जो उसे रुप और आकार देती हैं जो प्रचारक कहना चाहता है। जैसे वह बोलता है, वह 'हड्डियों' पर मांस और अपने 'संदेश' को देह प्रदान करता है। वह उन विचारों को बड़ा करता है जिन्हें उसकी संक्षिप्त रुपरेखा ने उसमें प्रेरित किया है।

यह तरीका प्रचारक को काफी लचक प्रदान करता है। वह अपने लिखित नोट के साथ इतना नहीं बंधा होता है। वह अपने आपको प्रेरणा के लिए खुला रखता है जो उसे उस समय मिलती है जब वह वास्तव में प्रचार कर रहा होता है। उसकी प्रस्तुति अधिक सहज और रुचिकर होती है, परन्तु उसके संदेश की रुपरेखा उसके मन को दिशा मार्ग से अलग नहीं होने देती। वह उपयुक्त अपने विषय की अच्छी वैचारिक प्रस्तुति देने में सक्षम होता है, परन्तु उसके प्रस्तुतिकरण को सुनना कठिन होता है।

3-तात्कालिक (बिना तैयारी के) उपदेश देनाः-

प्रचार करने का यह तरीका सहज और साधारणतया प्रस्तुत करने के समय बिना लिखित नोट द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। विषय को प्रायः पहले से ही सावधानी पूर्वक विचारों में पिरोया जाता है और मन और हृदय संदेश के महत्वपूर्ण पहलुओं से भरे होते हैं।

यह तरीका प्रायः अधिक प्रेरणास्पद उपदेशों को प्रस्तुत करने के लिए प्रयोग किया जाता है। सुसमाचार प्रचार के लिए संदेश भी इसी तरीके से प्रभावशाली रुप में प्रस्तुत किए जा सकते हैं। उपदेश हृदय से उमड़ता है और प्रायः उसमें दृढ़ भावनात्मक आवेष्ठन निहित होता है।

इस प्रकार का प्रचार उत्तेजक और प्रेरक हो सकता है जब अनुभवी और योग्य प्रचारक द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। यह भावनाओं को झकझोरने के साथ मन के लिए प्रेरणादायक होता है।

इस तरीके में संभावित दो कमजोरियां हैं। प्रथम इसमें प्रायः अर्थपूर्ण विषयवस्तु की कमी पायी जाती है और यह सुनने वालों के मनों और आत्माओं की उन्नति नहीं करता। दूसरा यह है कि हो सकता है कि प्रस्तुति अति भावुक हो जाए और विवेकहीन और अप्रत्यायक हो जाए।

ङ-सात प्रकार के संदेश (उपदेश):-

एक पास्टर को उपदेश के हर प्रारुप से परिचित होना चाहिए। यह उसकी सेवा को अतिरिक्त विशिष्टता देगा और कलीसिया के लिए यह काफी रुचिकर होगा जो उसे सप्ताह और हर सप्ताह सुनेगी।

कुछ समय के पश्चात, यह उसकी सहायता करेगा कि बाइबल के सत्यों को और विस्तार के साथ प्रस्तुत किया जाए। किसी भी प्रचारक की सेवा बहुमुखी समृद्ध होती है।

1-मूलपाठ विषयक उपदेशः-

यह रुप साधारणतया पवित्र शास्त्र के एक सम्बन्धित छोटे भाग पर आधारित होता है। वास्तव में जैसा कि नाम बताता है, साधारणतया यह पवित्र शास्त्र के एक 'मूलपाठ' (उद्धरण-खण्ड) पर केन्द्रित होता है।

इसमें पवित्र शास्त्र से उपयुक्त वक्तव्य चुनना सम्मिलित है। और आप इसे जांचते विश्लेषण करते समय इन सब सत्यों को खोजते हैं जो इसमें पाए जाते हैं। तब उस सत्य को उस बढ़ते हुए और क्रमबद्ध तरीके से प्रस्तुत करते हैं कि सुनने वालों को आत्मसात करने के लिए सरल होता है।

2-प्रासंगिक उपदेशः-

यहां प्रचारक का उद्देश्य होता है कि वह अपनी कलीसिया के समक्ष विशिष्ट विषय प्रस्तुत करे।

उदाहरण के रुप में वह 'धार्मिकता' के विषय को ले सकता है। सर्वप्रथम उसका लक्ष्य होगा उस बात को खोजना जो बाइबल इस मोहित कर देने वाले विषय में कहती है।

तब वह पवित्र शास्त्र के सब उद्धरणों को और विचारों को क्रमवार रुपरेखा में रखेगा। तब वह जितना सम्भव हो सकेगा अपने विषय को पूर्णतया और विश्वासयोग्यता के साथ बढ़ाएगा। उसका उद्देश्य है अपने सुनने वालों को वह वो सब कुछ बताएगा जो इस महत्वपूर्ण विषय पर उनको जानना चाहिए।

हो सकता है, वह इसे शिक्षण देने के एक सत्र में न कर सके, अतः वह उसी विषय पर शिक्षा या उपदेश की श्रृंखला को तैयार करेगा। यह उस विषय का व्यापक विश्लेषण का आश्वासन देता है।

3-प्रतीकात्मक उपदेशः-

यह उस सत्य को सामने लाने और प्रेषण करने की कला है जो बाइबल में विभिन्न 'प्रतीकों' के नीचे छिपा हुआ है।

यह 'प्रतीक' एक व्यक्ति, वस्तु या घटना हो सकता है जो भविष्यद्वाणी के रुप में किसी का या उसका जो आने वाली घटना है का प्रतीक हो सकता है। यह इनके समान या उसका स्वरुप है जो कि व्यक्ति या घटना है।

बाइबल की व्यवहारिकता में यह बाइबल के चरित्र या घटना की ओर संकेत करता है जो भविष्य की किसी बात का पूर्वाभास है।

उदाहरण के रुप में निर्गमन में फसह का मेमना मसीह का प्रतीक है। फसह के मेमने के उस विवरण ने भविष्यद्वाणी के रुप में मसीह की उस भूमिका के बारे में बताया जो वह 'परमेश्वर का मेमना' (यूहन्ना 1:29) होने के नाते छुटकारे के लिए करेगा। भविष्यद्वाणी का प्रत्येक प्रतीक पूरा हुआ जब मसीह संसार के पापों के लिए मरा।

बाइबल में दिए गए प्रतीकों को प्रायः 'स्वर्गीय वस्तुओं के प्रतिरुप और छाया' (इब्रा० 8:5, 10:1) बताया गया है। ऐसे व्यक्ति या घटनाएं उस व्यक्ति के समान हैं जो ऐसी स्थिति में चल रहा हो कि सूर्य उसके पिछली ओर हो। उसका शरीर उसके आगे भविष्य की छाया प्रकट करे और उन बातों का चित्रण करे जो आने वाली हों।

परमेश्वर की वयवस्था आने वाली घटनाओं की छाया थी। यह उसे प्रस्तुत करती और उसकी छाया थी, जो मसीह में आने वाली भली बातें थीं। (इब्रा० 10:1)

पुरानी वाचा के 'पवित्र दिन' भी आने वाली बातों की छाया थे (कुलु० 2:17) वे पवित्र दिन अपने आप में पूर्ण नहीं थे। उनकी भरपूरी के उद्देश्य का एक क्रम था, जो बातें आने वाली थीं उनका चित्रण भविष्यद्वाणी में दर्शाना।

बाइबल में दिए गए प्रतीकों की व्याख्या और विवरण प्रतिपादन का कार्य विशिष्ट कार्य है, उसे उनकी क्षमता की अपेक्षा है जो बाइबल के विषय के ज्ञान में परिपक्व हैं।

नौसिखिए को चाहिए कि वह गूढ़ (गंभीर) प्रतीकों पर प्रचार करने के प्रयास से बचे, क्योंकि अकुशल व्याख्याएं निष्फल-खेदजनक गलती की ओर ले जा सकती हैं।

Creation Autonomous Academy

सम्पूर्ण बाइबल का गहन और पूर्ण ज्ञान उनके लिए आवश्यक है जो प्रतीकों के अर्थ की व्याख्या करने की लालसा करते हैं। ऐसी शिक्षा सम्पूर्ण बाइबल द्वारा प्रमाणित और नीचे से बंधी हुई (स्थिर) होनी चाहिए।

प्रतीकों से सिखाने के लिए निम्नलिखित सिद्धांतों का ध्यान रखना अनिवार्य है।-

1) साधारण प्रतीक प्रयोग करेंः-

साधारण प्रतीकों से आरम्भ करें जिनका आशय स्पष्ट हो।

2) विस्तृत व्याख्या को अपनाएंः-

कभी भी प्रतीक के प्रत्येक छोटे विवरण की व्याख्या करने का प्रयास न करें। सत्य की स्पष्ट रुपरेखा को अपनाएं।

3) सिद्धान्तवादी (हठधर्मी) न बनेंः-

हठधर्मी होने से बचें कि प्रतीक क्या सिखाता है।

4) सिद्धान्त का उदाहरण देंः-

कभी भी अपनी सिद्धान्तिक स्थिति को प्रतीक के विषय में सिखाने का आधार न बनाएं। प्रतीक को चाहिए कि सिद्धान्त को प्रकट करे न कि उसकी पहल करें।

5) सुधार के प्रति अपने आपको उदार रखेंः-

उनके समक्ष अपने आपको उदार रखें जो आपसे अधिक परिपक्व हैं।

4-व्याख्यात्मक उपदेशः-

इस तरीके के द्वारा, हम उस सत्य और अर्थ की व्याख्या करने का प्रयास करते हैं, जो पवित्र शास्त्र के उस विशिष्ट भाग में निहित है। हम चाहते हैं कि उस सत्य को प्रकट किया जाए जो प्रायः पृष्ठ में शब्दों के नीचे छिपा रहता है। परमेश्वर की सम्पूर्ण इच्छा को सिखाने का यह सर्वोत्तम तरीका है। (प्रेरितों० 20:27)

संभवतः आप बाइबल की एक पुस्तक को ले सकते हैं और उसके अर्थ को अध्याय के द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं और इसी प्रकार इसमें बढ़ते हुए पदों के द्वारा, उसकी सार्थकता और सत्य की व्याख्या करते हुए आगे बढ़ सकते हैं। हो सकता है यह बाइबल अध्ययन की श्रृंखलाओं में बढ़ जाए जिसे पूर्ण करने में सप्ताह या महीनों लगें।

इस प्रकार, कुछ वर्षों के पश्चात आपकी कलीसिया बाइबल के प्रत्येक भाग से सुविज्ञ हो जाएगी और उन सब सत्यों को देख पाएगी जिन्हें परमेश्वर उन तक पहुंचाना चाहता है उनकी समृद्धि और आत्मिक भरपूरी के लिए।

Creation Autonomous Academy

5-जीवन चरित्र सम्बन्धी उपदेशः-

एक जीवनी, एक व्यक्ति की जीवन कहानी है। इसलिए इस तरीके में बहुत से उन लोगों के जीवन के विषय का अध्ययन सम्मिलित है जिनको हम बाइबल में पाते हैं। प्रत्येक जीवनी जिसे बाइबल में लिखा गया है, उसका हमारे जीवन के लिए एक महान महत्व है। प्रत्येक जीवनी में हमें सिखाने के लिए कुछ है।

बाइबल के चरित्रों का अध्ययन बहुत दिलचश्प और वशीभूत करने वाला है। एक विशेष व्यक्ति को चुन लें। उस व्यक्ति के विषय में बाइबल में जो भी पद पाया जाता है उसे पढ़ें। उस प्रत्येक विचार को लिख लें जो इस विषय में मन में आता है।

उन विचारों को क्रमवार रुप में इकट्ठा करना आरम्भ करें -उस क्रम में जिसमें वे घटे।-

-उस व्यक्ति के जन्म के विषय में अध्ययन करें।

-उसके लालन पालन की परिस्थितियों पर ध्यान दें।
-उसके जीवन में परमेश्वर के कार्य पर ध्यान केन्द्रित करें।
-परमेश्वर ने जब उसके साथ व्यवहार किया तो उसने कैसी प्रतिक्रिया की।
-उसने उससे क्या सीखा?
-यदि वह जीवन में सफल हुआ, तो किसने उसे सफल बनाया।
-यदि उसके जीवन का अन्त असफलता से हुआ, तो उसने कहां पर गलती की।
-हम उसके जीवन से क्या सीख सकते हैं?

ये रुचिकर और शिक्षाप्रद बातें हैं जो हम उन स्त्री और पुरुषों के फलवन्त जीवन से सीख सकते हैं जिनसे हम बाइबल में मिलते हैं।

6-विश्लेषणात्मक उपदेशः-

इस प्रकार का उपदेश विषय वस्तु के विस्तृत विश्लेषण से जुड़ा होता है, ताकि उससे अधिक से अधिक सत्य को पाया जा सके। इस सत्य से आप उन आधारभूत सिद्धान्तों को सिखा सकें जो इसमें निहित हैं।

7-सादृश्यवाची उपदेशः-

बाइबल का अधिकांश भाग सादृश्यवाची रुप में लिखा गया है। यह सत्य को दूसरी समान स्थिति से सिखाता है। लेखक प्रायः स्वाभाविक विषय वस्तु को प्रयोग करता है, आत्मिक सत्य को सिखाने के लिए। इसमें समानान्तर क्रिया-कलाप, समान स्थिति से सोचने की प्रक्रिया निहित है। सादृश्यवाची उपदेश उस सत्य को संचारित करने का प्रयास करता है जो अनुरुपता में पाया जाता है।

Creation Autonomous Academy

अध्याय 3
मूलपाठ विषयक उपदेश

पवित्र शास्त्र के छोटे भाग, साधारणतया एक पद या पाठ का विश्लेषण या व्याख्या।

क-मूलपाठ को चुनने के लाभः-

निम्नलिखित लाभ हैं-

1-रुचि को लुभाता है।ः-

किसी रुचिकर मूल पाठ की घोषणा तत्काल हमारे श्रोताओं की रुचि को जीत लेता है, अतः हमको सचेत कलीसिया देता है।

2-विषयान्तर से बचाता है।ः-

एक विशेष मूल पाठ प्रचारक को अपनी विषय वस्तु से विषयान्तर होने से बचाता है और श्रोताओं की अभिरुचि बनाए रखता है।

3-उपदेश को बाइबल के अनुरुप रखता है।ः-

अपनी बात को पवित्र शास्त्र के विशेष भाग पर केंद्रित रखना उपदेशक को बाइबल के अनुरुप रखता है। स्पष्ट रुप से बाइबल से मूल पाठ प्रस्तुत किए जाने के पश्चात, हमारा संदेश स्पष्टतः बाइबल पर आधारित होता है। तत्पश्चात अपने शीर्षक को बाइबल के अन्य संबन्धित भागों से प्रमाणित करें।

4-निर्भीकता को बढ़ाता है।ः-

सीधे स्पष्ट रुप से बाइबल से प्रचार करना हमारी निर्भीकता और घोषणा करने के अधिकार को बढ़ाता है। बाइबल से लिए गए कथनों को बड़ी भावना और विश्वास के साथ प्रस्तुत किया जा सकता है। यह इसलिए है क्योंकि आप अपने विचारों को प्रस्तुत नहीं कर रहे हैं, आप लोगों को वह बता रहे हैं जो इस विषय में परमेश्वर कहता है।

5-उपदेश को पुनः याद करने में सहायता करता है।ः-

एक अच्छा मूलपाठ संदेश को हमारे सुनने वालों के मनों में बैठाने में सहायता करता है। श्रोता इसे लम्बे समय तक याद रखते हैं। जब वे हमारे संदेश को पुनः स्मरण करते हैं, तो यह बार-बार पवित्र शास्त्र का वह भाग होगा जिसको आधार मानकर आपने बातचीत की जिसे बार-बार सुस्पष्ट याद किया जाएगा।

ख-मूल पाठ को चुननाः-

मूलपाठ को चुनने हेतु निम्नलिखित बातें करना आवश्यक है।-

1-बाइबल को नियमित रुप से पढ़ें।ः-

अपनी बाइबल नियमित रुप से पढ़ना चहिए। प्रतिदिन बाइबल पढ़ने का समय निकालें। बाइबल पढ़ने की अच्छी आदत डाल लें। परिश्रम पूर्वक बाइबल पढ़ना आवश्यक है।

Creation Autonomous Academy

2-बाइबल अध्ययन करें।:-

जो बातें पढ़ते हैं उन पर मनन करें। उन पर सभी दृष्टिकोणों से देखें। जिस बाइबल पाठ का अध्ययन करते हैं उस पर विश्लेषण करें। उस पाठ पर चिन्तन-मनन करें। अधिक गहरे और आगे सोच विचार करने के लिए उनको बार-बार मन में लाते रहें।

3-अपने साथ कापी और कलम रखें।:-

बाइबल अध्ययन करते समय आपके पास नोट करने के लिए कागज और कलम अवश्य हो। प्रत्येक प्रेरणा जो आप पाते हैं उन्हें लिख लें। इससे काफी समय पश्चात पुनरावलोकन में सहायता मिलेगी और उनसे नयी प्रेरणा पा सकेंगे। जितना अधिक मनन करेंगे उतना अधिक प्रकाशन पाएंगे।

4-प्रार्थना की मनोवृत्ति अपनाएं।:-

परमेश्वर का मार्गदर्शन पाने के लिए प्रार्थना करें। प्रार्थना में परमेश्वर की वाणी को प्राप्त करें।

5-पवित्र आत्मा से स्पष्टीकरण मांगे।:-

पवित्र आत्मा पर निर्भर हों वह अपना मार्गदर्शन प्रदान करेगा। आप शांत, दीन और संवेदी बनें। पवित्र आत्मा आप को नए अद्भुत सत्यों से अवगत कराएगा जो आपके जीवन व सेवा को फलवन्त करेंगे।

ग -मूलपाठ ऐसा होना चाहिए।:-

1-बाइबल द्वारा प्रमाणित:-

यह उस शिक्षा के अनुरुप हो जो बाइबल सिखाती है। अपने मूल पाठ का अध्ययन सर्वदा संदर्भ सहित करें। अपने मूलपाठ का भावार्थ सर्वदा उस दृष्टिकोण से करें, उस विषय पर जो शिक्षा सम्पूर्ण बाइबल द्वारा दी जाती है।

2-पूर्ण खण्ड:-

बाइबल का पूरा एक खण्ड लें, मात्र एक पद अथवा एक वाक्यांश न लें। अन्यथा यह पथभ्रष्टता की ओर ले जाएगा।

3-उचित रुप में संक्षिप्त:-

Creation Autonomous Academy

मूलपाठ विषयक उपदेश उचित रुप से पवित्र शास्त्र के संक्षिप्त कथन पर आधारित होना चाहिए।

4-व्यापक:-

यद्यपि संक्षिप्त होते हुए भी मूलपाठ व्यापक होना चाहिए। संदेश का पर्याप्त सारांश हो।

घ-मूलपाठ के लिए आपकी पहुंच:-

1-इसके शब्दों को पूर्णतया पचा लें।:-

मूलपाठ को पूर्णतया बार-बार पढ़ें। अपने हृदय में इसका मनन करें। इस पर चिन्तन-मनन करें। इसे याद करें और स्वयं बोलें। इससे परिचित हों।

2-इसकी भाषा का निश्चय करें।:-

इसे शाब्दिक रुप में लिया जाना चाहिए या इसका अभिप्राय प्रतीकात्मक है? क्या लेखक का अर्थ उससे है जो वह शाब्दिक अर्थों में कह रहा है या वह भाषा का अलंकारिक रुप है।

3-इसके संदेश का विश्लेषण करें।:-

यह आपकी सहायता करेगा कि पद को कैसे खोला जाए। इसे तीन या चार मुख्य भागों में विभक्त करें। इस बात को खोजें कि इस पद में कितना पाया जाता है और यह क्या सिखाना चाहता है।

4-शब्दों को जांचें:-

उस बात को खोजने का प्रयास करें जो यह पद मूलतः कहना चाहते थे। यदि सम्भव हो तो यूनानी या इब्रानी मूल भाषा में इस शब्द को देखें। क्या इसके साथ कोई विशेष सार्थकता जुड़ी हुई है? क्या लेखक के पास उस शब्द को प्रयोग करने का कोई विशेष कारण था? यह अध्ययन किसी भी विशेष व्यवहारिकता को समझने में सहायता करेगा जो लेखक बताना चाहता था।

5-इसके विकास को खोजें।:-

लेखक सत्य की कौन सी बात को बढ़ाना चाह रहा था? अन्ततः वह क्या कहने का प्रयास कर रहा था? उसने यह कैसे प्राप्त किया? उसकी अगुवाई मानकर उसका अनुकरण और उसी तरीके से इसको बढ़ाने का प्रयास करें।

ङ -इसके संदर्भ पर ध्यान दें।:-

1-बाइबल का संदर्भ:-

उससे पहले और आगे के पद क्या कहते हैं? उस पद पर उस पूर्ण अध्याय के सम्बन्ध में ध्यान दें जहां से यह आता है। फिर इसे पूर्ण पुस्तक की शिक्षा के साथ देखें, जहां पर यह पद पाया जाता है।

इस बात का निश्चय करें, इसके विषय में आपकी समझ यथार्थ है उस सारे सत्य के प्रति जो उस पुस्तक में दिया गया है। ऐसा करने के लिए आपको उक्त पुस्तक का मूल शीर्षक और भूमिका अवश्य पढ़ना चाहिए।

Creation Autonomous Academy

2-सांस्कृतिक संदर्भ:-

क्या उस समय की संस्कृति ने उसको प्रभावित किया जो लिखा गया? क्या जिन लोगों को ये शब्द मूल रुप में लिखे गए क्या उनको उससे जो विचार मिला वह उससे भिन्न था जो हमारी परिस्थितियों में होगा? यदि ऐसा है तो अब समान्तर महत्व क्या होगा? खण्ड के समय जब यह दिया गया उस समय की संस्कृति क्या थी?

3-ऐतिहासिक संदर्भ:-

यह कथन कब लिखा गया? उस समय जो घटित हो रहा था क्या उसने उसको प्रभावित किया जो लिखा गया? क्या लिखे जाने के समय की घटनाओं में क्या उसका विशेष स्थान पाया जाता है जो कहा गया?

4-भौगोलिक संदर्भ:-

लेखक ने जब इन शब्दों को लिखा तो वह कहां था? उसने जिन लोगों को लिखा वे लोग कहां थे? क्या उनकी भौगोलिक परिस्थिति का उसमें कोई स्थान है जो कहा गया?

5-बाइबल पर आधारित संदर्भः-

'सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है।' (2 तीमु० 3:16) प्रत्येक भाग का अनुवाद पूरी सावधानी के साथ किया जाना चाहिए ताकि वह बाकी सबके साथ सहमत हो।

पवित्र शास्त्र के किसी भी भाग को संदर्भ से अलग नहीं किया जाना चाहिए, इसका अनुवाद उस पूर्ण प्रकाशन के साथ किया जाना चाहिए जो सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र सिखाता है। पवित्र शास्त्र, पवित्र शास्त्र का अनुवाद करे और एक मूल पाठ की हमारी व्याख्या को सर्वदा उसके साथ सहमत होना चाहिए जो सम्पूर्ण बाइबल सिखाती है।

च -अपनी सामग्री को क्रमबद्ध करना।ः-

उपदेश की सामग्री (विषय-वस्तु) को क्रमबद्ध करना विशेष रुप से लाभप्रद है, उपदेशक और श्रोताओं दोनों के लिए। उपदेशक की यह सहायता करता है कि वह विषय को स्पष्टता से समझा सके। उसके विचार अस्त-व्यस्त और उलझे हुए न हों। विषय की सबसे उपयुक्त विवेचना कर सके।

जहां तक श्रोताओं का प्रश्न है यह स्पष्टतया बहुत अच्छे तरीके से उनकी सहायता करता है कि वे उपदेश को समझें और ग्रहण कर सकें।

1-रुपरेखाः-

एक अच्छी रुपरेखा सबसे अच्छा और सबसे आसान तरीका है आपकी सामग्री (विषय-वस्तु) को क्रमबद्ध करने का।

I. यह सहायता करता है कि सावधानीपूर्वक अपने विषय और सामग्री (विषय-वस्तु) का विश्लेषण करें जिसे आपने इकट्ठा किया है। ऐसा करके एकत्र सामग्री में से सर्वोत्तम का चयन करेंगे।

II. यह किसी भी उन क्षेत्रों को प्रकट करता है, जो आपके विषय की विवेचना और प्रस्तुति के विकास में पाए जाते हैं।

III. यह आपको इस योग्य बनाता है कि आप अपनी सामग्री में से सबसे अधिक पा सकें, क्योंकि आप इसे सबसे अधिक उपयुक्त और महत्वपूर्ण विषय के साथ बांध देते हैं।

IV. यह आपके लिए वह स्मरण कराना आसान करता है जो कुछ आप कहना चाहते हैं। आपके लिखित नोट पर कम से कम निर्भर रहते हुए आपके संदेश को क्रमबद्ध तरीके से प्रकट कराता है।

V. यह इसे श्रोताओं के लिए आसान बनाता है। ताकि आपकी प्रस्तुति के विकास को वे अपना सकें, समझ सकें। क्योंकि इसका संचारण सबसे अधिक क्रमबद्ध और तर्कसंगत तरीके से किया गया है।

2-लिखित नोटः-

I. **संक्षिप्त रखेंः-** अपने आपको प्रशिक्षित करें कि 'खाके के रुप' में लिखित नोट का प्रयोग करें जिसे आप एक बार देखने से ही समझ सकते हों।

II. **क्रमबद्ध बनाएंः-** आपको इस योग्य होना है कि हर समय आप उनको आसानी से समझ सकें।

Creation Autonomous Academy

III. **व्यापक होने दें:-** प्रत्येक उस दृष्टिकोण को उसमें समेटने का प्रयास करें जिसके विषय में आप बोलना चाहते हैं।

IV. **विचारों पर ध्यान दें:-** अपने विचारों को छोटे वाक्यों में सघनित करें। अपने विचारों को चमकाना और उनको सारगर्भित संक्षिप्त वाक्यों में अभिव्यक्त करना सीखें। विचार को संक्षिप्त करने और उसे एक वाक्य में अभिव्यक्त करने का अभ्यास करें।

V. **सारगर्भित संक्षिप्त लिखित नोट बनाएं:-** इस बात को याद रखें कि लिखित नोट आपकी स्मरण शक्ति को प्रेरित करे। यहां तक कि एक सार्थक शब्द उस घटना के बारे में आपको याद करा सकता है जिसे आप याद करना चाहते और अपने श्रोताओं के साथ बांटना चाहते हैं।

VI. **पढ़ने योग्य बनाएं:-** अपने लिखित नोट को जितना हो सके स्पष्ट और साफ लिखें। कभी भी अपने लिखित नोट को घसीट मारकर (अस्पष्ट) न लिखें। ऐसा न हो कि जब आप पुलपिट से उपदेश दे रहे हों तो उनका गूढ़ अर्थ निकालने के लिए आपको सोच विचार करना पड़े।

ध -मूलपाठ विषयक उपदेश की संरचना:-

उपदेश की रुपरेखा में साधारणतया तीन मुख्य तत्व होते हैं।-

-परिचय

-सत्य का मुख्य कथन

-निष्कर्ष और व्यवहारिक प्रासंगिकता

1-परिचय:-

संभवत् परिचय आपके उपदेश का सबसे महत्वपूर्ण भाग हो, क्योंकि यदि आप अपने श्रोताओं का ध्यानाकर्षण इस प्रारम्भिक स्थिति में नहीं कर सके, तो हो सकता है कि वे बाकी के उपदेश पर बहुत थोड़ा ध्यान दें।

परिचय प्रायः आपके विषय के संक्षिप्त सारगर्भित रुप में से अपना आकार पाता है। आप श्रोताओं को संक्षेप में बताते हैं कि आप क्या बोलना चाहते हैं और किस क्षेत्र को आप इसके लिए लेना चाहते हैं।

आप यह भी बता सकते हैं कि आप इस विषय की विवेचना किस प्रकार करने की योजना बना रहे हैं। इस तरीके से आप उनकी भूख को जगाने का परिश्रम कर रहे हैं और उनको और अधिक सुनने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

Creation Autonomous Academy

I. परिचय को क्या संपादित करना चाहिए:-

1) **रुचि को वश में करे:-** इसे तत्काल आपके श्रोताओं की रुचि और कल्पना को वश में करना चाहिए।
2) **सम्बन्ध स्थापित करे:-** यह आपके और आपके श्रोताओं के मध्य सम्पर्क -सम्बन्ध स्थापित करे।
3) **स्वीकृति प्रदान करे:-** इसे चाहिए कि यह उनकी ओर आपको स्वीकृति प्रदान करे। आपको उनकी रुचि, विश्वास और सम्मान (श्रृद्धा) जीतने की आवश्यकता है।
4) **जानकारी दे:-** इसे श्रोताओं को जानकारी देना चाहिए कि आप का विषय क्या है और आप उनको कैसे व्यवहार में लाएंगे। उसकी कैसे विवेचना करेंगे।

5) **कायल करेः-** यह उनको आपके शीर्षक के महत्व के विषय में कायल करे और आपकी बाकी बची हुई बातों के लिए उनके ध्यान को केन्द्रित करे। कभी भी अपने परिचय को क्षमा याचना के साथ आरम्भ न करें। यह आपके विश्वास एवं क्षमता को निर्बल करेगा और श्रोताओं में आपके प्रति अविश्वास उत्पन्न करेगा।

II. एक अच्छे परिचय के लक्षणः-

1) **जितना दे सके उतनी प्रतिज्ञा देः-** जो आप दे सकते हैं उससे अधिक की प्रतिज्ञा न करे। जो आप दे सकते हैं उसी की प्रतिज्ञा करे।
2) **अति संवेदनशील न होंः-** ऐसा कदम मत उठाएं जिसे बनाए रखना आपके लिए असम्भव हो। बल्कि आपका परिचय साधारण हो और तब आपके श्रोतागण यह पाकर खुशी से चकित होंगे कि आपका उपदेश उससे भी अधिक रुचिकर था जैसा कि वे पूर्वानुमान लगा रहे थे।
3) **बहुत लम्बा न होः-** इस बात को याद रखें कि यह केवल परिचय है, उपदेश नहीं।
4) **शीर्षक के साथ इसका स्पष्ट सम्बन्ध होः-** परिचय ऐसा हो कि शीर्षक की ओर ले जाए अतः इसे सर्वदा आपके विषय के साथ सम्बन्धित होना चाहिए। इसे उस विषय का सारगर्भित संक्षिप्त रुप होना चाहिए जो आप बोलने जा रहे हैं। यह एक छोटी कहानी भी हो सकती है जो उसके सत्य को प्रकट करे जो आप बताना चाह रहे हों।
5) **सावधानीपूर्वक तैयार किया जाएः-** क्योंकि परिचय श्रोताओं का ध्यानाकर्षण करने के लिए अनिवार्य रुप से महत्वपूर्ण है। तो निश्चय इसको सावधानीपूर्वक विचार और तैयारी चाहिए।

   अपने आपको श्रोताओं के स्थान पर रखने का प्रयास करें। अपने आपसे पूछेंः क्या यह मेरे ध्यान को आकर्षित कर सकता है? मैं जो कहने की योजना बना रहा हूं, कौन सा विशेष विचार मेरी रुचि को वश में करेगा? अपनी कल्पना को इस प्रकार से प्रयोग करने के द्वारा, आप इस बात का निश्चय कर सकते हैं कि आपके परिचय का सबसे अच्छा रुप क्या होना चाहिए।
6) **शीर्षक में पारगमन प्रदान करेंः-** जब उचित रुप से प्रस्तुत किया जाए, तो यह श्रोताओं को स्पष्ट हो जाए कि कहां परिचय समाप्त होता है और उपदेश आरम्भ होता है।

   यह सभी उपदेशों के लिए व्यवहारिक है इसे भिन्न भिन्न कई भागों में होना चाहिए। सब भाग मुख्य शीर्षक या मूलपाठ से जुड़े होने चाहिए।

Creation Autonomous Academy

2-उपदेश का मुख्य भागः सत्य कथनः-

सत्य का मुख्य कथन उपदेश का मुख्य भाग है।

अपनी विषय वस्तु को तीन मुख्य भागों में बांटें। यह आवश्यक नहीं है कि ये तीनों भाग समान हों। इसमें एक भाग से दूसरे भाग में स्वाभाविक, तर्कसंगत और बराबर तालमेल होना चाहिए।

जब आप इनको प्रस्तुत करते हैं तो उस समय इन भागों को स्पष्ट होना आवश्यक नहीं है। कभी-कभी ऐसा कहना सहायक होता है, ‘अब मेरा तीसरा भाग है---। हो सकता है कि भागों का रुप इस प्रकार हो-

I. सत्य को बताएंः-

1) सत्य की घोषणा करें।
2) सत्य की व्याख्या करें।
3) सत्य को स्पष्ट करें।

II. सत्य को विस्तार से बताएंः-

1) सत्य को विकसित करें।
2) सत्य को प्रमाणित करें।
3) सत्य को सिद्ध करें।

III. पराकाष्ठाः-

1) अपना निष्कर्ष प्रस्तुत करें।
2) इससे क्या सीखा जा सकता है।
3) हम इसे व्यवहारिक रुप से कैसे प्रयोग करें।

निष्कर्षः-

मन को प्रभावित करे। अपनी बात को संक्षिप्त में कहें। संक्षिप्त में दोहराएं। इच्छा को प्रभावित करें। विश्वास उत्पन्न करने की लालसा रखें। भावों को प्रभावित करें। प्रेरित करने का प्रयास करें।

ज-संदेश की तैयारीः-

1 -पहले एक अपरिष्कृत योजना तैयार करेंः-

विषय वस्तु को ठीक से व्यवस्थित करने के लिए रुपरेखा सबसे प्रभावशाली तरीका है। जब आप अच्छी रुपरेखा बनाने में दक्ष हो जाते हैं तो वार्तालाप को व्यवस्थित करना सबसे आसान और सुविधाजनक हो जाता है।

जैसे ही विषय वस्तु को जांचना परखना आरम्भ करते हैं, प्रत्येक विचार को एक बड़े कागज पर लिखें। इस स्तर पर सब बातों को क्रमवार रखने के लिए चिन्तित न हों। जब विषय के बारे में सोचते हैं तो जो भी योग्य विचार मन में आए उसे लिख लें।

Creation Autonomous Academy

2 -अपने मुख्य विचारों को चुनेंः-

सधारणतया तीन मुख्य विचारों को खोजना आसान होता है।

-उस बड़े कागज पर आपने कौन सी तीन महत्वपूर्ण उक्तियों को लिखा है? उनको स्वाभाविक क्रम में लिखें।

-किस उक्ति को पहले आना चाहिए।

-सबसे महत्वपूर्ण उक्ति कौन सी है जिस पर नींव बनायी जाए? इसे पहला शीर्षक बनाएं। इसे बड़े अक्षरों में लिखकर रेखांकित करें।

अब अपने आप से पूछेंः 'इस कथन के बाद स्वाभाविक रुप से कौन सा कथन आना चाहिए?' इस मुख्य शीर्षक को दूसरे स्थान पर रखें। अब आपके पास एक और मुख्य विचार होना चाहिए जो इस विषय वस्तु का निष्कर्ष हो। अब यह तीसरा मुख्य शीर्षक होगा।

शीर्षकों को कागज पर इस प्रकार लिखें।-

अ-पहला शीषक-

1 -

2 -

3 -

ब-दूसरा शीर्षक-

1 -

2 -

3 -

स-तीसरा शीर्षक-

1 -

2 -

3 -

अब अपनी बाकी की विषय वस्तु के साथ कार्य करना आरम्भ करें। उन विचारों को उन शीर्षकों के नीचे क्रमवार लिखें जिनको आपने चुना है। इनमें से प्रत्येक को उपयुक्त मुख्य शीर्षक अ, ब, स के नीचे लिखें। तब प्रत्येक विचार एक ‘छोटा शीर्षक’ बन जाता है, जिनको 1, 2, 3 इत्यादि के रुप में लिखा गया है।

अब आपके सब विचार और सामग्री क्रमबद्ध रुप में आ रहे हैं। यह इस बात को आसान करता है कि आप इस विषय का और विस्तृत अध्ययन कर सकें।

मूलपाठ उपदेश का उदाहरण

‘क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, कि जो कोई उस विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।’ (यूहन्ना 3:16)

परिचयः-

संसार में ऐसे बहुत से लोगों को जाना जाता है जिनको बहुत प्रेम करने वाला कहा गया। परन्तु मैं उसके बारे में बताना चाहता हूं जो निःसंकोच, सबको सबसे अधिक प्रेम करने वाला है। वह स्वयं परमेश्वर है।

वह सबसे अधिक लोगों को प्रेम करता है, सर्वोच्च गुण वाले प्रेम से प्रेम करता है, जिसने उसको प्रेरित किया कि सम्भवतः सबसे महान बलिदान करे।

अ-सम्पूर्ण संसार के लिए परमेश्वर का महान प्रेमः-

1 -उसने संसार और सब मनुष्यों की सृष्टि की।

2 -वह संसार के सब लोगों को एक समान प्रेम करता है।

3 -वह चाहता है कि प्रत्येक सनातन काल तक जीवित रहे।

ब-प्रेम के कारण उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया।ः-

1 -पुत्र, परमेश्वर पिता के लिए कितना बहुमूल्य है। कोई भी सांसारिक पिता अपने पुत्र को इतना प्रेम नहीं करता।

Creation Autonomous Academy

2 -परमेश्वर का त्याग कितना महान था।

3 -परमेश्वर ने यीशु को किसी के लिए भी दे दिया (संसार में सबके लिए)।

4 -उसने उसे हमारे पाप और दोष का दण्ड चुकाने के लिए मरने हेतु दे दिया।

स-जो कोई मसीह को ग्रहण करे वह नाश न होगा।:-

1 -यह अद्भुत भेंट सबके लिए उपलब्ध है।

2 -परमेश्वर सबसे घृणित व्यक्तियों को भी प्रेम करता है।

3 -उद्धार यीशु में विश्वास करने के द्वारा मुक्त वरदान है।

निष्कर्षः-

परमेश्वर अब मसीह में अनन्त जीवन का वरदान भेंट स्वरुप देता है। इतने अद्भुत वरदान को अस्वीकार करना या तुच्छ जानना कितनी बड़ी मूर्खता होगी। इसलिए मसीह को अविलम्ब स्वीकार करें।

Creation Autonomous Academy

अध्याय 4

जीवन चरित्र पर आधारित उपदेश

1-जीवन चरित्र सम्बन्धी उपदेश के लाभः-

इस प्रकार के उपदेश बाइबल की जीवनियों से शिक्षा के रुप में सम्बन्ध रखते हैं। जितना सम्भव हो सके उन चरित्रों को जीवन के विस्तार से अध्ययन सीखने के लिए करें। बाइबल का विशेष रुचिकर विषय यह है कि स्त्री और पुरुष जिनका वर्णन प्रस्तुत किया गया वे जैसे थे वैसे ही किया गया और उनके गुण व सामर्थ्य को प्रगट किया।

बाइबल के बहुत से वीर हुए हैं जिनमें अधिक मनुष्य स्वभाव पाया गया, हम जानते हैं कि उनमें भी वही मांस और रक्त है जो हममें है। साधारण लोगों की तरह उन्होंने प्रलोभनों का सामना किया उनका प्रतिउत्तर दूसरे मसीहियों की तुलना में भिन्न था।

बाइबल के पूरे इतिहास में केवल एक ही सिद्ध मनुष्य है-वह मनुष्य यीशु मसीह है।

सच्चाई को प्रकट करने के लिए इन पुरुष स्त्रियों के चरित्र से जो सीखा वह बहुमूल्य है। यह प्रचार करने के लिए बहुत प्रभावशाली हो सकता है।

1) जीवन की वास्तविकता के साथ व्यवहारः-

यह मनुष्य जीवन की वास्तविकता से सम्बन्ध रखता है, अपनी सामर्थ्य और निर्बलताओं के साथ जो हमसे पहले चले गए हैं, उनकी विजय लड़ाई, असफलता से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं।

2) वे उदाहरण जिनसे हम सीख सकते हैंः-

वे हमारे काम के लिए उदाहरण हैं, जिससे हम सीख सकें न कि अपने ही स्वयं के पीड़ामय अनुभवों से सीखें।

2-कैसे आरम्भ करेंः-

1-बाइबल से चरित्र चुनेंः-

इस प्रकार का प्रचार आप बाइबल के कुछ चरित्रों का अध्ययन करके कर सकते हैं। जैसे अब्राहम, मूसा, यहोशू, दाऊद, पौलुस और पतरस आदि।

Creation Autonomous Academy

ये वे व्यक्ति हैं जो इतिहास में प्रचलित हैं कि परमेश्वर ने मनुष्यों के साथ सम्बन्ध रखा, उनके जीवन से बहुत कुछ सीखना है। बहुत सी महान स्त्रियां भी बाइबल में हुई हैं, जिनके जीवन में एक विशेष समाचार प्रकट करने को है।

2-जीवन का अध्ययन करेंः-

उनके जीवन के विषय में पढ़ें, जो उसके जन्म के बारे में बताता है, उसके नाम का अर्थ ढूंढ़ें, क्योंकि बाइबल में नामों के अर्थ का बड़ा महत्व है। जहां भी पढ़ें उस परिस्थिति का अध्ययन कीजिए, विशेष ध्यान दीजिए परमेश्वर के उद्देश्यों का जो उनके जीवन में था।

1 -परमेश्वर उसके द्वारा क्या करना चाहता था?

2 -अपने उद्देश्य को उसने कैसे प्रकट किया?

3 -व्यक्ति की प्रतिक्रिया क्या थी?
4 -परमेश्वर के उसके जीवन में इस व्यवहार से क्या सीखते हैं?
5 -क्या इससे कोई खतरा है?
6-उसकी सफलता का रहस्य क्या था?
7 -उसके जीवन का समापन कैसा था?
जीवन चरित्र से बहुत कुछ हम सीख सकते हैं।

जीवन चरित्र सम्बन्धी उपदेश का उदाहरण

(दाऊद का जीवन चरित्र)

दाऊद परमेश्वर के मन के अनुसार

(प्रेरितों० 13:22)

परिचयः-

दाऊद नाम का अर्थ है 'परमेश्वर का प्रिय,' वह परमेश्वर के मन के अनुसार कहलाया, परमेश्वर ने ऐसा क्यों बुलाया? परमेश्वर के हृदय को किस चीज ने प्रभावित किया? इस व्यक्ति के जीवन से बहुत कुछ सीख सकते हैं।

1 -परमेश्वर के मन के अनुसारः-

1 -परमेश्वर के हृदय में दाऊद के लिए विशेष स्थान था।
2 -यह अद्भुत है कि परमेश्वर मनुष्यों से प्रसन्न होता है

2 -वह सिद्ध मनुष्य नहीं थाः-

1 -उसकी निर्बलता सब के सामने प्रकट हो गयी फिर भी परमेश्वर की भावना उसके प्रति बदली नहीं।
2 -हम भी सिद्धता से बहुत दूर हैं, फिर भी परमेश्वर हमसे प्रसन्न हो सकता है।

3 -वह पूरा मनुष्य थाः-

1 -सामर्थ्य और निर्बलता का अजीब मिश्रण।
2 -परमेश्वर को प्रसन्न करने की इच्छा, पर बहुत दुखित किया।
3 -परमेश्वर की इच्छा अनुसार जीवन चलाने में अपनी मनमानी की।
4 -जीवन की ऊंचाइयों को पहुंचना---दुखित गहराइयों में गिरना।
5 -दाऊद अनोखा व्यक्ति नहीं था, वह हमारी तरह मनुष्य था।

4 -विशेष कार्य के लिए चुना गया।ः-

परमेश्वर ने उसके बड़े प्रभावशाली भाइयों के बीच में से चुन लिया।

5-उसकी परीक्षा की जाती थीः-

1 -हर परमेश्वर के जन को परीक्षा और उसमें से निकास आवश्यक है।
2 -प्रभु यीशु मसीह की जंगल में परीक्षा की गयी। (मत्ती 4:1-11)
3 -जब आपकी परीक्षा हो, अचम्भित मत होइए। (1 पत० 4:12)

Creation Autonomous Academy

4 -अब परमेश्वर जो सारे अनुग्रह का दाता है जिसने तुम्हें मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिए बुलाया है, तुम्हारी थोड़ी देर तक दुःख उठाने के बाद आप ही तुम्हें सिद्ध, स्थिर और बलवन्त करेगा। (1 पत० 5:10)

6-दाऊद की परीक्षा बेतसेबा द्वारा (2 शमूएल 11):-

1 -'वह आत्मिक रुप से असुरक्षित था'----अब वह 50 वर्ष का था---20 वर्ष से राजा था और कितना सहज और आसान था कि आत्मिक रुप से ढीला हो जाए।

2 -अधिक आत्म विश्वास करने लगा। कभी भी शरीर के हथियारों पर भरोसा न रखें।

3 -सुस्ती के क्षणों ने उसे गिरायाः युद्ध के सामने के स्थान पर शैतान सुस्ती के क्षणों का लाभ उठाता है।

4 -वस्तुओं की बहुतायत ने भोग-विलास की ओर खींचा। पौलुस ने भी शरीर को अनुशासन में रखने की बात कही है।

5 -परीक्षा में फंस गया जबकि वह मस्तिष्क ही में थी।

सारी परीक्षाएं विचारों से आरम्भ होती हैं। यह सबसे आसान स्थान परास्त करने के लिए है। कल्पनाओं और विचारों को निकाल दीजिए (2 कुरि० 10:5) ऐसा न करना विपत्ति को लाना है।

7-उसका पश्चाताप (भजन 51:1-10):-

यह दाऊद की पश्चाताप में विश्वासयोग्यता थी जो उसे परमेश्वर के पास खींच लायी।

1 -उसने अपने अधर्म को पहचाना, उसने किसी और को दोषी नहीं ठहराया।

2 -अपने अधर्म के लिए पूर्ण पश्चाताप किया।

3 -विश्वासयोग्ता से क्षमा को प्राप्त किया।

4 -शुद्धता के लिए चिल्ला उठा।

5 -शुद्ध हृदय और आत्मा की खोज की।

8-उसके दुःख (भजन 23:3-4, 77:2-6):-

1 -रात-दिन का पश्चाताप।

2 -आंसुओं की बारिश।

3 -हड्डियों का गल जाना।

9-परमेश्वर ने पूरा करने के लिए क्या पाया (भजन 51:6,10,17):-

1 -आन्तरिक सच्चाई को देखना।

Creation Autonomous Academy

2 -शुद्ध हृदय और सही आत्मा।

3 -परमेश्वर की स्वतंत्र आत्मा से रोका गया।

4 -परमेश्वर के मन के अनुसार।

10-परमेश्वर का सेवक ऐसा होः-

1 -एक नम्र और दीन आत्मा।

2 -सत्य में प्रसन्न व्यक्ति।

3 -परमेश्वर की स्वतंत्र आत्मा से संभाला गया।

4 -परमेश्वर के हृदय के अनुसार।

अध्याय- 5

व्याख्यात्मक उपदेश

व्याख्या करने का अर्थ है स्पष्ट रुप से विषय की जानकारी देते हुए भावार्थ बताना।

व्याख्यात्मक उपदेश के लाभः-

यह बाइबल को सिखाने का सर्वोत्तम तरीका है। इसके बहुत से भिन्न-भिन्न लाभ हैं और आत्मिक पोषण करने का यह एक अच्छा तरीका है। इस तरीके के निम्नलिखित लाभ हैं।-

1-यह बाइबल का तरीका है।ः-

प्रभु यीशु ने स्वयं बार-बार इस तरीके का प्रयोग किया। वह पुराने नियम से एक भाग को लेता और अपने श्रोताओं को उसका अर्थ बताता।

पतरस ने भी पिन्तेकुस्त के दिन इसी तरीके का प्रयोग किया। उसने पवित्र शास्त्र के पुराने नियम से वह भाग लिया जो राजा दाऊद की ओर संकेत करता है और उसने उस विशाल भीड़ को उसका सही अर्थ बताया और उसने सावधानीपूर्वक पवित्र शास्त्र के उस भाग की भविष्यद्वाणी की व्यवहारिकता को बताया और वे किस प्रकार मसीह की ओर संकेत करती थीं और उसे मसीहा प्रमाणित करती थीं।

पुनः हम पाते हैं कि स्तिफनुस इसी तरीके का प्रयोग करते हुए प्रेरितों० 7 अध्याय में व्याख्यात्मक उपदेश देता है। बाइबल व्याख्यात्मक उपदेश के अच्छे उदाहरणों से भरी पड़ी है।

2-यह बाइबल के अनुरुप उपदेशक और कलीसियाएं उत्पन्न करता है।ः-

पवित्र शास्त्र की व्याख्या इस बात का आश्वासन देती है कि आपकी सेवकाई में बाइबल की बहुत मात्रा पायी जाती है। जैसे ही अध्याय और पदों से होते हुए बढ़ते हैं, आपकी कलीसिया परमेश्वर के वचन से भर जाती हैं।

3-यह पवित्र आत्मा को प्रभावी होने के लिए निमंत्रित करता है।ः-

परमेश्वर का आत्मा सर्वदा परमेश्वर के वचन के साथ सहमत होता है। (यूहन्ना 5:7) इसलिए हम जितना बाइबल का प्रचार करेंगे, प्रचार पर उतना ही अधिक पवित्र आत्मा का अभिषेक आएगा।

4-यह बाइबल में गहरी रुचि को प्रोत्साहित करता है।ः-

Creation Autonomous Academy

लोगों के बीच जितना अधिक बाइबल का प्रचार करते हैं वे उसके लिए उतना ही भूंखे हो जाते हैं। वे स्वयं गहराई तक जाने के लिए बहुत जल्द इसका अध्ययन आरम्भ करते हैं।

क - अच्छे प्रचार की बुनियाद

Foundation of good preaching

1-भूमिकाः आवश्यकताः -

“यह देखना क्या ही अद्‌भुत होता है कि एक प्रचारक बाइबल की सरल से सरल सच्चाइयों का प्रचार करते हुए श्रोतागणों को वशीभूत कर देता है। मैंने हज़ारों लोगों को देखा है जो उसके प्रचार को शान्तिपूर्वक सुनते हैं। कभी कभी सिसकियों की आवाज़ ही उनके मध्य में सुनाई देती है - - - प्रचारक अपने हृदय से सन्देश देते हैं। उनके सन्देश में प्रेम

और भावना की ऐसी लहर दिखायी देती है जो अत्यन्त सम्मोहक होती है। नॉर्थेम्पटन में असंख्य लोगों में नए विचारों, नई इच्छाओं, नए उद्देश्यों और नए जीवन की शुरूआत उसी दिन से होने लगी जिस दिन से उन्होंने उनके द्वारा मसीह और उसके उद्धार के सन्देश को सुना था।

(1740 - जॉर्ज व्हाइटफील्ड के बारे में सारा एडवर्ड द्वारा दिया गया विवरण)

''आख़िरकार उन्होंने अपने पाठ की उद्घोषणा की और अपने सन्देश को धीमी आवाज़ में बोलना शुरू किया। तब एक विचित्र घटना घटित हुई। अगले 40 मिनटों के लिए मैंने सब कुछ भूलकर उनके प्रचार को ध्यानपूर्वक सुनना शुरू किया - उस प्रचारक के शब्दों ने आपको प्रभावित नहीं किया, परन्तु कोई ऐसी बात जो उन शब्दों के पीछे, उन शब्दों में तथा उन शब्दों के द्वारा प्रकट की गई। यद्यपि मैंने उस समय इसका आभास न किया, फिर भी, यह सत्य है कि मैं प्रचार के रहस्य की विद्यमानता में बैठा था, अर्थात् एक ऐसे समय जब कोई व्यक्ति प्रचारक के सन्देश में लीन हो जाता हो।'

(1944 - डॉ० एम० लॉयड-जोन्स के बारे में टॉम ऐलन द्वारा दिया गया विवरण)

जौन स्टॉट्: *'सच्चा मसीही प्रचार (अर्थात् बाइबल पर आधारित या व्याख्यात्मक प्रचार) आजकल की कलीसिया में दुर्लभ है। अनेक देशों में विचाराशील युवक इसकी खोज में हैं पर वे इसे नहीं पाते।'*

जे ऐडम्स ने लिखा है, *''नीरस, अरुचिकर, शिक्षाहीन और लक्ष्यहीन प्रचार के कारण पुरुष और स्त्रियां (और विशेषकर जवान लोग) मसीह और उसकी कलीसिया से वापस लौट रहे हैं।'*

माइकल ग्रीन ने लिखा है, *''आधुनिक जगत् में प्रचार का स्तर दुःखद है। महान प्रचारकों की संख्या बहुत कम है। अनेक पादरी इस पर विश्वास नहीं करते कि यही सुसमाचार-प्रचार और जीवन-परिवर्तन का एक शक्तिशाली तरीका है। यह सन्देश-प्रचार का युग है: और सन्देश-प्रचार से लोग मसीही बनते हैं।'*

'प्रभु यीशु ने कहा, 'मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा।' (मत्ती 4:4)

सही प्रचार आज कल कलीसियाओं में बहुत कम मिलता है। परमेश्वर के वचन को प्रचार करने का कार्य सरल नहीं है। यह अद्भुत जिम्मेदारी है। हमारा मस्तिष्क 1 कुरिन्थियों 3:10-15 की तरफ जाता है।

'परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार जो मुझे प्रदान किया गया है, मैंने एक कुशल राजमिस्त्री की भांति नींव डाली, और दूसरा उस पर रद्दा रखता है। परन्तु प्रत्येक व्यक्ति सावधान रहे कि वह उस पर कैसा रद्दा रखता है। क्योंकि उस नींव को छोड़ जो पड़ी है-और वह यीशु मसीह है-कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता। यदि कोई मनुष्य इस नींव पर सोना, चांदी, बहुमूल्य पत्थर, काठ या घास-फूस से निर्माण करे, तो प्रत्येक मनुष्य का कार्य प्रकट हो जाएगा। वह दिन उसे दिखाएगा, क्योंकि वह दिन अग्नि के साथ प्रकट किया जाएगा, और वह अग्नि ही प्रत्येक मनुष्य के कार्य को परखेगी। यदि किसी मनुष्य का निर्मित कार्य जो उसने किया है स्थिर रहेगा तो उसे प्रतिफल मिलेगा। यदि किसी व्यक्ति का कार्य जल जाएगा तो वह हानि उठाएगा, परन्तु वह स्वयं बच जाएगा, फिर भी मानो आग से जलते-जलते।' (1 कुरिन्थियों 3:10-15)

विश्वव्यापी कलीसिया के लिए और हम प्रचारकों के लिए यह समय बहुत ही गम्भीर है। लेकिन एक उपाय भी है जिसे हमने अभी देखा है। इसका जबाब परमेश्वर के वचन से विश्वासयोग्य प्रचार है और इसीलिए हममें से प्रत्येक

Creation Autonomous Academy

को जिसे वचन की सेवा के लिए बुलाया गया है वे वचन की सेवा को और अधिक अब गम्भीरता से लें यदि पहले इसे नहीं लिया है।

सप्ताह दर सप्ताह एक के बाद दूसरा रविवार संपूर्ण संसार भर में पुरुष और स्त्री परमेश्वर की आराधना करने के लिए इकट्ठे होते हैं। उनके संगति का एक भाग संदेश देना भी होता है। लेकिन संदेश के नाम पर प्रचारकगण लोगों को घुमाते रहते हैं और कथा कहानियां सुनाते रहते हैं।

मैं आपको इस प्रकार के प्रचार का एक झलक बताता हूं। आइए दो प्रचारकों को देखें।-

एक प्रचारक प्रचार करने के लिए खड़ा होता है और अपना प्रचार एक पद का हवाला देते हुए आरम्भ करता है। और फिर आगे बढ़ता है यह प्रचारक काफी जोशीला है और हिलाकर रख देने वाला है, वह हवा में अपने हाथों को उत्साहपूर्वक लहराता है और कई बार जो वह कह रहा है उस पर जोर देने के लिए प्रचार मंच पर जोर-जोर से ठोंकता है, वह लोगों को हँसाने के लिए चुटकुले भी सुनाता है और फिर अपनी कहानियों के द्वारा लोगों के आंखों में आंसू भी भर देता है। लेकिन दुःख की बात है कि उसके संदेश का उस बाइबल पद से कुछ लेना देना नहीं है जिसे उसने आरम्भ में पढ़ा था। और पवित्र शास्त्र से तो उसके संदेश का बिल्कुल ताल्लुक ही नहीं है।

अब दूसरा प्रचारक एकदम गम्भीर चेहरे के साथ प्रचार करने खड़ा होता है। वह काफी विवरण में और गहराई में चला जाता है यहां तक कि मूल लेख में चला जाता है। वह वाक्य रचना और अल्पविराम के बारे में चर्चा करता है। वह खण्डों का यूनानी और लैटिन भाषा में हवाला देता है। वह मण्डली को यह बताता है कि भूतकाल के दिनों में महान धर्मवैज्ञानिकों ने इस खण्ड को किस प्रकार से समझा। लेकिन उसकी खुद की मण्डली सो जाती है और यदि वे जागते भी होते तो संदेश में उनके लिए कोई व्यवहारिक लागूकरण नहीं था।

पहला प्रचार आइसक्रीम खाने के समान है, दूसरा कच्चा आलू खाने के समान है। पहले प्रचार का वचन से कोई सम्बन्ध नहीं है एवं दूसरे प्रचार का लोगों के जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं है।

इसलिए यदि लोग सहमत भी हो जाते हैं कि प्रचार करना महत्वपूर्ण है पर यदि वे वास्तव में प्रचार न करें जिससे उनकी मण्डली का आत्मिक उत्थान हो सके, तो प्रचार कार्य व्यर्थ है।

विश्वासयोग्य और प्रभावशाली प्रचार की आवश्यकता सभी जगहों, सभी देशों में है। पौलुस प्रेरित जब तीमुथियुस को पत्र लिखते हुए उसे चुनौती देता है कि वह वचन का प्रचार विश्वासयोग्यता से करे। तब हमारी आशा है कि हम सब प्रभु के वचन का प्रचार करने में और अधिक विश्वासयोग्यता से प्रचार करें जहां हम सेवा करते हैं।

Creation Autonomous Academy

मैं आशा करता हूं कि यह अध्ययन काफी व्यवहारिक साबित होगा जिसमें हम देखेंगे कि कैसे वचन का अर्थ निकालना है, उसे कैसे व्यवहार में लाना है, कैसे संदेश की तैयारी करना है, रुपरेखा बनाना है और प्रभु के हाथ में हम कैसे प्रभावशाली हथियार हो सकते हैं। लेकिन इससे पहले कि हम इस पाठ्यक्रम के व्यवहारिक पहलू को आरम्भ होने से पहले हमें कुछ आधारभूत सिद्धान्तों को स्थापित करना है।

यदि हम प्रचारक हैं तो हमें समझने की आवश्यकता है कि हम क्या हैं। अच्छा प्रचार चतुराई भरा संचार नहीं है: हम क्या कर रहे हैं उसके प्रति कायलता आवश्यक है।

2-कुछ आधारभूत सिद्धान्तः-

1- बाइबल के बारे में कायलताः परमेश्वर की सच्चाई

यह सत्य है, अधिकार पूर्ण है और आज के लिए उपयोगी है।

हम सब इसके प्रति कायल हैं कि बाइबल अधिकारिक रुप से परमेश्वर का वचन है। पवित्र शास्त्र परमेश्वर की सच्चाई है और उसके अधिकार को प्रकट करती है। वचन आज भी हमारे जीवन के लिए उपयोगी है। (1 थिस्स० 2:13)

बाइबल में 66 पुस्तकें हैं जिनको लगभग 40 लेखकों ने लिखा है, ये तीन भाषाओं में लिखी गयी हैं। ये लगभग 1600 वर्षों के अन्तराल में लिखी गयीं। यह प्रत्येक स्थान एवं दूरी के लोगों के लिए, आज के लिए परमेश्वर का प्रकाशन है।

क) बाइबल के पास अनोखा अधिकार है। यह आज के लिए उपयुक्त है।
-हमने इसकी इस सच्चाई को जान लिया है।

जर्मन के महान धर्मसुधारक मार्टिन लूथर ने लिखा है, *''बाइबल जीवित है और यह मुझसे बात करती है; इसके पास पैर हैं, यह मेरे पीछे दौड़ती है; इसके पास हाथ हैं, यह मुझे पकड़ती है।'*

बाइबल में अनोखा अधिकार है। वचन दोधारी तलवार है। (इब्रानियो 4:12) परमेश्वर का वचन अटल है। (मत्ती 24:35) प्रचार का अधिकार परमेश्वर के वचन से प्राप्त होता है। जो हमने सीखा है उसे औरों को सिखाएं। (मत्ती 28:18-20) प्रभु यीशु मसीह की आज्ञाओं को सिखाना है। बाइबल का प्रचार करें। परमेश्वर का वचन लोगों को उद्धार देता है।

इफिसियो 6:17

- इसके पास अनोखा अधिकार है। यह इसका स्वयं दावा करती है:

2 तीमुथियुस 3:15-17

2 पतरस 1:20-21

- यीशु सिखाते हैं कि इसके पास अधिकार है।

यूहन्ना 10:35 पुराने नियम के बारे में यीशु का विचार

मत्ती 24:35 अपने वचनों के बारे में यीशु का विचार

यूहन्ना 14:26 यीशु अपने शिष्यों को प्रतिज्ञा देते हैं

Creation Autonomous Academy

यदि हम मसीह के अधिकार के प्रति स्वयं को सौंप दें तो ऐसी स्थिति में मसीह के अनुयायी होने के लिए उसने हमें बाइबल के अधिकार को ग्रहण करने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं दिया है।

ख) बाइबल आज के लिए उपयुक्त है। :-

बाइबल आज भी हमारे लिए उपयोगी है। यह हमारे लिए है। रोमियो 15:4 ''पूर्व-काल में जो कुछ लिखा गया था वह हमारी ही शिक्षा के लिए लिखा गया था जिस से धैर्य एवं पवित्रशास्त्र के प्रोत्साहन द्वारा हम आशा रखें।'

क्योंकि मूसा की व्यवस्था में लिखा है,'दांवनी में चलते हुए बैल का मुंह मत बांधना।' क्या परमेश्वर को केवल बैलों की ही चिन्ता है? या वह सब कुछ हमारे लिए कहता है? हां, हमारे लिए ही

यह लिखा गया है---। (1 कुरिन्थियों 9:9-10, 1 कुरिन्थियों 10:11) सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और शिक्षा, ताड़ना, सुधार और धार्मिकता की शिक्षा के लिए उपयोगी है। (2 तीमुथियुस 3:15-16)

परमेश्वर का वचन प्रत्येक के लिए है। प्रचार करते समय यह ध्यान रखें कि सबसे पहले बाइबल हमारे लिए है। बाइबल का प्रत्येक खण्ड हमारे लिए है। प्रचार इस तरीके से करें कि वचन लोगों के जीवन में पहुंच जाए। बाइबल हरेक काल के लिए उपयोगी है।

यदि आपके पास बाइबल के अधिकार के प्रति उच्च विचार नहीं है तो क्या आप उसके प्रचार पर ध्यान देंगे?

बिशप जूवेल (1522-71) ने लिखा, ''परमेश्वर का पूरा वचन शुद्ध और पवित्र है। उसका एक एक शब्द, अक्षर, मात्रा एवं बिन्दु तेरे लिए लिखा गया और सुरक्षित है।

2- प्रचार के बारे में कायलताः परमेश्वर का तरीकाः-

आप ऐसा तर्क कर सकते हैं कि बाइबल अधिकार-सम्पन्न और आज के लिए उपयुक्त नहीं है परन्तु केवल एक छापी गई पुस्तक है और बांटे जाने के लिए है। परन्तु अकसर, जानबूझकर अधिकाई से परमेश्वर बाइबल को समझाने के लिए लोगों को इस्तेमाल करता है। रोमियो 10:14

हम सब प्रचार की महत्वता के प्रति कायल हैं कि यह परमेश्वर का चुना हुआ तरीका है जिसमें प्रभु के वचन की सत्यता को समझाया जाए और उसके लोगों को तैयार किया जाए। (2 तीमु० 4:2-5)

पवित्र आत्मा ने फिलिप्पुस को प्रचार करने हेतु भेजा। परन्तु प्रभु के एक स्वर्गदूत ने फिलिप्पुस से कहा,'उठ, और दक्षिण की ओर उस मार्ग पर जा जो यरुशलेम से गाजा की ओर जाता है।' यह एक निर्जन मार्ग है। वह उठकर गया, और देखो, इथियोपिया देश का एक खोजा था, जो उस देश की रानी कन्दाके का मंत्री तथा कोषाध्यक्ष था। वह आराधना करने यरुशलेम आया था। वह अपने रथ में बैठकर यशायाह नबी की पुस्तक पढ़ते हुए वापस लौट रहा था। तब आत्मा ने फिलिप्पुस से कहा,'जा, तू इस रथ के साथ चला जा।' जब फिलिप्पुस दौड़कर वहां पहुंचा तो उसने उसे यशायाह नबी की पुस्तक पढ़ते सुना और कहा,'जो तू पढ़ रहा है क्या उसे समझता भी है?' उसने कहा,'जब तक कोई मुझे न समझाए, मैं कैसे समझ सकता हूं?' और उसने फिलिप्पुस से विनती की कि वह ऊपर आकर उसके पास बैठे। पवित्र शास्त्र का जो अध्याय वह पढ़ रहा था, यह थाः 'वह वध होने वाली भेंड़ के समान ले जाया गया, और जैसे मेमना ऊन कतरने वालों के सामने चुपचाप रहता है, वैसे ही उसने भी अपना मुंह न खोला। दीनता की दशा में उसका न्याय नहीं होने पाया। उसकी पीढ़ी के लोगों का वर्णन कौन करेगा? क्योंकि पृथ्वी पर से उसका जीवन उठा लिया जाता है।' खोजे ने फिलिप्पुस से कहा,'कृपा करके मुझे बता कि नबी यह किसके विषय में कहता है? अपने या किसी दूसरे के विषय में?' तब फिलिप्पुस ने अपना मुंह खोला और इसी शास्त्र से आरम्भ करके उसे यीशु के विषय में सुसमाचार सुनाया। (प्रेरितों० 8:26-35)

फिर वे उसे क्यों पुकारेंगे जिस पर उन्होंने विश्वास ही नहीं किया? और वे उस पर कैसे विश्वास करेंगे जिसके विषय में उन्होंने सुना ही नहीं? भला वे प्रचारक के बिना कैसे सुनेंगे? और वे प्रचार कैसे करेंगे जब तक कि भेजे न जाएं? ठीक जैसा कि लिखा है,'उनके पांव कैसे सुहावने हैं जो भली बातों का सुसमाचार लाते हैं।' (रोमियों 10:14-15)

परमेश्वर वचन के साथ दूसरे लोगों को भी चाहता है जो इस तरीके से लोगों को समझाएं कि लोग वचन को समझ जाएं। परमेश्वर की सच्चाई का प्रचार करना प्रभु यीशु की प्रथम प्राथमिकता थी।

अतः जो तितर-बितर हुए थे, घूम-घूम कर वचन का प्रचार करने लगे। (प्रेरितों० 8:4)

Creation Autonomous Academy

शिक्षा ठीक तरह से दें। जैसे मैंने मैसीडोनिया जाते समय तुझसे इफिसुस में रहने का आग्रह किया था अब भी वहीं रह, जिससे तू वहां कुछ लोगों को आदेश दे सके कि वे अन्य प्रकार की शिक्षा न दें। (1 तीमु० 1:3)

नये नियम की कलीसिया के लिए प्रचार आधारभूत कार्य था। कलीसिया के प्राचीनों के लिए प्रचार महत्वपूर्ण था। परमेश्वर और मसीह यीशु को गवाह जानकर जो जीवितों और मृतकों का न्याय करेगा, और उसके प्रकट होने तथा उसके राज्य के नाम में मैं तुझे आज्ञा देता हूं कि वचन का प्रचार कर, समय और असमय तैयार रह, बड़े धैर्य से शिक्षा देते हुए ताड़ना दे, डांट और समझा। (2 तीमु० 4:1-2) प्रचार से सम्बन्धित सभी सेवाएं जो बाइबल में हैं उनको करना है। और कि मैं किस प्रकार तुम्हारे लाभ के लिए कोई भी बात बताने से न झिझका और सबके सामने तथा घर-घर जाकर तुम्हें उपदेश देता रहा। (प्रेरितों० 20:20) वचन से क्या प्रचार करें? इसके लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें। एज्रा ने व्यवस्था को पढ़कर सुनाया। (नहेमायाह 8:3) लेवियों ने समझाया (नहेमायाह 8:7) पढ़ना, समझाना और अर्थ बताना कि लोग समझ सकें।

परमेश्वर की आवाज सुनकर प्रचार करें अन्यथा जो कुछ हमें आता है वह बोलेंगे, जो बहुत ही गलत प्रचार होगा। हम धैर्य के साथ सिखाने वाले हों। कलीसिया के अधिकारियों के अन्दर प्रचार करने व सिखाने की योग्यता होनी चाहिए। सेवकों को परमेश्वर अपने लोगों को वचन के समझाने में उपयोग करता है। हम परमेश्वर पर निर्भर हों, परमेश्वर के प्रचार विधि के कायल हों।

यीशु ने प्रचार को प्राथमिकता दी थीः मरकुस 1:38

'प्रचार' शब्द का प्रयोग बाहर जाकर सुसमाचार की घोषणा करने हेतु साधारण मसीहियों द्वारा किया गया। प्रेरितों के काम 8:2

प्रचार करने के द्वारा तेज़ी से विकास लाना नया नियम का तरीका था।

1 कुरिन्थियों 1:21-24
2 तीमुथियुस 4:1-3

कलीसिया के प्राचीन या अध्यक्ष के लिए वरदानों में से जिस एक वरदान की मांग की गई वह थी "शिक्षा देने में निपुण हो (1 तीमुथियुस 3:2 और 5:17)

Creation Autonomous Academy

बाइबल में प्रचार करने' के लिए रोकटोक नहीं लगाई गई। जैसा कलीसिया में कहा गया -प्रेरितो के काम 8:4, "वे जहां कहीं गए, प्रचार किये।' नया नियम में 33 क्रियाएं पायी जाती हैं जो विभिन्न प्रकार से की जानेवाली वचन की सेवकाई के बारे में बतलाती हैं। इनमें हैं सूचना के वचन देना (शिक्षा देना), घोषणा करना (प्रचार करना), कायलता लाना (समझाना, प्रमाणित करना), बातचीत करना (बोलना, उत्तर देना)।

' इसके लिए नया नियम में निम्नलिखित यूनानी शब्दों का प्रयोग किया गया हैः (केरुस्सो/केरिग्मा) = घोषणा करना (60 बार); (इव्हेंजेलिज़ोमाई) = शुभ सन्देश लाना (50 बार); (डिडास्को/डिडाके) = शिक्षा देना, ग्रहण करने के लिए बार बार हाथ पसारना (95 बार)। नया नियम में प्रचार करने और शिक्षा देने में अलगाव नहीं किया गया है। यद्यपि मिशनरी प्रचार और मसीही शिक्षण में भिन्नता दिखायी देती है फिर भी, दोनों ही एक दूसरे के साथ सूक्ष्मता से जुड़े हुए हैं। शिक्षा देना (डिडास्को) का प्रयोग अविश्वासियों के बीच 'प्रचार करने' (प्रेरित 13:12) और मसीहियों के बीच

'शिक्षा देने' दोनो में हो सकता है। सुसमाचार ऐसा सन्देश नहीं जिसकी शिक्षा केवल बाहर वालों को ही दी जाए, परन्तु एक सत्य है जिस पर मसीहियों को शिक्षा ग्रहण करनी होगी। इस विषय पर पत्रियों द्वारा कलीसियाओं को लिखा गया था।'

यीशु का उदाहरणः
पौलुस का उदाहरणः प्रेरित 20:20

पीटर ऐडमः ''हम जो प्रचार करने के लिए समर्पित हैं, वचन की व्यापक सेवकाई के लिए भी समर्पित होना पड़ेगा --- इस बात को स्पष्टता से समझना महत्वपूर्ण है, या फिर प्रचार को मात्र एक बोझ के समान ही समझना होगा जिसका कोई नतीजा नही निकलेगा; अर्थात् बाइबल की प्रत्याशा के अनुसार वचन की सेवकाई के प्रत्येक तरीके का पालन करने का बोझ हो --- हमारी *सेवकाई सम्भवतः केवल पुलपिट पर ही केन्द्रित हो, परन्तु इसे केवल पुलपिट के साथ ही रोक कर न रखें वरना इस प्रकार की सेवकाई में सीमाएं खिंच जाएंगी।'*

कुछ उदाहरण हैं जहां लोगों के पास वचन तो था परन्तु फिर भी प्रचारक की ज़रूरत थीः
नहेमायाह 8:8
लूका 24:25-27,32
प्रेरित 8:30-35

3- पवित्र आत्मा के बारे में कायलताः परमेश्वर की सामर्थः-

हम प्रचारकों को जिस काम के लिए बुलाया गया है पवित्र आत्मा उसमें हमें योग्य बनाता है और हम सबको वचन के प्रचार से कायल करता है। (1 कुरि० 2:3-4)

परमेश्वर ही मनुष्य के हृदय को बदल सकता है। परमेश्वर हृदयों को खोलता है। प्रचारक मात्र एक माध्यम है। मनुष्य परमेश्वर का औजार बन सकता है। व्यक्ति माध्यम हो सकता है स्रोत नहीं। केवल पवित्र आत्मा के पास लोगों के हृदयों को खोलने की सामर्थ्य है। पवित्र आत्मा दो प्रमुख कार्य करता है।-

1 -पवित्र आत्मा प्रचारक की सहायता करता है।
2 -पवित्र आत्मा सुनने वाले को कायल करता है।

हम ज़रूरतमन्दों के लिए परमेश्वर के वचन को कैसे जीवित ला सकते हैं? इसका ख़ास उत्तर हैः

Creation Autonomous Academy

(1) वह प्रचारक को योग्य बनाता हैः-

पवित्र आत्मा वक्ता को योग्य बनाता है। प्रचार करने के लिए परमेश्वर का आत्मा मुझ पर है। 'प्रभु का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है। उसने मुझे भेजा है कि मैं बन्दियों को छुटकारे का और अंधों को दृष्टि पाने का संदेश दूं और दलितों को छुड़ाऊं, और प्रभु के अनुग्रह के समय की उदघोषणा करुं।' (लूका 4:18-19, यशा० 61:1-3) पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर वचन सुनाएं। जब वे प्रार्थना कर चुके तो वह स्थान जहां वे एकत्रित थे हिल गया, और वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए, और परमेश्वर का वचन निर्भीकता से सुनाने लगे। (प्रेरितों० 4:31) नया नियम के विश्वासी प्रभावशाली इस कारण थे क्योंकि उन्हें पवित्र आत्मा की सहायता मिली थी। (प्रेरित 4:31) पवित्र आत्मा पर निर्भर हों। पवित्र आत्मा प्रचार करने में सहायता करता है। पवित्र आत्मा की सामर्थ्य में प्रचार करें। अपनी ओर से प्रचार न करें। पिता ने जो बताया है उसे प्रचार करें। 'मैंने अपने आप कुछ नहीं कहा, परन्तु पिता

जिसने मुझे भेजा है उसी ने आज्ञा दी है कि क्या कहूं और क्या बोलूं। और मैं जानता हूं कि उसकी आज्ञा अनन्त जीवन है। इसलिए मैं जो कुछ बोलता हूं, जैसा पिता ने मुझसे कहा है वैसे ही बोलता हूं।' (यूहन्ना 12:49-50)

हमें परमेश्वर की सहायता पाने की आवश्यकता है। हम एक भी आत्मा को नहीं बचा सकते, केवल परमेश्वर बचा सकता है। व्यक्ति माध्यम है। पवित्र आत्मा के बारे में दो महत्वपूर्ण बातें हैं।ः 1 -आत्मा लोगों को उभारता है। 2 -सुनने वाले को निरुत्तर कर देता है।

1 कुरिन्थियों 2:3-4,13

जॉन पाइपर लिखते हैं, ''हम प्रचार के कार्य में पवित्र आत्मा पर इतना भरोसा क्यों रखते हैं! सब प्रकार के सही प्रचार का मूल हमारी नैराश्य स्थिति में पाया जाता है।

(2) वह श्रोता को कायल करता हैः-

पवित्र आत्मा श्रोताओं को कायल करता है। पवित्र आत्मा मात्र वचन ही नहीं देता, मात्र प्रचारक को अभिषिक्त ही नहीं करता, वह श्रोताओं के हृदयों को खोलता है। 'परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातों को ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसके लिए मूर्खतापूर्ण हैं और वह उन्हें समझ नहीं सकता क्योंकि उनकी परख आत्मिक रीति से होती है।' (1 कुरिन्थियों 2:14) प्रभु यीशु मसीह ने पवित्र आत्मा के विषय में कहा,'और जब वह आएगा तो संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर करेगा।' (यूहन्ना 16:8) कुरनेलियुस के घर में पतरस का यह अनुभव था,'जब पतरस यह वचन कह ही रहा था, तभी वचन के सब सुनने वालों पर पवित्र आत्मा उतर आया।' (प्रेरितों० 10:44) पुनः देखें,'मैंने बोया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया। अतः न बोने वाला कुछ है, और न ही सींचने वाला, परन्तु बढ़ाने वाला परमेश्वर ही सब कुछ है। बोने वाला और सींचने वाला दोनों एक समान हैं, परन्तु प्रत्येक अपने ही परिश्रम के अनुसार प्रतिफल पाएगा। क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं, तुम परमेश्वर का खेत हो और परमेश्वर का भवन हो।' (1 कुरि० 3:6-9) केवल परमेश्वर है जो चीजों को बढ़ाता है। यह हमें नम्र बनाता है। यह परमेश्वर है जो जीवन को बदल देता है। सुसमाचार सुनाने की शक्ति, प्रचार में अपनी नहीं बल्कि पवित्र आत्मा की है। परमेश्वर का सत्य, परमेश्वर की विधि, परमेश्वर का जन, परमेश्वर की सामर्थ्य।

हम परमेश्वर केन्द्रित उक्त कायलता के साथ आरम्भ नहीं करते तो हम कुछ भी आरम्भ नहीं कर सकते।

Creation Autonomous Academy

चार्ल्स स्पर्जनः *'सुसमाचार सभी के कानों में प्रचार किया जाता है; यह सामर्थ के साथ केवल कुछ ही के पास आता है। सुसमाचार में निहित सामर्थ प्रचारक के वाकपटुता में नहीं पाया जाता। यदि ऐसा होता तो प्रचारक लोगों के मनों को बदल देते। यह प्रचारक की अर्जित शिक्षा पर निर्भर नहीं होता, वरना इसमें मनुष्यों की बुद्धि पायी जाती। हम शायद उस समय तक प्रचार कर सकेंगे जब तक कि हमारी जीभ थक न जाए, हमारे फेफड़े थक न जाएं और हम मर न जाएं। लेकिन उस समय तक एक भी आत्मा जीती न जा सकेगी जब तक कि हमारे सन्देश के साथ एक रहस्यपूर्ण सामर्थ न जाए। पवित्र आत्मा ही मनुष्यों की इच्छाओं को बदल सकता है। महाशय! लोगों के मनों को बदलने के लिए यदि हमारे प्रचार में पवित्र आत्मा न हो, तो ऐसी स्थिति में हम मानो पत्थरों को प्रचार करने वाले होंगे।*

परमेश्वर की सच्चाई - परमेश्वर का तरीका - परमेश्वर की सामर्थ। यदि हम केन्द्र बिन्दु में परमेश्वर के साथ इन कायलताओं को न लें तो हमारे लिए अच्छा होगा कि हम प्रारम्भ ही न करें।

प्रेरित पौलुस तीमुथियुस को लिखते हुए उसे चुनौती देता है कि वह “ परमेश्वर के वचन को विश्वासयोग्यता के साथ प्रचार करे।”

ख-प्रचार कार्य की परिभाषा

Define the task of preaching

व्याख्यात्मक प्रचार क्या है?

हम क्या कर रहे हैं जब हम प्रचार करते हैं?

जब हम परमेश्वर के वचन का प्रचार करते हैं-परमेश्वर ने जो दिया उसे प्रचार करें। हमारा कार्य है - स्पष्ट करें बाइबल खण्ड में क्या लिखा है। यदि हम परमेश्वर के वचन का प्रचार करने जा रहे हैं तो हमें अवश्य उसी का प्रचार करना है जो बाइबल में दिया गया है। हमारा काम बाइबल में जो है उसे स्पष्ट करना है।

1- खण्ड में जो है उसे दिखाना है :-

परमेश्वर का वचन जिन लोगों को जिस उद्देश्य के अन्तर्गत पहुंचा है उसी उद्देश्य के अन्तर्गत वर्तमान में उसे लागू करें। परमेश्वर एक समय में, एक समूह के लिए वचन देता है और यह वर्तमान समय में सभी समूहों के लिए हो जाता है। प्रचार का उद्देश्य या अर्थ बाइबल पर आधारित नहीं है तो प्रचार गलत हो सकता है। प्रचार करने का तात्पर्य है खण्ड का सही अर्थ लोगों को समझा देना। (प्रेरित० 17:2-3) वचन लेना, पढ़ना और समझाना। (नहेमयाह 8:5-8)

क-एक प्रस्तुतिकरण :-

1-मुझे निर्णय नहीं लेना है कि क्या कहना है?

हमें घबराना नहीं है कि मुझे क्या कहना चाहिये? 2 तीमु० 3:16 हमें बताता है कि हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है।

प्रायः पुस्तक से श्रृंखलाबद्ध तरीके से प्रचार कीजिए।

यह हमेंशा उपयोगी है।

Creation Autonomous Academy

यह प्रत्येक परिस्थितियों में उपयोगी है। मैं इसकी भविष्यद्वाणी नहीं कर सकता हूं लेकिन प्रभु कर सकता है। उदाहरण के लिए कोई अगुवा व्यभिचार में लिप्त हो। इफि० 5

मैं कठिन खण्डों को अनदेखा नहीं करना चाहता हूं।

2) मेरे प्रचार में अधिकार होता है क्योंकि वचन में परमेश्वर का अधिकार पाया जाता है।

प्रचार राजा की तरफ से घोषणा करना है। (2 कुरि० 5:20, प्रेरितों० 17:11)

3) मैं झूठी शिक्षा से बच जाता हूं:

इसलिए नहीं कि मैं हमेंशा सही ही होता हूं परन्तु मैं जो कहता हूं उसे मेरी कलीसिया जांच सकती है। (प्रेरित 17:11)

मुझे अपने खुद के विचारों को खण्ड पर नहीं थोपना चाहिए। अपने विचारों को खण्ड में न घुसेड़ें।

ख-एक अनुशासन :-

बाइबल हमें याद दिलाती है कि परमेश्वर के वचन का उपयोग करने के दो ही तरीके हैं सही या गलत।

2 तीमु० 2:15- वे लोग जो सत्य के वचन का सही प्रकार से उपयोग करते हैं।
2 कुरि० 4:1-2 - जो वचन से धोखेबाजी नहीं करते। परमेश्वर के वचन में मिलावट न करें।
यिर्म० 8:8-9 - शास्त्रियों की झूठी लेखनी ने उसे झूंठा बना डाला।

ब्रायन चैपल इस विषय पर कुछ कहना चाहते हैं:
'बाइबल में प्रत्येक खण्ड का एक ही अर्थ है, जो लेखक कहना चाहता था वह है और चूंकि यह परमेश्वर पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरित है तो यह परमेश्वर जो कहना चाहता था वही अर्थ सही है।

कुछ खतरे हैं-
1 -पहला खतरा है अपना स्वयं का अर्थ खण्ड में रखना।
अपनी विचारधारा खण्ड पर थोपना। जो हम कहना चाहते हैं वह खण्ड से कहलवाना।

2 -दूसरा खतरा है उस खण्ड में से एक शब्द को चुनकर उसका अर्थ निकालने का प्रयत्न करना।
एक शब्द पर ही अपने प्रचार को केन्द्रित करते हैं। प्रत्येक खण्ड का अर्थ पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित है।(2 तीमु० 2:15, 3:16)

3 -तीसरा खतरा है अपनी अपेक्षाओं के आधार पर अर्थ लगाना।
बाइबल वास्तव में क्या कहती है उसे सुने बिना अर्थ लगाना।

4 -चौथा खतरा है हमारे पास एक धर्मवैज्ञानिक ढांचा है जिसे हम खण्ड में रखने की कोशिश करते हैं।
हमें अपने ढांचे को खण्ड में नहीं डालना चाहिए।
उदाहरण के लिए खण्ड में अनुग्रह शब्द है और मैं कहता हूं कि मैं इसे जानता हूं। इसका अर्थ हर जगह एक ही है। जबकि इसके विपरीत खण्ड की चुनौती हमें स्वीकार करना चाहिए और खण्ड के अनुसार अपने ढांचे को बदलना चाहिए।

Creation Autonomous Academy

हमारा धर्मवैज्ञानिक ढांचा - विशेष खण्ड

अपना अर्थ लगाना, एक ही पद पर प्रचार करना, तैयारी का समय न होना, एक शब्द पर प्रचार करना ये सब प्रचारक के लिए खतरे हैं।

प्रचार करते समय अनुशासित रहना जरुरी है। एक खण्ड का एक अर्थ होता है जो लेखक का उद्देश्य होता है।

जब हम खण्ड का अध्ययन करते हैं तो उस खण्ड के अनुसार अर्थ को निकालना चाहिए। उस खण्ड के अर्थ को अपने पूरे समझ में ले जाइए। हमें प्रत्येक खण्ड को नए तरीके से लाना चाहिए इस प्रकार की वह बिल्कुल नया है।

हमें खण्ड से प्रश्न पूछना चाहिए:-
यह यहां क्यों है? यहां इसका अर्थ क्या है?
वहां वह क्यों कहता है? कौन सी चीजें हैं जो हमें आश्चर्य में डाल रही हैं?

यहां एक अर्थ है- इसका क्या अर्थ है यह निकालना सम्भव है।
यह हमारा कार्य है। लेकिन यह कठिन कार्य है।
प्रत्येक खण्ड का केवल एक अर्थ निकलता है। सही अर्थ पाने के लिए कठिन परिश्रम करना होगा।

2-दो संसारों के मध्य पुल बनानाः-

प्रचारक खण्ड के संसार और कलीसिया के संसार के बीच एक पुल के रुप में कार्य करता है। बिना प्रचारक के खण्ड से संदेश 20 वीं सदी के श्रोताओं तक नहीं पहुंच सकता है। इसलिए दोनों संसारों को जोड़ना जरुरी है।

क-खण्ड का संसारः-

दो चीजों का हमें खण्ड से पता लगाना है।

1) खण्ड क्या कह रहा है? अर्थ
2) खण्ड क्या कर रहा है? उद्देश्य

परमेश्वर - कुरिन्थ - हम

प्रत्येक खण्ड का एक विशेष अर्थ है। वह अर्थ एक विशेष ऐतिहासिक परिस्थिति के अन्तर्गत पाया जाता है। हम उस अर्थ को तभी समझ पाएंगे जब हम उस खण्ड की परिस्थिति को समझ सकें। उस खण्ड का अर्थ उन प्रथम श्रोताओं के लिए क्या था? अतः पौलुस के कुरिन्थियों की कलीसिया को लिखे गए पत्र को समझने के लिए ‘कुरिन्थ के पीछे यात्रा करें’ और समझें, जो सम्भव है, पौलुस के लिखते समय की स्थिति को समझें, परमेश्वर का वास्तविक संदेश क्या है? तब और मात्र तब, हम दिल्ली के लिए यात्रा कर सकते हैं समझने के लिए कैसे वह संदेश हम लागू करें। हमारा कार्य है खण्ड के अर्थ को उसकी मूल परिस्थिति में समझना, तब आज की हमारी परिस्थिति के लिए वह अर्थ लागू करना।

ख) आज का संसार :-

अब हमारा कार्य खण्ड के अर्थ और उद्देश्य को आज के श्रोताओं पर लागू करना है।
बाइबल तब हमारे लिए लिखी गयी थी। (यूहन्ना 20:30-31)
बाइबल एक उद्देश्य के साथ लिखी गयी। (2 तीमु० 3:16-17)

लेकिन यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि बाइबल आज के लिए उपयोगी है। हम इसे लागू करने के द्वारा दिखाते हैं कि हमारी परिस्थिति में यह उपयोगी है। दो हजार, तीन हजार, चार हजार वर्षों तक एक लम्बा समय है। अतः जब हम प्रचार करते हैं कुछ चीजें हैं जो नहीं बदलती हैं।

Creation Autonomous Academy

1-अपरिवर्तनीय वास्तविकताएंः-

वह चीजें जो नहीं बदलतीं।

परमेश्वर जो कभी नहीं बदलता, वह हमेशा से वेसे ही अनुग्रहकारी और दयालू परमेश्वर है जो अपने वचन बाइबल में बोला। उसके पास सब कुछ है, यह सत्य सृष्टिकर्ता परमेश्वर है अटल और कभी न बदलने वाला।

हमारा पापी स्वभाव न बदलने वाला है। हम परमेश्वर के विरुद्ध, मूर्तिपूजक थे।

वैसे ही उद्धार का मार्ग है। (यूहन्ना 14:6) यीशु ही केवल उद्धारकर्ता है।

यूहन्ना 3:16 परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ।----

2-बदलती हुई परिस्थितियां :-

वे चीजें जो बदल जाती हैं। हमारी संस्कृति में और एक समाज से दूसरे समाज में।

भाषाओं में अन्तर है।

वे चीजें हैं जो बदलाव लाती हैं। नयी नैतिक समस्याएं, विशेष परिस्थिति में बदलाव। लोग जिनको हम प्रचार करते हैं। इसलिए विशेष कठिनाइयों और समस्याओं को जानना आवश्यक है। अवश्य है कि जिस संसार में हम रहते हैं उसे जानें। हम लोगों को जानें। प्रचार का घर में और पुलपिट में भी महत्वपूर्ण स्थान है।

खण्ड का संसार -	प्रचारक का कार्य-	आज का संसार
(बाइबल के समय की घटना)		(वर्तमान समय से जोड़ दें)

जब खण्ड के दिनों में दिए गए संदेश को समझ लें तो आज के लिए हम उसे समझ सकते हैं। कुछ ऐसी बातें हैं जो बदलती नहीं, परन्तु कुछ बातें हैं जो बदल जाती हैं। जैसे हमारी संस्कृतियों में परिवर्तन, भाषाओं में परिवर्तन आदि। वर्तमान जगत को जानना जरुरी है। हमारा लक्ष्य है कि हम उस समय और आज के समय के बीच एक पुल के समान बन जाएं।

बाइबल हमेशा प्रासंगिक है। बाइबल के समय में व वर्तमान काल में जो समानताएं व असमानताएं हैं उन्हें जानना आवश्यक है। बाइबल के जगत और वर्तमान जगत दोनों को जानना चाहिए। हमें प्रचारक और चरवाहा दोनों बनना चाहिए। हमें वर्तमान परिस्थितियों की भी जानकारी होनी चाहिए। हमारा एक कदम बाइबल के समय में और दूसरा कदम वर्तमान समय में होना चाहिए।

ग-खण्ड का अर्थ निकालना

Making sence of the passage

खण्ड में क्या है?

बाइबल के प्रत्येक पद और खण्ड एक उद्देश्य के लिए लिखें गए हैं। सीखना है कि कैसे हम खण्ड का अर्थ निकालें?

हमें इस बात को देखना है कि खण्ड में क्या मुख्य शिक्षा या संदेश लिखा है। जब तक खण्ड का संदेश न समझ लें, उस खण्ड से प्रचार न करें। सबसे मुख्य बात का पता लगाने के लिए पवित्र आत्मा से प्रार्थना करें। लेकिन पवित्र आत्मा ने हमें वचन और ज्ञानेन्द्रियां दी हैं, हम उनका प्रयोग करके समझें ताकि प्रचार कर सकें, औरों को समझा सकें।

Creation Autonomous Academy

1-स्वाभाविक अर्थ :-

खण्ड का स्वाभाविक अर्थ क्या है? यह खण्ड क्यों लिखा गया है? किसके बारे में लिखा गया है? ये हमें क्या बताना चाहता है? स्वाभाविक अर्थ बहुत ही महत्वपूर्ण है। ये बाइबल को प्रचारक के हाथ में दुबारा से रख देता है जो वचन खोज रहा है।

परमेश्वर ने अपने वचन को लिखवाते समय यही चाहा कि लोग उसके वचन को सरलता के साथ समझ सकें अर्थात वचन का अर्थ सरल हो। परमेश्वर के आत्म प्रकाशन का पूर्ण मतलब यही था कि लोग उसको समझ सकें, न कि भ्रम में पड़ जाएं।

परमेश्वर के वचन में तुलनात्मक भाषा या अलंकारिक भाषा का प्रयोग भी किया गया है। जब भी हम ऐसे तुलनात्मक उदाहरणों को पाते हैं, तो हमें यह प्रश्न पूछना चाहिए कि इस तुलना में किस विशेष बात को दर्शाया गया है? जहां तक परमेश्वर का वचन हमें बताता है वहीं तक हमें समझना तथा बताना है, न तो उससे अधिक न उससे कम।

अलंकारिक अर्थ और शाब्दिक अर्थ में भिन्नता मालुम करने के लिए यह आवश्यक है कि हम स्वाभाविक अर्थ जानने की कोशिश करें तथा अपनी बुद्धि का भी प्रयोग करें। यह देखें कि आखिरकार लेखक क्या कहना चाहता है या क्या कह रहा है? भजन 75:3 को देखें, जहां परमेश्वर मानों कह रहा है कि जब पृथ्वी कांपती है तो वह उसके खम्बों को स्थिर करता है। यहां क्या सचमुच में पृथ्वी खम्बों पर स्थिर है? नहीं। फिर पद 4 में परमेश्वर दुष्टों से कहता है कि सींग उंचा मत करो। अगर हम शाब्दिक अर्थ को लें तो प्रश्न उठेगा कि क्या दुष्टों के सींग होते है? नहीं। यहां पर इसका मतलब धन की बहुतायत और उन्नति से है। फिर आठवें पद में हम पाते हैं कि यहोवा के हाथ में एक कटोरा है जिसमें का दाखमधु झागवाला है- जो उसके क्रोध का प्रतीक है। अगर हम कहते हैं कि पृथ्वी खम्बों पर टिकी है तो हमें यह भी मानना होगा कि दुष्टों के सींग होते हैं तथा परमेश्वर के हाथ में एक झागवाला मधु का भरा प्याला है जिसे वह एक दिन पृथ्वी के बुरे लोगों पर उण्डेल देगा।

इस प्रकार हम देखते हैं कि यहां अलंकारिक भाषा का प्रयोग किया गया है, इसलिए हम शाब्दिक अर्थ को नहीं ले सकते हैं। अतः जो स्वाभाविक अर्थ हमें यहां मिलता है वह अलंकारिक है, न कि शाब्दिक।

2-वास्तविक अर्थ :-

खण्ड का मूल या वास्तविक अर्थ क्या है? हमें इस बात को समझने हेतु संघर्ष करना है कि उस समय का अर्थ क्या था? जब वह कहा गया और आज के लिए उसका क्या अर्थ है?

वचन के वास्तविक अर्थ को देखें। परमेश्वर ने अपने आपको हम मनुष्यों पर जब प्रकट किया तो एक विशेष ऐतिहासिक पृष्ठिभूमि एवं समय में किया। यद्यपि कि उसका यह आत्म प्रकाशन हर युग, हर देश, तथा हर एक व्यक्ति के लिए है। लेकिन परमेश्वर का वचन सबसे पहले एक विशेष परिस्थिति में, एक विशेष देश के, विशेष लोगों को दिया गया था। परमेश्वर के वचन को ठीक रीति से समझने के लिए हमें इसे उन परिस्थितियों के प्रकाश में समझना होगा जिसमें कि यह सर्वप्रथम दिया गया था। यह मालुम करना है कि जब बाइबल की 66 पुस्तकों के लेखकों ने परमेश्वर के वचन को लिखा तो उस समय उनके मन में कौन सी बात थी या उनका मतलब क्या था, न कि हम क्या सोचते हैं।

इस प्रकार जब हम परमेश्वर के वचन का अर्थ निकालते हैं तो हमें चाहिए कि कुछ विशेष प्रश्नों को पूछें, जैसे लेखक का तात्पर्य क्या था? लेखक क्या कहना चाहता था? उस समय के लोगों ने लेखक की बात को कैसे समझा होगा? जब हम अपने आपको बाइबल के पुस्तकों के वास्तविक लेखकों के मनों और समयों में ले जाते हैं तो हमें निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

क-ऐतिहासिक परिस्थिति :-

खण्ड का अर्थ जानने के लिए ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को जानना आवश्यक है। जब खण्ड लिखा गया उस समय क्या ऐतिहासिक परिस्थिति थी? यदि हम भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों का अर्थ निकाल रहे हैं तो हम उन्हें इस्राएल के इतिहास के प्रकाश में देखें, वैसे ही नये नियम की पुस्तकों को प्रारम्भिक कलीसिया के इतिहास में देखें। यदि हम पौलुस की पत्रियों का अर्थ निकाल रहे हैं तो हम पौलुस की मिशनरी यात्राओं तथा उन परिस्थितियों को देखें जिनमें ये पत्रियां लिखी गयीं।

Creation Autonomous Academy

ख-सांस्कृतिक ढांचा :-

सांस्कृतिक ढांचे को समझना जरुरी है ताकि खण्ड के अर्थ को समझा सकें। संस्कृति को समझने से खण्ड के अर्थ को और गहराई से समझा जा सकता है।

बाइबल की विशेष भौगोलिक और ऐतिहासिक परिस्थितियों तथा लोगों के रहन- सहन को ध्यान में रखते हुए बाइबल का अध्ययन करें। अनुवाद ऐसा करें कि हम उसके वास्तविक अर्थ को अपने समय व स्थिति के लिए सार्थक बना लें। हम इसके संदेश को अपनी भाषा, रहन-सहन, भौगोलिक व ऐतिहासिक परिस्थितियों

के अनुसार अनुवाद कर सकते हैं। लेकिन ध्यान रहे कि हम इसके संदेश के वास्तविक अर्थ में मिलावट न करें।उदाहरण के लिए, प्रभु यीशु के द्वारा अपने शिष्यों के पैर धोना । यह उस समय का रीति-रिवाज था। प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों को एक दूसरे को प्रेम करते हुए नम्रता और सेवा का संदेश दिया। यहां हम प्रभु की आज्ञा को नहीं टाल सकते। लेकिन यह जानते हुए कि हम हर एक का पैर भी नहीं धो सकते हैं क्योंकि वर्तमान युग के शहरों में न तो अब धूल भरी सड़कों पर चप्पल पहनकर चलते हैं और न ही हमारे समय में किसी के पैर धोने का रिवाज है, सिर्फ कहीं-कहीं गावों को छोड़कर। परन्तु हम फिर भी एक दूसरे की पहुनाई व सेवा कर सकते हैं। एक और उदाहरण हम देख सकते हैं जहां पौलुस और पतरस ने अपनी पत्रियों में लोगों को लिखा कि जब वे एक साथ जमा होते हैं तो एक दूसरे का पवित्र चुम्बन देते हुए स्वागत करें। रोमियों 16:16, 2 कुरि० 13:12, 1 थिस्स० 5:26, 1 पत० 5:14 वर्तमान युग में बहुत से स्थानों में इस प्रकार का प्रचलन नहीं है परन्तु हम प्रभु की आज्ञा को नहीं टाल सकते। इसलिए पवित्र-चुम्बन की जगह कम से कम नम्रता व हृदय की सच्चाई के साथ एक दूसरे को अपनी परम्परा में हाथ जोड़कर या हाथ मिलाकर नमस्कार कह सकते हैं

बाइबल की सांस्कृतिक परिस्थितियों को ध्यान में रखकर परमेश्वर के वचन का अध्ययन और उपयोग अपने वर्तमान सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुसार करें और पवित्र आत्मा की अगुवाई में जो कुछ हम वचन से सीखते हैं उसका पालन करें।

ग-भौगोलिक ढांचा :-

खण्ड का अर्थ निकालते समय भौगोलिक ढांचे को जानना भी आवश्यक है। जैसे 'और उसे सामरिया में से होकर जाना पड़ा। (यूहन्ना 4:4) प्रभु यीशु मसीह यहूदिया से चला और उसे गलील पहुंचना था। बीच में सामरिया था, सामरी यहूदियों में कोई सम्बन्ध न था इसलिए यहूदी गलील को जाने वाले लम्बे रास्ते से जाते थे जो कि यरदन के किनारे-किनारे जाता था। प्रभु को आत्माओं की कटनी काटनी थी, समय कम था इसलिए उसने छोटे रास्ते को चुना।

घ-भाषा :-

भाषा को बार-बार पढ़ने से आप उन चीजों को देखने लग जाएंगे जिन्हें आप नहीं जानते हैं। जब हम भावार्थ निकालते हैं पवित्र आत्मा हमें अपना प्रकाशन देगा। लोगों से पूछकर व कुछ पुस्तकों की सहायता से आप पता लगा सकते हैं। अलग-अलग अनुवादों को देख सकते हैं जिससे सहायता मिल सकती है।

समय बीतने पर शब्दों के अर्थ बदलते रहते हैं। वर्तमान युग और बाइबल के युग के 'प्रेम' शब्द का मिलान करने पर जमीन आसमान का अन्तर मिलता है। हिन्दी भाषा में केवल एक ही शब्द अर्थात 'प्रेम' शब्द होता है। जबकि यूनानी भाषा में इसके चार शब्द मिलते हैं और चार भिन्न अर्थ हैं।

Creation Autonomous Academy

ङ-साहित्य के प्रकार :-

बाइबल मात्र 66 भिन्न पुस्तकों में ही नहीं लिखी है बल्कि कई भिन्न शैली में भी है। साहित्य की भिन्न शैली एक ही तरह से शिक्षा नहीं देती।

भिन्नताओं को पहिचानें

चार खण्डों से सुनें कि वे क्या कहते हैं: विचार करें कि आप प्रत्येक के बारे में क्या बता सकते हैं?

उत्पत्ति 5:3 'जब आदम 130 वर्ष का था, तब उसकी समानता में, उसके स्वरूप के अनुसार, उसका एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसने उसका नाम शेत रखा। शेत के जन्म के पश्चात् आदम 800 वर्ष जीवित रहा तथा उसके और भी पुत्र-पुत्रियां हुईं। आदम की कुल आयु 930 वर्ष की हुई, तब वह मर गया।'

नीतिवचन 11:22 'जिस प्रकार सूअर के थूथुन में सोने का नथ, उसी प्रकार वह सुन्दर स्त्री है जो विवेकहीन है।'

यशायाह 9:6-7 'क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न होगा, हमें एक पुत्र दिया जाएगा; और प्रभुता उसके कांधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत युक्ति करनेवाला, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा। उसकी प्रभुता की बढ़ती का और उसकी शान्ति का अन्त न होगा।'

मत्ती 13:31 'स्वर्ग का राज्य राई के दाने के समान है जिसे एक मनुष्य ने लेकर अपने खेत में बो दिया ---'

यह ध्यान दें कि आप जिस पुस्तक से खण्ड का अध्ययन कर रहे हैं वह किस प्रकार का साहित्य है? क्या यह 'पद्य' है या 'गद्य' है? ऐतिहासिक या बुद्धि साहित्य है? व्यवस्था है या भविष्यद्वाणी या कविता है? क्या यह ड्रामा है या पत्री है? या सुसमाचार इत्यादि। इसमें क्या शाब्दिक रुप मिलता है या अलंकारिक?

साहित्य के विभिन्न शैलियां एवं प्रकार निम्नलिखित हैं।-

वर्णनात्मक	व्यवस्था	वंशावली	पत्रियां
सुसमाचार	भविष्यद्वाणी	बुद्धि सम्बन्धी	सन्देश-प्रचार
दृष्टान्त	कविता	प्रकाशन/भविष्यसूचक	

हम खण्ड का अर्थ कैसे निकालें हमारे इस निर्णय से यह प्रभावित होता है कि खण्ड किस प्रकार का साहित्य है।

ये दोनों तरीके परस्पर व्यक्त करते हैं:
बाइबल के जिस साहित्य को आप पढ़ रहें हैं, यदि उस पर ध्यान न दें तो क्या होगा?

2- प्रतिज्ञाओं को स्मरण करें

रोमियो 15:4

2 तीमुथियुस 3:16

Creation Autonomous Academy

1-पुराने नियम का विवरणात्मक साहित्य :-

पुराना नियम का वर्णनात्मक साहित्य

वर्णनात्मक साहित्य बाइबल का सबसे बड़ा भाग है, अर्थात् बाइबल का अधिकांश भाग वर्णनात्मक साहित्य है। पुराने नियम का 40 प्रतिशत विवरणात्मक साहित्य है -उत्पत्ति, निर्गमन, गिनती के भाग, यहोशू, न्यायियों, 1 व 2 शैमुएल, 1 व 2 राजा, 1 व 2 इतिहास। नए नियम के विवरणात्मक साहित्य सुसमाचारों और प्रेरितों के काम में हैं।

परमेश्वर ने बाइबल में अनेक विवरणात्मक साहित्य रखा है और सभी शिक्षा, ताड़ना, सुधार, और धार्मिकता की शिक्षा के लिए उपयोगी हैं। (2 तीमु० 3:16) यीशु ने स्वयं और नये नियम के कई लेखकों ने हमारी शिक्षा के लिए पुराने नियम के चरित्रों का उल्लेख किया है। उदाहरण के लिए इब्रा० 11 पुराने नियम के विश्वास का उदाहरण है।

(1) समस्याएं

वर्णनात्मक साहित्य पर प्रचार करना अकसर आसान क्यों नहीं होता है?

(2) सिद्धान्तः

1) पुराना नियम का वर्णनात्मक साहित्य मात्र कथा कहानियों का संग्रह नहीं है।
2) मुख्य बिन्दु का पता लगाएं।
3) परमेश्वर पर केन्द्रित हों।

विशेषकर उन बिन्दुओं का पता लगाएं जो यीशु की ओर संकेत करते हैं। उदाहरण के लिएः

जे ऐडम्स ने कहा है, *"सभी पवित्रशास्त्रों में से मसीह का प्रचार करेंः वह सम्पूर्ण बाइबल का केन्द्रबिन्दु है। वह उसमें उपस्थित है। जब तक आपने उसे अपने प्रचार में नहीं पाया है, उस समय तक आप प्रचार करने के लिए तैयार नहीं हैं।*

4) आज के लिए उपयोगी बनाएं। कैसे?
5) आश्वस्त होंः क्यों?
6) धैर्य रखें। हमें क्या करने की ज़रूरत है?
7) सावधान रहें!

जिसका वर्णन किया गया है, क्या वह सदा के लिए अच्छा उदाहरण है?

विस्तृत अर्थ के पीछे अधिक न पड़ें

उदाहरण के लिए, शिमशोन (न्यायियो 13-16) देखो इब्रानियो 11:32 और लूत (उत्पत्ति 19) देखो 2 पतरस 2:6-9।

8) पवित्र आत्मा के बारे में अपनी कायलता में स्थिर हों।
9) दीन बनें।

-विवरणात्मक साहित्य स्वाभाविक अपील करते हैं।
-वे लोगों के विषय में मात्र कहानियां नहीं हैं।
Creation Autonomous Academy
-विवरणात्मक साहित्य बड़ी इकाइयों में, खण्डों में लिखे गए हैं। पूरे खण्ड को पढ़ें और सम्पूर्ण इकाई पर प्रचार करें।
-नये नियम के अर्थानुवाद को देखें क्योंकि यह हमारे लिए पवित्र आत्मा की टीका है।
-इतिहास से सीखना।
-यह सत्य है।
-अर्थ स्पष्ट है।
-नायक (हीरो) परमेश्वर है।
-प्रभु यीश मसीह ही मात्र सिद्ध मनुष्य है।
-पुराने नियम का विवरणात्मक साहित्य छुड़ाने वाले की ओर देखता है।
-पुराने नियम का विवरणात्मक साहित्य कई स्तर पर कार्य करता है।

-परमेश्वर और व्यक्ति
-परमेश्वर और वाचा का समुदाय
-परमेश्वर और मनुष्य
-ढांचे के बनावट को देखें।
-विवरणात्मक साहित्य का आनन्द लें।

2-प्रकाशन :-

पुराने नियम और नये नियम के कुछ भाग प्रकाशन शैली में हैं। जैसेः यहेजकेल, दानिय्येल का भाग, जकर्याह, यशायाह का भाग और प्रकाशितवाक्य।

(1) कठिनाइयांः

यह हमारे लिए अत्यन्त कठिन शैली है। क्योंकि यह हमारे दिनों के साहित्य जैसे नहीं है। यह शैली 200 ईसा पूर्व से 200 ई० के यहूदियों के लिए लिखी गयी। यह ऐसा समय है जब खुले आम नहीं लिखा जा सकता था। सताव का काल अथवा गुलामी का काल था। इसलिए प्रकाशनात्मक साहित्य का प्रयोग किया गया है। इसमें गुप्त भाषा, संकेत, गिनती, चित्रात्मक भाषा (जैसे सींग, अजगर, अनेक सिरों) का प्रयोग किया गया है।

(2) खतरेः

इस प्रकार के लेखों का अर्थ समझने के बारे में दो खतरे हैं।-

1 -वे जो इसे व्यक्तिगत रुप से देखते हैं, वे सम्पूर्ण आंकड़ों को प्रमाणित करने का प्रयास करते हैं और अति में चले जाते हैं कि उनका भावार्थ सही है। यह गलत शिक्षाएं (झूंठी शिक्षा) करती हैं।

2 -प्रकाशनात्मक लेखों को नजरअन्दाज (अनदेखा) करना क्योंकि यह अधिक कठिन हैं। इससे हम प्रकाशित वाक्य 1:3 की आशीषों से वंचित हो जाते हैं।

दुःख की बात है कि प्रकाशन साहित्य के बारे में अलग-अलग समझ रखने के कारण मसीहियों के बीच गम्भीर रूप से फूट पड़ गई है, विशेषकर इसके बारे में कि प्रकाशन साहित्य को कैसे समझा जाए'

Creation Autonomous Academy

'हज़ार वर्ष पूर्व वाद', *यह प्रकाशितवाक्य 20 अध्याय में दिये गए शब्दतः 1000 वर्षों की ओर संकेत करता है, जो मसीह के द्वितीय आगमन से प्रारम्भ होगा, और जिसके अन्त में शैतान अन्तिम रूप से पराजित किया जाएगा। इस विचारधारावादियों में भी मसीह के द्वितीय आगमन के समय और इस्राएलियों को नये मन्दिर के साथ पुनः बसने के बारे में अनेक विचारधाराएं हैं।'*

'हज़ार वर्ष बाद वाद', *यह 1000 वर्षों का युग सुसमाचार विस्तार का होगा जो विश्व जागृति और इस्राएल के परिवर्तन में पूरा होगा। तब उसके बाद बुराई का सामना होगा और शैतान को अन्तिम रूप से पराजित किया जाएगा।*

'हज़ार वर्ष में अविश्वास वाद', *यह 1000 वर्षों का युग सांकेतिक है, ठीक वैसे ही जैसे संख्याएं हैं। यह सम्पूर्ण युग सुसमाचार युग है जो अन्तिम रूप से बुराई के अन्त होने पर मसीह द्वारा अनन्तकाल के लिए राज्य करने हेतु आने पर पूरा होगा।*

इन तीनों विचारधाराओं में ध्यान देने योग्य अच्छाइयां और कमज़ोरियां दोनों ही हैं।

यह बुद्धिमानी होगी कि हम दूसरी विचारधाराओं को बिना बुरा-भला कहते हुए या आवश्यक रूप से सहमति देते हुए उनका आदर करें।

(3) मार्गदर्शनः-

इसका अर्थ निकालने के लिए हमारी क्या सहायता कर सकता है? विशेष रुप से प्रकाशित वाक्य का अर्थ निकालने के लिए।

1 -संकेत, गिनती और चित्रात्मक भाषा वास्तविकताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। वास्तविकता को प्रकट करते हैं, परन्तु ये शाब्दिक नहीं हैं। वे वास्तविक बल और सामर्थ्य के प्रतीक हैं। उदाहरण के लिए: प्रकाशितवाक्य 1:16 पढ़ें उसके मुख से दोधारी तेज तलवार निकलती थी। उसका मुख मण्डल दोपहर के सूर्य के सदृश्य दमक रहा था। यह सामर्थ्य और अधिकार का प्रतीक है।

2 -यूहन्ना ने हमें व्याख्यान की कुछ कुंजियां दी हैं जो हमारे आरम्भिक बिन्दु में महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए: 'मनुष्य के पुत्र सदृश्य' (प्रका० 1:13) यह पुनरुत्थित प्रभु है, 'दीपदान' (प्रका० 1:20) कलीसिया का संकेत है, 'अद्भुत अजगर' (प्रका० 12:9) शैतान है।

3 -दर्शनों के पूरे भाग को देखें, सामान्य भावार्थ सामान्यतः स्पष्ट होता है।

4 -प्रकाशितवाक्य को समझने के लिए कहने के लिए बहुत कुछ है, परन्तु एक बार में क्रमबद्ध लेखा देना काफी नहीं है। घटनाओं की श्रृंखला जो बार-बार घटती है उसे एक लम्बी श्रृखला के द्वारा ही वर्णन किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, जब हम अन्तिम न्याय के दृश्य में पहुंचते हैं जिसका वर्णन इन पदों में बार-बार किया गया है।

जैसे, प्रका० 6:12-17, 11:18-19, 14:14-20, 18:21-19:2, 20:11-15।

Creation Autonomous Academy

5 -प्रकाशितवाक्य जिन कलीसियाओं के लिए भेजा गया उनके समझने योग्य और उपयोगी था।

6-प्रकाशितवाक्य को समझा जा सकता है और यह आज के लिए उपयोगी है।

(4) महत्वपूर्ण शिक्षा :-

1 -कलीसिया एक ऐसे सांसारिक प्रणाली के साथ संघर्ष कर रही है जो परमेश्वर से दूर है। इसलिए इस पर आश्चर्य चकित मत होइए। राज्य की सामर्थ्य, मूर्तियों का संसार और गलत धार्मिकता सब कुछ शैतानी ताकतों द्वारा परमेश्वर के लोगों पर आक्रमण को बढ़ाता है।

2 - शैतान हमारे ऊपर हमला करने के लिए दो विशेष हथियारों का उपयोग करता है। पहला झूठे चिन्ह और आश्चर्यकर्म व सताव। दूसरा शिष्यता कीमती है, इसके लिए बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़े गी।

3 - परमेश्वर पूर्ण नियन्त्रण रखता है। सब कुछ न्याय के दिन के लिए है, यहां तक कि शैतानी शक्तियां भी, शैतान और उसकी शैतानी शक्तियों के न्याय का दिन आ रहा है। प्रभु यीशु मसीह पुनः न्यायी की तरह आएगा और वर्तमान व्यवस्था चली जाएगी। वहां उद्धार प्राप्त सृष्टि होगी, एक नया आकाश और नयी पृथ्वी होगी। शैतान दण्डित किया जाएगा। वहां कोई शैतान नहीं होगा और हम सब सर्वदा परमेश्वर के साथ होंगे।

4 - इसलिए विश्वास को थामे रहें और पवित्र जीवन व्यतीत करें। (2 पतरस 3:11-12) आगामी महिमा पर आशा रखें। यह आज के लिए अत्यन्त उपयोगी संदेश है। यदि सताव भारत में या जहां कहीं भी आता है। आश्चर्यचकित न हों। उनकी यह जानने की आवश्यकता थी प्रथम शताब्दी में, हमारी आवश्यकता बीसवीं शताब्दी में यह जानने की है।

प्रकाशितवाक्य का प्रचार करने से घबराएं नहीं। हमारे अपने समय के लिए इससे अत्यन्त महत्वपूर्ण सन्देश और क्या हो सकता है?

3-दृष्टान्त :-

(1) दृष्टान्तों का प्रकृति (स्वभाव)ः प्रकृति काफी विस्तृत होती है।
दृष्टान्त प्रभु यीशु द्वारा लगातार उपयोग में लाया गया। (मत्ती 13:34)

(2) दृष्टान्तों को समझनाः दृष्टान्त यद्यपि सरल तो दिखायी देते हैं, फिर भी उनका समझना प्रायः अधिक कठिन होता है। यहां कुछ बातें दी जा रहीं हैं जिनका पता लगाना चाहिएः

Creation Autonomous Academy

-सांस्कृतिक विशेषताएंः हमारे लिए किस बात की समस्या है?

-व्याख्याओं का पता लगाएं।

-अलंकारिक अर्थ लगाने में सावधानी बरतें।
अधिकांश विवरण कहानी के आकर्षण होते हैं परन्तु उनके कुछ विशेष अर्थ नहीं होते हैं।
सामान्यतः दृष्टान्तों में **एक मुख्य विचार** (महत्वपूर्ण बिन्दु') होता है। इसलिए पता लगाने का प्रयास कीजिए । जिसके विषय में न ही बताया गया है और न ही अनुमान लगाना है।

' इसका अर्थ यह नहीं कि वे हमेशा केवल एक ही बिन्दु की चर्चा करते हैं। उड़ाऊ पुत्र का दृष्टान्त कई बिन्दुओं की चर्चा करता है जैसे, पश्चात्ताप का स्वभाव, पापियों के लिए परमेश्वर का प्रेम और जिन्हें परमेश्वर बचाना चाहता है उनकी स्व-धार्मिकता।

-सन्दर्भ को देखें: हमेंशा एक दृष्टान्त को समझने के लिए सुराग संदर्भ में दिया होता है। प्रभु यीशु प्रश्न के द्वारा या हालात के द्वारा सम्बोधित कर रहे होते हैं।

- निकटता से देखें: काफी कुछ नजदीक से देखें- कुछ प्रचलित विचार जो प्रसिद्ध दृष्टान्तों के प्रति हैं वे वास्तव में गलत हैं। उदाहरण के लिए: दयालू सामरी का दृष्टान्त जिसमें यात्री का अनुवाद कुछ लोग आदम करते हैं।

(3) दृष्टान्तों के प्रति प्रत्योत्तर :-

-चुनौतीपूर्ण कथन: दृष्टान्तों को कहा गया।

-कठोरता: दृष्टान्तों के बारे में कुछ खतरा है। ऐसा क्यों?

-परेशान करने वाली : दृष्टान्तों की सामर्थ्य बिना तोड़ मरोड़ में पायी जाती है।
- दृष्टान्त में सीमित कार्य होते है।
-सामान्यतः एक मुख्य बिन्दु होता है।
-दृष्टान्त में वस्तुएं कहां दूसरी वस्तुओं का प्रतिनिधित्व करती हैं।
-वास्तविक जीवन के संदर्भ में देखें (क्या और कैसे यह बताता है।)
-दृष्टान्त में आश्चर्यजनक क्या है?
-दृष्टान्त के प्रति मूल श्रोताओं ने कैसे प्रतिउत्तर दिया?

3-सामान्य अर्थ :-

जब भी परमेश्वर के वचन का अर्थ निकालते हैं तो हमें पूरी बाइबल की सामन्जस्यता को ध्यान में रखना चाहिए। एक खण्ड के दो प्रसंग होते हैं, अर्थात ऐतिहासिक और पवित्र शास्त्र के अन्दर। ऐतिहासिक संदर्भ और प्रसंग से हमारा तात्पर्य उस भौगोलिक और ऐतिहासिक स्थिति से है जिसमें कि एक विशेष खण्ड लिखा गया। पवित्र शास्त्र के प्रसंग से तात्पर्य यह है कि खण्ड विशेष बाइबल में किस स्थान पर पाया जाता है। पूरी बाइबल को एक साथ ध्यान में रखें और जब तक इसके किसी अंश को पढ़ते व उसका अनुवाद करते हैं तो पूरी बाइबल की शिक्षा को ध्यान में रखें। ऐसा करने से हम पाएंगे कि बाइबल के अंश की व्याख्या हमें दूसरे अंश में मिलती है, अर्थात बाइबल अपने वचन का अनुवाद या व्याख्यान स्वयं ही करती है।

खण्ड का ढांचा :-

-आश्चर्यजनक चीजों को देखें।

-शब्द/भाग के अन्तर्सम्बन्धों को देखें।

Creation Autonomous Academy

बाइबल
पुराना नियम/नया नियम
पुस्तक
अध्याय
खण्ड
पद

सब कुछ एक साथ रखना :-

विस्तृत विचारः इसका अर्थ क्या है?
मुख्य पद अथवा भाग
यह क्या कहता है? इसके कहने का क्या अर्थ है?

घ-सन्दर्भ का अनुशासन

Discipline of the context

यदि हम सन्दर्भ के बाहर वचन को लेते हैं तो हम जो अर्थ बताना चाहते हैं वह अर्थ निकालेंगे। अर्थात अपना अर्थ लगाएंगे। वचन का अर्थ संदर्भ के साथ निकलता है। अतः संदर्भ अपना अर्थ लिखवाता है।

शैतान क्या करता है? मत्ती 4:6 में भजन 91:11-12 का प्रयोग करता है। लेकिन वह संदर्भ के बाहर इसे प्रयोग करता है। भजन परमेश्वर की परीक्षा करने का निमंत्रण नहीं है। संदर्भ के बाहर वचन का प्रयोग न करें।

वचन को हम कैसे प्रयोग कर सकते हैं? शैतान ने जो कार्य किया, वह संदर्भ का सही उपयोग नहीं किया। यहोवा जो शरणस्थान है, परमप्रधान को अपना निवास स्थान बनाएं रखें। शैतान इस बात को नहीं बताना चाहता है। वह शुरु और आखिरी के बात को काट देता है और बीच की बात बताता है। यह शैतान का तरीका है।

1-सामान्य संदर्भ :-

1) सामंजस्यता :-

वचन का एक मात्र लेखक है पवित्र आत्मा-इसलिए इसमें कोई विरोधाभास नहीं हैं। एक खण्ड दूसरे खण्ड के विरोध में अर्थ नहीं देता है।

हमारी समझ की कमी हो सकती है लेकिन वे एक दूसरे के विरोध में नहीं हैं। क्रास रिफरेन्स बहुत उपयोगी हैं। लेकिन यह आवश्यक है कि हम खण्ड को पूरी बाइबल के संदर्भ में देखें।

Creation Autonomous Academy

एकता-हमें एक पद को लेकर उसे दूसरे पदों से मिलान करके अर्थ बताना है। एक पद की तुलना दूसरे से कर सकते हैं, इससे गलत प्रचार करने से बच जाएंगे। यह देखें कि हम जो अर्थ निकाल रहे हैं वह और पदों के अर्थ का विरोध तो नहीं कर रहा है।

2) पूर्व चरित्रित अध्यात्मविज्ञान :-

यदि बाइबल का एक ही लेखक है और इसमें एकता है, तब इसमें एक ही विषय है।

पूर्व सैद्धान्तिक नियम- बाइबल के विचारों में क्रमबद्ध प्रगति पायी जाती है। अन्त के पद, आरम्भ के पदों को देखने पर ही समझ में आते हैं।

3) बाइबल का स्वतः अनुवाद :-

एक खण्ड विशेष का अर्थ क्या है बाइबल हमें इसकी स्पष्ट व्याख्या देती है। कभी-कभी वह स्वयं खण्ड में मिलता हैः जैसे दृष्टान्तों में (लूका 8:1-15) कभी-कभी बताता है कि खण्ड का अर्थ वचन में कहां पर है। अतः हम नूह को नहीं समझ सकते (उत्पत्ति 6-9 अध्याय) बिना 1 पत० 3:18-22 के, और हम अब्राहम को नहीं समझ सकते (उत्पत्ति 12 अध्याय) बिना इब्रा० 11:8 के। उनका अर्थ क्या है हम अनुमान नहीं लगा सकते, क्योंकि यदि हम सामान्य संदर्भ को देखें तो बाइबल स्वयं अपना अर्थ बताती है।

बाइबल स्वयं अपना अर्थ प्रकट करती है। पुराने नियम को समझाने के लिए हमें नये नियम में देखना चाहिए कि क्या लिखा है।

2-उद्धार के इतिहास का संदर्भ :-

अ-एक विषय :-

सम्पूर्ण बाइबल में एक विषय है- एक महान संदेश जो उत्पत्ति से प्रकाशित वाक्य तक दौड़ रहा है। यह विषय है परमेश्वर का राज्य-लोगों के उद्धार की परमेश्वर की योजना। यह विषय जारी है बाइबल के प्रत्येक भाग में यह महान विषय पाया जाता है।

यह सृष्टि से आरम्भ करती है जहां आदम और हव्वा परमेश्वर के साथ सम्बन्ध (संगति) में हैं, राजा और उसके नियम के अधीन हैं। आदम और हव्वा ने अनाज्ञाकारिता की वे परमेश्वर के विरुद्ध हो गए।-इसलिए परमेश्वर ने एक व्यक्ति अब्राहम को बुलाया और प्रतिज्ञा दी परमेश्वर के अधीन रहने वाली एक जाति का पिता होने के लिए। और सभी जातियां उसके द्वारा उद्धार पाएंगी। इसलिए हम पाते हैं कि इस्राएली लोग सीख रहे हैं, यह क्या अर्थ रखता है कि वहां परमेश्वर राजा के समान है, वह राजतंत्र के ढांचे को सुलेमान में एकत्र कर रहा है, लेकिन तभी अनाज्ञाकारिता आती है। यह सब कुछ उद्धारकर्ता के आने की तैयारी है, परमेश्वर के लोग और प्रत्येक चीज एक व्यक्ति में प्रतिबिम्बित हो रही है प्रभु यीशु ख्रीष्ट में। ये सभी बातें प्रभु यीशु की ओर इशारा कर रही हैं।

यह महत्वपूर्ण है क्योंकि यह प्रभावित करती है कि हम कैसे खण्डों को समझते हैं।

ब-दो नियम एक पुस्तक :-

दो नियम-पुराना और नया नियम-एक पुस्तक। प्रेरितों० 13:14-41 हमें सम्पूर्ण उद्धार का इतिहास देता है। यह दिखाता है कि नया नियम और पुराना नियम में अलगाव नहीं है। सम्पूर्ण बाइबल प्रभु यीशु के बारे में बताती है।

Creation Autonomous Academy

स-प्रभु यीशु की ओर संकेत :-

सम्पूर्ण बाइबल प्रभु यीशु की ओर संकेत करती है। सम्पूर्ण बाइबल प्रभु यीशु में केन्द्रित है। सम्पूर्ण बाइबल प्रभु यीशु को प्रतिबिम्बित करती है। उसकी छाया को दिखाती है। यूहन्ना 5:39-40 हमें बताता है पवित्र शास्त्र प्रभु यीशु की साक्षी देता है। इसमें पुराना नियम भी सम्मिलित है। लूका 24:25-27 याद दिलाता है यीशु सब कुछ की व्याख्या करता है जो पवित्र शास्त्र में उसके विषय में कहा गया था। प्रेरितों० 8:26-40 में इथियोपियन खोजे श्रोता के लिए यशायाह की पुस्तक में प्रभु यीशु के विषय में सुसमाचार है। और प्रेरितों के काम के कई संदेशों के लिए यह सत्य है।

प्रत्येक खण्ड के लिए हम पूछें: कैसे यह खण्ड हमारी सहायता करता है यह समझने में कि परमेश्वर ने प्रभु यीशु में क्या किया?

सभी प्रश्नों का उत्तर बाइबल में नहीं है, परन्तु यह प्रकटीकरण है कि परमेश्वर कैसे लोगों को उद्धार देता है।

बाइबल में तीन स्तर है-1 सबसे ऊंचा स्तर-उद्धार 2 मध्य स्तर-वाचा के ऊपर केन्द्रित होता है और 3 निम्न स्तर-में व्यक्तिगत कहानियां, व्यक्तिगत घटनाएं हैं। ये तीनों स्तर आपस में पारस्परिक सम्बन्ध कैसे रखते हैं।

जब आप व्यक्तिगत कहानी पढ़ते हैं तो वह एक बड़ी कहानी का अंश है, जिसका अपना स्थान उद्धार के सम्बन्ध में है। उत्पत्ति 3:15 में सबसे पहले उद्धारकर्ता की सेवा के बारे में बताया गया है। आप उत्पत्ति से प्रभु यीशु के बारे में प्रचार कर सकते हैं। जो पुराने नियम के अगुवे थे उन्होंने महान आने वाले अगुवे की तरफ संकेत किया। अर्थात वे प्रभु यीशु की तरफ संकेत करते थे। पूरी बाइबल उद्धार की योजना को प्रकट करती है। प्रभु यीशु का प्रचार पूरी बाइबल से करें। प्रभु यीशु और उद्धार पूरी बाइबल का केन्द्र है।

उद्धार सम्बन्धी इतिहास

सृष्टि-आदम -इस्राएल- Remnent-------- यीशु----------प्रेरित-कलीसिया Humanity -नयी सृष्टि

3-विशेष संदर्भ :-

प्रत्येक खण्ड एक बहुत विशेष संदर्भ में आता है।

अ-एक पुस्तक में :-

सम्पूर्ण उद्धार के इतिहास के प्रकाशन सहित एक भिन्न उद्देश्य के साथ बाइबल 66 पुस्तकों से बनी है। सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र के विवरण व उद्देश्य को समझने के लिए सम्पूर्ण पुस्तक को पढ़ने की आवश्कता है। हम पूछें,'यह पुस्तक यहां क्यों है?,' और कुछ प्रमुख विषयों को समझने का प्रयास करें जो इस पुस्तक में हैं।

प्ररितों० 1:8 प्रेरितों के काम के विषयों और पवित्र शास्त्र की कुंजी है। हमारी आवश्यकता है प्रेरितों के काम पर प्रचार करना जानना।

इफि० 1:9-10 पुस्तक के मुख्य विषय को समझने की कुंजी है, और इफिसियों के भागों को समझने के लिए हमें यह जानने की आवश्यकता है।

पुस्तक में शब्दों के उपयोग को समझने में सहायक है। लेकिन हमें यह भी जानने की आवश्यकता है कि कैसे एक विशेष खण्ड सम्पूर्ण पुस्तक के संदर्भ में फिट होता (बैठता) है।

Creation Autonomous Academy

ब-एक खण्ड सहित :-

1-सम्पूर्ण खण्ड :-

हमारी आवश्यकता है यह निश्चित करना कि हम सम्पूर्ण खण्ड पर प्रचार करें, खण्ड के एक भाग पर नहीं। इसका अर्थ है हम यह निर्णय करें कि सम्पूर्ण खण्ड क्या है? बाइबल के अन्दर लिखित खण्ड विभाजन में सावधानी वरतें, क्योंकि वे सब खण्ड विभाजन सही नहीं हैं। लूका 15 में, जब हम उड़ाऊ पुत्र के दृष्टान्त पर प्रचार करते हैं, तो आवश्यक है कि दूसरे पुत्र पर भी प्रचार करें।

पवित्र शास्त्र का खण्ड सही निर्णय लेने में हमारी सहायता कर सकता है। हम सुनिश्चित करें कि खण्ड के सम्पूर्ण विचार के प्रति विश्वासयोग्य हों।

2-तात्कालिक संदर्भ :-

किसी खण्ड के साथ यह क्या कह रहा है उस सिद्धान्त को समझने का प्रयास करें। यह आश्चर्यों को देखने के लिए अथवा खण्ड का अर्थ निकालने के लिए उन चीजों को जोड़ने में सहायक है।

संदर्भ केन्द्रीय है।

जब हम किसी खण्ड का प्रचार करें तो पूरे खण्ड का प्रचार करें, इसलिए खण्ड के संदर्भ-प्रसंग को बार-बार देखना होगा। पूरे-पूरे खण्ड का प्रचार करें, प्रत्येक पद को उसके संदर्भ में पढ़ें। प्रचार की तैयारी में प्रसंग का बहुत बड़ा स्थान है। विशेष पुस्तक को उसके संदर्भ में प्रचार करें। जब आप किसी खण्ड से प्रचार करते हैं तो उस विशेष पुस्तक का जो संदर्भ है उसको ध्यान में रखकर प्रचार करें। हमें विस्तार पूर्वक संदर्भ को देखना है और खण्ड के आस-पास के संदर्भों पर भी ध्यान देना चाहिए।

-मरकुस 8 अध्याय

-प्रथम भाग 1 से 8 अध्याय, द्वितीय भाग 9 से 16 अध्याय

प्रथम भाग 1 से 8 अध्याय		द्वितीय भाग 9 से 16 अध्याय
गलीली सेवा		क्रूस की यात्रा
मसीह कौन है?		कैसे वह बचाएगा?
आश्चर्यकर्म		शिक्षाएं
बपतिस्मा	रुपान्तरण	क्रूसीकरण, पुनरुत्थान

4-बड़ा संदर्भः-

1-स्वाभाविक अर्थः

ज्यादा चालाक बनने की कोशिश ना करें। केवल पढ़िये और पढ़ते रहिये और पूछिये कि खण्ड क्या कहता है? लेकिन यह खण्ड वास्तविक में किसके बारे में है? बड़ा विचार या तस्वीर क्या है? इस प्रश्न का उत्तर ढूँढ़िए फिर आगे बढिए।

2-शब्दों के अर्थ :

Creation Autonomous Academy

किसी एक शब्द के बारे में सावधान रहिये। शब्द का मूल भाषा में क्या अर्थ है इसका पता करें।

3-खण्ड का ढाँचा :

खण्ड में आश्चर्य को देखिये। खण्ड में क्या है जिसकी आप आशा नहीं करते हैं?
यह खण्ड ऐसा क्यों कहता है?

4-संपूर्ण खण्डः

इस बात का निश्चय करें कि आप संपूर्ण खण्ड का ना कि आधे खण्ड का प्रचार कर रहे हैं? संपूर्ण खण्ड की चाभी क्या हैः समय/अवसर/सारांश । निश्चय करें कि आप संपूर्ण खण्ड के विचार के प्रति विश्वासयोग्य हैं।

5- **सबको साथ में मिलाकर रखनाः**

बड़ा विचार या तस्वीर- इसका क्या अर्थ है? अक्सर एक मुख्य पद या भाग होता है।

5) धर्मवैज्ञानिक ढॉचाः-

क) एकताः

सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र में एकता पायी जाती है।

ख) पवित्रशास्त्र में पूर्वचरित धर्मविज्ञानः

1) प्रारंभिक वचन बाद में पूर्ण होता है। अतः बाद वाला वचन पहले वाले के लिये हवाले के रूप में समझा जा सकता है।

2) बाद का वचन पहले वाले वचन को समझाता है, पहले वाले वचन का पूर्ण अर्थ बाद वाले हवाले से समझा जा सकता है।

पवित्रशास्त्र अपना खुद अर्थ बताता हैः

बाइबल अक्सर स्पष्ट व्याख्या देकर हमें समझाती है कि खण्ड का क्या अर्थ है?

खण्ड क्या कहता है? खण्ड का क्या अर्थ है?

जब तक से हम इस अभ्यास को नहीं कर लेते हैं हम प्रचार नहीं कर सकते हैं। इसके बाद ही हम परमेश्वर के वचन को अपने जीवन में लागू करना प्रारम्भ कर सकते हैं।

6-विस्तृत संदर्भः-

परिचयः

एक मूल बात को याद रखिएः

परमेश्वर हमसे क्या कह रहा है इस बात को समझने के लिये अब हमें सबसे पहले यह समझना है कि मानवीय लेखकों ने अपने समय के लोगों से उस समय क्या कहा था।

1) ऐतिहासिक संदर्भः

क) विस्तृत ऐतिहासिक संदर्भः

Creation Autonomous Academy

अब्राम
मूसा
दाऊद
इस्राएली राज्य का विभाजन
असीरिया द्वारा उत्तरी राज्य को गुलामी में ले जाना
बाबुल द्वारा दक्षिणी राज्य को गुलामी में ले जाना
बाबुल की गुलामी में से वापसी
यीशु मसीह का जन्म
कलीसिया का विस्तार

ख) तत्कालीन ऐतिहासिक संदर्भः

प्रश्न जिन्हें पूछना हैः
-इसे किसने लिखा?
-किसको लिखा?
-यह कब लिखा गया था?
-क्या घटनाएं घटीं?
उदाहरणः
फिली० 1:12-14, 1 पतरस 1:1, 2 तीमु० 4:6 , लूका 1:3-4 , यूहन्ना 20:31 , 1 कुरि० 7:1

2) संस्कृतिक संदर्भ

क) बाइबल की संस्कृति को समझना, और खण्ड के लिए इसका महत्व।

मत्ती 25:1 , मत्ती 20:9 , मत्ती 18: 24 , 28 , मरकुस 3:6

ख) लागूकरण

यूहन्ना 13:14 धूल से सना हुआ पैर इसलिए पानी से धोने की जरुरत-एक नीचा काम-दीनतापूर्ण सेवा।

3) भौगोलिक संदर्भ

कभी-कभी भौगोलिक स्थिति का प्रभाव हमें यह समझने में सहायता करता है कि क्या कहा गया है।
व्यवस्थाविवरण 1:2, योना 1:1-3 , दानि० 1:2, (उत्पत्ति 11:2) यूहन्ना 4:4

4) उद्धार के इतिहास का संदर्भः

उद्धार के इतिहास की एक समयरेखा है।
(इसका विस्तृत वर्णन पृष्ठ 63 पर किया गया है।)

5) साहित्यिक संदर्भः

संदर्भ समझ प्रदान करता है। शब्द केवल संदर्भ में एक अर्थ रखते हैं। इसके लिए संदर्भ महत्वपूर्ण है। उदाहरण मत्ती 4:6- भजन 91:11-12 संदर्भ का सही उपयोग आवश्यक है।

Creation Autonomous Academy

1) **साहित्य के प्रकार** - बाइबल में कई विभिन्न प्रकार के साहित्य पाये जाते हैं जैसेः
वर्णनात्मक व्यवस्था, नबूवत,ज्ञान साहित्य , कविता , प्रकाशन साहित्य, सुसमाचार, दृष्टान्त, वंशावलियॉ ,
पत्रियॉ

2) **बाइबल में साहित्यिक विभाजनः**

6 भागः
व्यवस्था
बड़े नबी
छोटे नबी

लेख
सुसमाचार और प्रेरितों के काम,
पत्रियॉ

3) बाइबल की संपूर्ण कहानी - बाइबल का धर्मविज्ञानः

प्रगतिशील प्रकाशन
उदाहरणः भोजन से सम्बन्धित व्यवस्था
लैब्यवस्था 11:7 , मरकुस 7:19
उदाहरणः बलिदान पद्धति - लैब्यवस्था 4:13, इब्रानियों 7:27, उदाहरणः यूहन्ना 16:12-13

बाइबल के धर्मविज्ञान के दो प्रमुख मूल विषयः

1) वाचाः नूह-अब्राम-सीनै पर्वत-दाऊद- प्रभु यीशु- नयी वाचा
प्रकाशितवाक्य 21:3

2) राज्य : अदन-देश- सुसमाचार-परिपूर्णताः

4) पुराने नियम के वर्णनात्मक साहित्यः

पुराने नियम के वर्णनात्मक साहित्य की विशेषताः
1) दृश्यः 2 शमुएल 11
2)चरित्र
3) संवाद
4) संवादक
5)ढॉचा
2 शमुएल 11-12

पुराने नियम के वर्णनात्मक साहित्य का विश्लेषण कैसे करें?

6) संपूर्ण पुस्तक

Creation Autonomous Academy

पुस्तक का मूल विषय क्या है?
उदाहरणः यहेजकेल
यहेजकेल 12:15, यहेजकेल 36:22-23
मूल विषय
उदाहरण गलातियों की पत्री
मूल विषय
गलातियों 2:16, गलातियों 5:21

बाइबल लेख के प्रकार को समझना

नबूवत
प्रकृति

कार्य
विषय सामग्री
लेखन शैली
अनुवाद की कुंजी
ऐतिहासिक पृष्ठिभूमि
धर्मवैज्ञानिक पृष्ठिभूमि
समयकाल

मसीह और उसके क्रूस के प्रकाश में देखनाः

च-सन्देश का लागूकरण
Aplication of the sermon

1- लागूकरण की प्राथमिकता :-

बाइबल लिखित है इसलिए हम उसे बदल नहीं सकते। यह रुचिकर खण्डों का संग्रह नहीं है। लेकिन एक पुस्तक एक उद्देश्य के साथ है। यूहन्ना 20:30-31, यशायाह 55:1-11

यह उद्देश्य पूर्ण वचन है। पवित्रशास्त्र का प्रत्येक खण्ड एक उद्देश्य के साथ लिखा गया है।

इसलिए यदि हम परमेश्वर के वचन को अपने प्रचार के लिए संचारित करते हैं तब आवश्यक है कि हम बाइबल के वचन को अपने जीवन और कलीसिया के जीवन में लागू करें।

यशायाह 55:1-11 हमें बताता है कि परमेश्वर अपने वचन के द्वारा अपने उद्देश्य को पूरा करता है।

परमेश्वर के वचन में श्रोताओं के जीवन के लिए उद्देश्य है। यह सत्य है कि परमेश्वर का वचन कुछ के लिए उद्धार लाता है और कुछ के लिए न्याय। (यूहन्ना 12:46-47) लेकिन परमेश्वर का वचन एक उद्देश्य के साथ है।

अतः यदि हम परमेश्वर के वचन का प्रचार करते हैं, तो हम एक उद्देश्य के साथ प्रचार करें।

पतरस का प्रथम संदेश प्रेरितों० 2:12 के प्रश्न द्वारा 'इसका क्या अर्थ है?' से आता है। इसलिए पुराने नियम की शिक्षा के प्रकाश में परमेश्वर के आत्मा के विषय में इस अर्थ की व्याख्या करने में यह एक उद्देश्य रखता है। तब पतरस इस प्रश्न के द्वारा चुनौती पाता है पद प्रेरितों० 2:37 में 'हम क्या करें---?' और तब पतरस का संदेश लागूकरण की तरफ मुड़ता है कि इसमें श्रोताओं के लिए क्या शिक्षा है।

यहूदा 3 में, यहूदा व्याख्या करता है कि उसका मूल उद्देश्य उद्धार के विषय में लिखने और उसे पाठकों को बांटने के लिए साधारण एवं भिन्न था।

Creation Autonomous Academy

हे प्रियों, जब मैं उद्धार के विषय में तुम्हें लिखने का हर सम्भव प्रयत्न कर रहा था जिसमें हम सब सहभागी हैं, तो मैंने यह लिखना और अनुरोध करना आवश्यक समझा कि तुम उस विश्वास के लिए यत्न पूर्वक संघर्ष करते रहो जो पवित्र लोगों को एक ही बार सदा के लिए सौंपा गया था।

रोमियों 15:4 जहां पौलुस हमें याद दिलाता है कि सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र हमारे लिए लिखा गया है।:

'पूर्वकाल में जो कुछ लिखा गया था वह हमारी ही शिक्षा के लिए लिखा गया था जिससे धैर्य एवं पवित्र शास्त्र के प्रोत्साहन द्वारा हम आशा रखें।

अतः यदि हम परमेश्वर के वचन का विश्वासयोग्य प्रचारक बनना चाहते हैं तो यह आवश्यक है कि हम वचन के सत्य को अपने जीवन में व कलीसिया के जीवन में लागू करें।

लेकिन तब हमारी आवश्यकता है कि एक स्टेज को लें, क्योंकि पवित्र शास्त्र का प्रत्येक खण्ड एक उद्देश्य के साथ लिखा गया है। और एक प्रचारक के रुप में हमारा कार्य है वर्तमान समय के श्रोताओं के जीवन में प्रचार द्वारा उस उद्देश्य को लागू करना।

सभी प्रचार का कार्य श्रोताओं में एक बदलाव लाना है। हम प्रश्न पूछेंः क्यों हम संदेश का प्रचार कर रहे हैं? परमेश्वर के वचन के इस भाग के प्रचार के परिणाम के रुप में अपने श्रोताओं में हम क्या बदलाव देखना चाहते हैं जिसके लिए हम आशा और प्रार्थना करें?

पवित्र आत्मा पवित्र शास्त्र का लेखक है और वही उद्देश्य को लाएगा। लेकिन हम पवित्र आत्मा के साथ सहयोग करें। पवित्र आत्मा ने इस खण्ड विशेष को जिस उद्देश्य के साथ बाइबल में रखा है, उस उद्देश्य को समझकर, अपने भाग को विश्वासयोग्यता एवं सावधानीपूर्वक करें।

बाइबल एक उद्देश्य की पुस्तक है। पवित्र शास्त्र का प्रत्येक खण्ड एक उद्देश्य के लिए लिखा गया है। संदेश का प्रचार एक उद्देश्य के साथ करें।

प्रचारक का कर्तव्य है कि प्रचार के उद्देश्य को समझ ले, और परमेश्वर जिस उद्देश्य को पूरा करना चाहता है उसे ध्यान में रखे, कि पूरा हो रहा है या नहीं। प्रचार का अन्त लोगों में बदलाव है। प्रचार का उद्देश्य आज की जरुरत को पूरा करना है। पवित्र आत्मा का उद्देश्य पूरा करना है।

2- लागूकरण के सिद्धान्त :-

1) लागूकरण से पहले हमें यह जानने की ज़रूरत है कि अमुक खण्ड का क्या अर्थ है।-

संदेश का उद्देश्य खण्ड के उद्देश्य के साथ हो। खण्ड जो भी कथन करेगा उसका उद्देश्य वास्तव में खण्ड में है। कभी-कभी खण्ड विशेष का उद्देश्य पूरी पुस्तक का उद्देश्य होता है। यह पुस्तक के उद्देश्य अथवा सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र के उद्देश्य का विरोध नहीं करेगा। लेकिन एक विशेष क्षेत्र के लिए सम्बन्ध स्थापित करेगा

2) हमें जानने की ज़रूरत है कि निरन्तरता और अनिरन्तरता दोनों ही हैं।-

जीवन की परिस्थिति, भाषा, संस्कृति, स्थान, दिन प्रतिदिन की जरुरतों में अन्तर है। इसलिए बाइबल को सही ढंग से लागू करने के लिए खण्ड के संसार और वर्तमान कलीसिया के जीवन को समझने की आवश्यकता होगी।

यहां निरन्तरता भी है। वैसे ही पवित्र, विश्वासयोग्य और दयालू परमेश्वर है। वही पापी स्वभाव है। इसलिए यदि हम सही तरीके से बाइबल को लागू करना चाहते हैं तो परमेश्वर के चरित्र और मनुष्य के पापी स्वभाव को जानना होगा।

Creation Autonomous Academy

बाइबल को सही तरीके से लागू करने के लिए हम दो संसारों के बीच पुल बनाते हैंः बाइबल के प्रथम श्रोताओं और हमारे श्रोताओं के संसार के बीच।

3) प्रचारक का कार्य खण्ड को आज के लिए उपयुक्त बताना है।-

2 तीमु० 3:16-4:2

सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और शिक्षा, ताड़ना, सुधार और धार्मिकता की शिक्षा के लिए उपयोगी है, जिससे कि परमेश्वर का भक्त प्रत्येक भले कार्य के लिए कुशल और तत्पर हो जाए।

सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र उपयोगी है। हमारा कार्य यह प्रदर्शित करना है कि यह वर्तमान परिस्थिति के लिए उपयोगी है।

वचन का प्रचार कर, समय और असमय तैयार रह, बड़े धैर्य से शिक्षा देते हुए ताड़ना दे, डांट और समझा।

परमेश्वर के वचन को लागू करते समय सावधानी वरतें, हमारा लागूकरणः हमारे श्रोताओं की परिस्थिति के लिए उपयोगी है।

4) कुछ चेतावनियां । -

प्रत्येक खण्ड से समान लागूकरण बताने का खतरा है ।-

जब हम खण्ड से मसीही प्रेम, प्रार्थना करने की अधिक आवश्यकता, अथवा बाइबल को अधिक पढ़ने की आवश्यकता पर प्रचार करते हैं। ये सभी अच्छे और सही हैं, लेकिन सप्ताह दर सप्ताह विश्वासियों के लिए एक सर्वोच्चता हो।

प्रत्येक खण्ड से एक ही जैसा लागूकरण निकालने का खतरा है।

किसी एक व्यक्ति को निशाना बनाने के लिए प्रचार का प्रयोग करने का खतरा है ।-

अपने समूह को जानने की आवश्यकता है। व्यक्तिगत चुनौतियों का हल आमने -सामने बैठकर किया जाना चाहिए। इसका अर्थ यह नहीं है कि व्यक्ति की उपयोगी समस्याओं को जिन्हें हम जानते हैं हल न करें। लेकिन सब कुछ प्रचार में सावधानी से करें। व्यक्ति को हम नहीं बल्कि पवित्र आत्मा कायल करेगा।

किसी संदेश को इसलिए देना कि हमारा लक्ष्य एक व्यक्ति बन जाए। यदि हम किसी की कमजोरी जानते हैं तो उसका बयान पुलपिट से न करें बल्कि अलग से उसके साथ बैठकर बातें करें। हमारे प्रचार का लक्ष्य एक व्यक्ति नहीं बल्कि पूरा समूह होना चाहिए।

विवरण बताने और लागूकरण के बीच अन्तर स्पष्ट न करने का खतरा है ।-

एक खतरा है वर्णनात्मक साहित्य और व्यवस्था से सम्बंधित साहित्य के बीच में अन्तर न प्रकट करना।

अधिक सादगी का खतरा है।-

'प्रत्येक समस्या का यहां एक साधारण उत्तर है-और यह गलत है।' अच्छा लागूकरण प्रार्थना और विचार की मांग करता है। यह कठिन अर्थात परिश्रम का कार्य है।

उक्त खतरों से सावधान रहें। प्रत्येक खण्ड का लागूकरण भिन्न-भिन्न है। इसलिए खण्ड के अनुसार लागूकरण निकालें। स्वयं के बने रहें। प्रचारक का उद्देश्य प्रासंगिकता को समझना जरुरी है। बयान और निदान में अन्तर होना चाहिए।

3- लागूकरण की प्रक्रिया :-

अपने संदेश में लागूकरण हम कैसे रखते हैं?

1-खण्ड को बाइबल में सुनें:

हमें अवश्य पूछना है कि परमेश्वर ने यह खण्ड यहां पर क्यों रखा है? मूल श्रोताओं से वह क्या चाहता था कि वह करें? आज का खण्ड से लागूकरण हमारे लिये वही होना चाहिए जो प्रारंभिक मूल लोगों के लिए लागूकरण उनकी परिस्थिति में था। खण्ड के लागूकरण को एक वाक्य में लिखिए जो मूल लोगों के लिए

लागूकरण था। ऐसा करने से आपका लागूकरण सही दिशा में होगा। मात्र विवरण भिन्न होगा परन्तु सिद्धान्त एक ही होगा। **1 कुरि० 9:7-11, व्यवस्थाविवरण 25:4**

2-श्रोताओं और उनकी स्थिति को देखें:

किस प्रकार से आपके श्रोताओं की स्थिति मूल श्रोताओं की स्थिति के समान है? आज के विशेष श्रोताओं की स्थिति में किस प्रकार से खण्ड का उद्देश्य लागू हो सकता है?

क) ना बदलनेवाली वास्तविकतायें ख) बदलती हुई परिस्थितियॉ

3-निश्चित कीजिये कि श्रोताओं से आप किस प्रकार के प्रतिउत्तर की आशा करते हैं ?

अपने आप से यह पूछिये कि मैं क्या प्रार्थना करूं कि लोग मेरे संदेश को सुनकर प्रतिउत्तर दें। जिस खण्ड के उद्देश्य वाक्य को हमने लिख रखा है उसे अब लागूकरण वाक्य में इस प्रकार से तब्दील करना है ताकि हम अपने श्रोताओं से प्रतिउत्तर प्राप्त कर सकें।

कई बार प्रतिउत्तर उनके **दिमाग में होगा।** और वे अब फला विषय को और बेहतर ढंग से समझ पायेंगे।

कई बार प्रतिउत्तर उनके **व्यवहार में होगा। और अब वे चीजों को भिन्न प्रकार से करेंगे।**

संदेश के अन्त में हमें अवश्य इन चार सवालों का जवाब देना चाहिए:

- अब परमेश्वर मुझसे क्या चाहता है? मुझे क्या करना चाहिए।
- प्रभु मुझसे यह कहां चाहता है? मेरे जीवन के किस क्षेत्र में ?
- जो वह मुझसे चाहता है उसे मैं क्यों करूं? क्या प्रेरणा है?
- जो प्रभु चाहता है उसे मैं कैसे करूं? कौन से व्यावहारिक कदम मुझे अवश्य उठाना चाहिए?

और यदि हमने अपना काम अच्छे से कर लिया है तो हमारे श्रोता प्रत्येक उपरोक्त सवाल का जवाब अपने जीवन में दे पायेंगे। हो सकता है कि प्रत्येक श्रोता का प्रतिउत्तर एक दूसरे से भिन्न हो।

4-उस उद्देश्य को पूरा करने के लिये अपने संदेश की रूपरेखा बनाइये?

पूरा संदेश इस प्रकार से बना होना चाहिए कि जो परमेश्वर अपने वचन में सिखा रहा है उसे वे समझ जायें और अपने जीवन में लागू कर लें। पूरा संदेश खण्ड के उद्देश्य को अवश्य मण्डली के जीवन में उतारने वाला हो।

Creation Autonomous Academy

4-एक खास लागूकरण:-

ऐसा संदेश प्रचार करें जो सुसमाचार संदेश हो।

1-अपने खण्ड का चुनाव बड़े ही सावधानी के साथ करें:

संपूर्ण बाइबल यीशु की तरफ इशारा करती है? आप किसी भी खण्ड से बचाये जाने वाला संदेश प्रचार कर सकते हैं यदि आप उस खण्ड को उसके संदर्भ में रखें तो। परन्तु कुछ ऐसे खण्ड हैं जो एक दूसरे के पूरक हैं।

जैसे: यशा० 52:13-53:12; मरकुस 1:14-15

मरकुस 4:35-41; यूहन्ना 3:1-21

प्रेरित 17:24-25; रोमियों 3:1-31
रोमियों 10:1-13; इब्रानियों 2:14-18

जब आपने खण्ड का चुनाव कर लिया तो आप उसी से चिपके रहिये। और खण्ड की व्याख्या करिए मगर आप उसे स्प्रींगबोर्ड की तरह उपयोग ना करें।

2-प्रार्थना अति आवश्यक है:

संदेश की तैयारी में प्रार्थना महत्वपूर्ण है। जब हम सुसमाचार प्रचार करते हैं तो हम आत्मिक मल्लयुद्ध में हैं। तैयारी और प्रचार के लिए स्वयं प्रार्थना करें और प्रार्थना करने के लिए औरों को सहभागी बनाएं।

2 कुरि० 4:1-5 में पौलुस जो कहता है उसे याद रखिये। हमें प्रार्थना करनी है कि परमेश्वर अविश्वासियों के ऑखों को खोले नहीं तो वे कभी नहीं सुनेंगे और न सुसमाचार को समझेंगे।

3-खण्ड की व्याख्या में ईमानदार बनें रहियेः

संदेश सुसमाचार प्रचार वाला है, खण्ड को समझने की प्रक्रिया का कोई विकल्प नहीं है। मात्र एक चीज है जो प्रभाव डालेगी वह है लागूकरण का विशेष स्वभाव। श्रोताओं के लिए खण्ड की उपयोगिता को दिखाने के लिए कठिन विचार करने की आवश्यकता होगी।

4-अपने लागूकरण में प्रतिउत्तर की मॉग बिल्कुल स्पष्ट रखिये?

कभी-कभी सुसमाचारीय संदेश असफल हो जाता है क्योंकि प्रचारक सुसमाचार की व्याख्या तो करते हैं लेकिन लोगों को यह नहीं बताते कि वे क्या करें। प्रेरितों० 2 अध्याय में पतरस के संदेश को देखिए। बचने के लिए वे क्या करें, कैसे करें, और कब करें। सुसमाचारीय संदेश प्रतिउत्तर की मांग करता है। इस बात का निश्चय कीजिये कि कोई भी व्यक्ति संदेह में ना रहे। उद्धार पाने के लिये उन्हें क्या करना चाहिए। वे इसे कैसे कर सकते हैं? और उन्हें इसे अभी करना चाहिए।

कुछ लोग जवाब नहीं देंगे। वे कहेंगे यह तो **प्रेरित 17:32-34** के समय के लिए था। शैतान बताता है कि यह सही समय नहीं है लेकिन हम लोगों को बताएं कि प्रतिउत्तर देने के लिए यह सही समय है।

अन्ततः पवित्र शास्त्र के लागूकरण को हम सबसे पहले अपने जीवन में लागू करें उसके बाद श्रोताओं के जीवन में लागू करें। यदि वचन हमारे लिये उपयोगी आज नहीं है तो ये दूसरों के लिये कैसे होगा?

Creation Autonomous Academy

छ-सन्देश/प्रचार की तैयारी करना

Preparation of the sermon

1- दृश्य का सर्वेक्षण करें

1) कठिन परिश्रम की मांग है।

"सेवक का सबसे कठिन काम है 'प्रचार की तैयारी करना'। यह प्रयत्न करने की प्रक्रिया है। इसमें कष्ट होता है, सृष्टि करने का एक काम।" (डॉ० मार्टिन लॉयड-जोन्स)'

"जो लोग प्रचार और उसकी आवश्यक तैयारी को हल्का लेते हैं, वे लगातार कई महीनों तक पुलपिट पर नहीं आए हैं, या वे भलीभांति जानते हैं --- वे जो प्रचार को हल्का लेते, या प्रचार करने का साहस करते; उन्हें मैं बताना चाहता हूं कि प्रचार मेरे लिए 'परमेश्वर का बोझ' है --- यह ऐसा बोझ है जो मेरे पौरूष को पीसकर मानमर्दन के धूल में मिला देता है --- पुलपिट पर आना कोई छोटे बच्चे का खेल नहीं है।' (चार्ल्स स्पर्जन)

"तैयारी सब कुछ है। यदि मुझसे पूछा जाय कि सबसे बड़ी मांग क्या है --- तो मैं उत्तर दूंगा, 'तैयारी करना'; और दूसरा उत्तर क्या है? 'तैयारी करना'; और तीसरा उत्तर क्या है? 'तैयारी करना'। यदि मैं पुलपिट पर जाने के लिए अधिक तैयारी किया होता, तो बेहतर प्रचारक होता।' (रॉबर्ट हाल)

नया नियम हमें कठिन तैयारी करने के लिए बुलाता है - 2 तीमुथियुस 2:15, 4:2

प्रचार करने में कठिन परिश्रम की आवश्यकता होती है। कार्य की मांग है तैयारी, तैयारी एक कठिन परिश्रम है। संदेश का प्रचार करना एक दर्शन है। यह हमारे लिए आदेश है। हमारे परिश्रम किए बिना परमेश्वर अपने आप नहीं कर देगा। परमेश्वर के वचन को समय असमय हमें प्रचार करना है।

2 तीमु० 4:2 वचन के प्रचार का आदेश

याकूब 3:1 शिक्षकों का न्याय और कड़ाई के साथ किया जाएगा। लेकिन सिखाने के कार्य में हम अकेले नहीं हैं। इफि० 4:7-13

2) **हम भिन्न लोग हैं**

परमेश्वर ने हमें भिन्न-भिन्न बनाया है।

प्रचार अपने व्यक्तित्व के प्रति सत्यनिष्ठ होना है।

हम जिस तरीके से काम करते हैं उस से हमारा व्यक्तित्व प्रकट होता है।

हमारी विधियां, अपने व्यक्तित्व को प्रतिबिम्बित करने वाली चीजों के विषय में हम कैसे जानें? मेरे लिए क्या कार्य अच्छा है? जो कार्य हम नहीं कर सकते उसे दूसरों से सीख सकते हैं, परन्तु उनकी नकल नहीं कर सकते। जो आप हैं वास्तव में वैसे ही बने रहें। हम सब लोग भिन्न -भिन्न हैं हमारा भिन्न-भिन्न व्यक्तित्व है। हमारे तरीके हमेंशा एक तरह के नहीं होते।

3) **कोई सिद्ध तरीका नहीं है**

क्या-क्या खतरे हैं?

Creation Autonomous Academy

प्रचार करना तकनीकि नहीं है।

कोई भी सिद्ध तरीका नहीं है। (प्रेरितों० 6:2-4) कई बार हमारे तरीके हमारे लिए समस्या खड़ी कर सकते हैं, जब हम परमेश्वर के अपेक्षा अपने आप पर निर्भर हो जाते हैं। परमेश्वर के लोगों से और परमेश्वर से प्रेम, उपाधि प्राप्त करने से अधिक आवश्यक है।

4) **महत्वपूर्ण प्राथमिकताएं**

शैतान हमारी प्राथमिकताओं पर आक्रमण करने के लिए खुश होता है। कुछ अच्छी प्राथमिकताएं जो महत्वपूर्ण नहीं हैं शैतान उनमें हमें उलझाता है। प्रेरितों के काम 6:2-4 प्रेरितों का उदाहरणः हम तो वचन और प्रार्थना की सेवा में लगे रहेंगे। प्रेरितों ने व्यवहारिक जिम्मेदारियों को बांटा और उन्होंने कहा हम तो प्रार्थना और वचन की सेवा में लगे रहेंगे। यदि हम प्रचार करते हैं तो आवश्यक है कि अध्ययन और प्रार्थना के लिए समय निकालें। हमारी मुख्य प्राथमिकताएं अध्ययन और प्रार्थना होनी चाहिए। वचन अध्ययन का समय

और प्रार्थना का समय एक प्रचारक के लिए बहुत आवश्यक व अनिवार्य है। प्रचारक के लिए वचन की सेवा और प्रार्थना करना प्रथम प्राथमिकता है।

डेविड ऍबी ने लिखा है, "प्रेरितों के काम 2:6 और 6:4 के अनुसार पास्टर साहब, प्रचार करना आपका प्राथमिक काम है, प्राथमिकता देनेवाला काम है --- उद्धार के सन्देश का प्रचार करना और सिखाना आपका मिशन है। अपने प्राथमिक काम से भटकने की स्वतन्त्रता आपके पास नहीं है। जीवन की रोटी से पुरुषों और स्त्रियों की आत्मा को तृप्त करना है। समुदाय में और घर-घर जाकर लोगों को प्रचार करना ही आपका सर्वोत्तम काम है। यह आपके अविभाजित भक्ति की मांग करता है। सब भटकाने वाली बातों से बचने की यह मांग करता है।'

(अ) अध्ययन करने के लिए समय निकालना

अध्ययन समय लेता है। (2 तीमु० 2:15,4:2) जान स्टाट सुझाव देते हैं कि एक संदेश तैयारी के लिए 10-12 घंटे लेता है। एक घंटे की तैयारी -5 मिनट का प्रचार। यह प्राथमिकता कई तरीके से आती है।

कई चीजें हमें तैयारी में समय लगाने से रोकती हैं।-

क-संकटः बीमारी, विवाह के संकट। संकटों में परमेश्वर हमें अपना अनुग्रह प्रदान करता है।

ख-झूंठी प्रत्याशाएंः झूंठी प्रत्याशाएं तैयारी में समय लगाने से रोकती हैं।

ग-प्रशासनः 'नहीं' कहने से न डरें। प्रचार करने के लिए तैयार रहें, यह आपका प्रथम समर्पण है, भेंट मुलाकात महत्वपूर्ण परन्तु द्वितीय है।

हमें समय निकालना चाहिए कि हम अध्ययन करें क्योंकि इसमें समय लगता है।

घ-परिवारः परिवार संदेश की तैयारी में बाधा डालता है।

(ब) प्रार्थना करने के लिए समय निकालना

प्रार्थना करना इतना महत्वपूर्ण क्यों है?

जेम्स रॉस्कप ने कहाः "यह अचरज की बात है कि सन्देश तैयारी करने की विशेषताओं को बतलाने वाली पुस्तकों में अकसर प्रार्थना के बारे में वर्णन नहीं किया गया है --- प्रेरितों ने प्रचार में प्रार्थना पर महत्व दिया थाः 'परन्तु हम तो स्वयं प्रार्थना और वचन की सेवा में लगे रहेंगे' (प्रेरित 6:4)। उनके द्वारा प्रयोग किये गए शब्दों का क्रम रोचक है। यदि पहले 'प्रार्थना' शब्द लाना महत्वपूर्ण नहीं है, तो फिर भी यह निश्चित है कि प्रचारकों के लिए जिस प्रकार वचन का प्रचार करना प्राथमिक है उसी प्रकार प्रार्थना भी प्राथमिक है।'

Creation Autonomous Academy

पौलुस ने प्रचार करने के लिए प्रार्थना करने का निवेदन किया थाः इफिसियों 6:19-20, कुलुस्सियों 4:3-4, 2 थिस्सलुनीकियों 3:1

"हल्की प्रार्थना प्रचार को हल्का करेगी। प्रार्थना प्रचार को बलवन्त करती है --- और इसे दृढ़ बनाती है।" (ई० एम० बाउन्ड्स)

वचन अध्ययन के साथ-साथ प्रार्थना बहुत आवश्यक है। विश्वासयोग्यता के साथ -साथ प्रचार करने के लिए जरुरी है प्रार्थना, जिसका कोई विकल्प नहीं है। पिछले समय का अनुग्रह वर्तमान समय के लिए पर्याप्त नहीं है। बिना प्रार्थना के प्रचार करना, बिना पेट्रोल डाले कार चलाना है।

तैयारी करने से पहले प्रार्थना करें।
तैयारी के मध्य प्रार्थना करते रहें।
प्रचार करने से पहले प्रार्थना करें।
लोगों से अनुरोध करिए कि वे आपके लिए प्रार्थना करें।

5) जो प्रचार करना हो उसका चुनाव करें

क्या प्रचार करना है उसका चुनाव करें। इसमें कुछ खतरे भी हैं। पहला एक ही विषय पर प्रचार करने का खतरा। दूसरा अपने विचारों के अनुसार खण्ड को ढालने का खतरा। (2 राजा 4:1-7)

पवित्र शास्त्र के द्वारा प्रचार करें। (नहेमायाह 8 अध्याय) पूरे खण्ड को पढ़ें। किस पुस्तक से प्रचार करना है यह देखें। पवित्र आत्मा के नेतृत्व में योजना बनाएं।

योजना बनाना विशेष रुप से महत्वपूर्ण है यदि एक ही स्थान में लगातार स्थायी रुप से प्रचार कर रहे हैं। कई लोग प्रचार की तैयारी नहीं करते। हम प्रचार की योजनाएं बनाएं। यदि हमने क्रमबद्ध योजना बनाया है तो चक्कर लगाने से यह हमें बचाएगी। सम्पूर्ण संदेश का हमें प्रचार करना चाहिए। हमारे अन्दर लोगों का मार्गदर्शन करने की संवेदनशीलता होना चाहिए।

(अ) आप विषय पर प्रचार कर सकते हैं:

आप प्रचार के लिए एक शीर्षक ले सकते हैं, एक विशेष विषय या हिस्से को ले सकते हैं, एक समस्या को ले सकते हैं और कोई खास विषय ले सकते हैं। शीर्षक या विषय लेकर प्रचार करने में यह खतरा है कि खण्ड द्वारा अनुशासित नहीं रह सकते।

(ब) आप केवल एक पद से प्रचार कर सकते हैं।

प्रचार को खण्ड के संदर्भ में प्रस्तुत करें। कई बार एक दो पद पर प्रचार करने वाले, संदेश के खास उद्देश्य व अर्थ को भूल जाते हैं।

(स) आप बाइबल की पुस्तकों से नियममित रूप से क्रमबद्ध तरीके से प्रचार कर सकते हैं।

Creation Autonomous Academy

बहुत सारे लोग सोचते हैं कि अच्छा तरीका है बाइबल की पुस्तकों से क्रमबद्ध प्रचार करना। बाइबल अलग-अलग पैराग्राफ से प्रचार करने का स्वयं निर्देश नहीं देती। परमेश्वर की बुद्धि की हम पहचान करते हैं जिस शैली में हमने परमेश्वर से वचन ग्रहण किया है। जब हम प्रचार करते हैं तो बाइबल के सम्बन्ध में हम अपने तरीके से एक संदेश स्थापित करते हैं। जब आप जैसा बाइबल में बताया गया है वैसा प्रचार करते हैं तो विरोधी प्रश्नों का सामना नहीं करना पड़ता।

जो भी तरीका आप अपनाते हैं, हमेंशा एक ही तरीका अपनाना अच्छा नहीं है। प्रार्थना करने की आवश्यता है कि परमेश्वर ज्ञान दे।

''मेरे विचार से हमारा प्रचार अधिक से अधिक व्याख्यात्मक होना चाहिए, अर्थात् बाइबल में से पद-पद और अध्याय-अध्याय करते हुए प्रचार।' (पीटर ऐडम)

"बाइबल की पुस्तकों से क्रमानुसार नियमित रूप से किया जाने वाला प्रचार इस बात का निश्चय कराने के लिए सबसे प्रभावशाली होता है कि समय की अवधि में परमेश्वर की पूरी इच्छा व्यक्त की गई है, परन्तु यही एक मात्र तरीका नहीं है। एक ही तरीके की प्रचार-विधि नीरस हो सकती है।' (डेरेक प्राइम)

2- कार्य करना

अ-सामग्रियों को एकत्रित करना

(1) खण्ड को धीरे-धीरे और प्रार्थनापूर्वक पढ़ें।-

बिना टीका के खण्ड को पढ़ें। मुख्य विचार प्राप्त करें।

(2) सन्दर्भ को देखते रहें

बाइबल का प्रत्येक वचन मात्र संदर्भ में सत्य है। एक अच्छा उदाहरण है मत्ती 4:6 जहां शैतान भजन 91 से यीशु की परीक्षा में प्रश्न करता है। उसने यह संदर्भ से बाहर किया। (देखें भजन 91:9-15) सहायता के लिए क्रास रिफरेन्स का प्रयोग करें सम्पूर्ण बाइबल के साथ उन पदों के संदर्भ को समझने के लिए। खण्ड को समझने के लिए कठिन परिश्रम करें।

चारों तरफ देखें कि प्रवाह किधर जा रहा है, यह देखें कि पुस्तक/कहानी के तर्क में क्या सम्बन्ध दिये गए हैं। विभिन्न पदों का प्रयोग करें।

पूर्वचरित धर्मविज्ञान का पता लगाएं।

(3) यदि आप मूल भाषा से लाभ उठा सकते हैं तो उसका भी इस्तेमाल करें।

जहां तक सम्भव हो यूनानी अथवा इब्रानी भाषा में अर्थ पता चलाएं। आप विशेषज्ञ नहीं हैं, शब्दानुक्रमाणिका प्रयोग करें। अच्छी टीकाएं हमारी आवश्यकताओं को पूरा करेंगी।

(4) टीकाओं को पढ़ें और टिप्पणियां लिखें।

टीकाओं को पढ़ें और उनसे लेख तैयार करें। यदि आप टीकाओं का संग्रह कर सकते हैं। तो उसमें दी गयी जानकारियों में से चुनाव करके इकट्ठा कीजिए। पवित्र आत्मा जो आपके अन्दर है और खण्ड जो आपके सामने है वही आपके सबसे महान शिक्षक हैं।

कभी-कभी टीकाएं अनुपयोगी हैं। टीकाएं कुछ विशेष समझने में आपकी सहायता करेंगी। लेकिन सब कुछ जानने में सहायता करें यह आवश्यक नहीं, यह खण्ड यहां क्यों है अथवा इसे कैसे प्रचार करें। टीका आपके लिए ख्ण्ड को खोलेगी। बाइबल शब्दकोष भी सहायक पृष्ठभूमि दे सकते हैं। कहां यह घटना घटी यह जानने के लिए बाइबल एटलस उपयोगी है।

Creation Autonomous Academy

ये आवश्यकताएं आपके सामर्थ्य पूर्ण और विश्वासयोग्य प्रचार को रोकेंगी नहीं। खण्ड का महानतम शिक्षक पवित्र आत्मा आपके पास है। परमेश्वर आपके साथ है। ये सम्पूर्ण कदम साधारण रुप से सामग्री एकत्र करने के लिए हैं।

विशेष बातों को जो परमेश्वर बताता है एक कागज पर अलग से लिखें। देखें पहले क्या कहा गया है? अन्त में क्या कहा गया है? यह यहां क्यों कहा गया है? पदों का तुलनात्मक अध्ययन करें। मिलते-जुलते पदों को जो उस संदेश से मिलते हैं कागज पर लिखें। पहले की बातों के विषय में दी गयी शिक्षाओं के विषय में ध्यान दें। अलग-अलग अनुवादों को देखते समय मूल अनुवाद को देखें। टीका को पढ़ें सहायक पुस्तकों का उपयोग करें।

खण्ड का अध्ययन करते रहिए।
प्रश्न पूछिए: यह खण्ड क्या कहता है? खण्ड यहां क्यों है?
ढांचागत खण्ड की योजना-मूल अर्थ को समझने में मदद मिलती है।
हवालों का मूल्यांकन कीजिए।
खण्ड का मूल विषय क्या है?
खण्ड के अर्थ वाक्य को देखिए।
खण्ड का उद्‌देश्य क्या है?
लेखक किस चीज की परिणामस्वरुप आशा करता है?
उद्‌देश्य वाक्य को लिखिए।

ब-रूपरेखा तैयार करना:-

(1) मुख्य विचार निकालें।-

अपने सभी नोट्‌स को पुनः पढ़ें और तब आप उस प्रश्न का उत्तर दें जो आप हमेंशा अपने मन में रखते हैं। ‘वास्तविकता के विषय में खण्ड क्या कहता है? परमेश्वर ने बाइबल में यह खण्ड क्यों रखा है?’ परमेश्वर का वचन सर्वत्र उपयोगी है। (2 तीमु० 3:16)

प्रश्नों का उत्तर दें: ‘यह खण्ड यहां पर किस लिए है? परमेश्वर ने इस खण्ड को बाइबल में क्यों रखा है?’

(2) रुपरेखा और शीर्षक।-

छोटे-छोटे शीर्षक बनाते हुए एक मौलिक रूपरेखा तैयार करें।

अपने शीर्षकों को आज के लिए उपयुक्त बनाएं: यह आपके श्रोताओं के लिए क्यों सहायक है?

अपनी समझ के प्रकाश में खण्ड का उद्‌देश्य निकालें, शीर्षक की एक संख्या पर कार्य करने के द्वारा एक आधारभूत रुपरेखा निकालें। जो आपके संदेश के लिए आपको एक सहायक ढांचा देगा। अपने शीर्षक में लागूकरण बनाएं उदाहरण के लिए 2 राजा 19:14-19 आप शीर्षक प्रयोग कर सकते हैं-

1 -यरुशलेम की प्यास।
2 -यरुशलेम के अगुवे प्रार्थना में।
3 -यरुशलेम का छुटकारा।

ये शीर्षक खण्ड का अच्छा विभाजन करते हैं, लेकिन यहां एक समस्या है। आपके एक भी श्रोता यरुशलेम में नहीं रहते और वे बहुत ज्यादा इस बात में रुचि नहीं रखते कि यरुशलेम में क्या हो रहा है। ऐसे शीर्षक बनाएं जो श्रोताओं में सीधे लागू कर सकें।

उदाहरण के लिए-

1 -विश्वास की परीक्षा (शैतान हमारे विश्वास की भी परीक्षा करेगा)
2 -विश्वास का प्रतिउत्तर (हमारी आवश्यकता है प्रार्थना करें)
3 -विश्वास का रक्षक (परमेश्वर हमें भी छुड़ा सकता है)

विगत इतिहास में यरुशलेम सताव में है लेकिन सताव में विश्वास का अनुभव है और यह वास्तव में हमारे श्रोताओं के लिए उपयोगी है। हमें यह सोचने की आवश्यकता है कि हम कैसे संदेश को प्रस्तुत करें ताकि श्रीमान स्मिथ जान सकें कि यह उनके लिए है।

Creation Autonomous Academy

रुपरेखा तैयारकरने से पहले खण्ड को समझना चाहिए कि उसमें क्या कहा गया है? जो संदेश है उसे एक मुख्य वाक्य में लिख लें। मुख्य संदेश समझने के बाद ही रुपरेखा तैयार करना चाहिए।

रुपरेखा तैयार करने के लिए अच्छा होगा कि खण्ड को कम से कम दो या अधिक से अधिक पांच भागों में विभाजित करें। इससे ज्यादा भी विभाजन करने के लिए आप स्वतंत्र हैं। खण्ड विभाजन के बाद मुख्य विचार से सम्बन्ध रखता हुआ प्रत्येक भाग का एक शीर्षक निकालें और उन्हें लिख लें।

3 प्रगति का पुनः अवलोकन करें।-

आप जहां तक कार्य कर चुके हैं उस पर फिर से नज़र डालें। अपने सामग्री को पुनः देखिए और जो कुछ अनुपयोगी है निकाल दीजिए। निश्चय कीजिए कि संदेश के कौन से भाग को उदाहरण चाहिए या और व्याख्या करने की जरुरत है।

1-खण्ड के अनुशासन के प्रति समर्पित हों।

मेरा कार्य यह पता चलाना है कि परमेश्वर ने इन पदों में क्या रखा है? हमें यह देखना है कि स्वयं से कहने और पूछने के लिए मेरे पास क्या योजना है?,'क्या मैं खण्ड को समझ रहा हूं?' स्वयं से पूछें 'खण्ड यहां क्या कह रहा है?'

आलेक् मॉटियर ने कहा है, ''व्याख्यान दिये गए विषय का प्रकाशन है।'

19वीं सदी के प्रारम्भ में कैम्ब्रिज के महान प्रचारक चार्ल्स सिमियन ने लिखा है, ''मैं प्रेरणायुक्त लेखकों से बढ़कर अपने विचार को व्यक्त करने के लिए नहीं बैठता हूं; परन्तु जिस विचार को उन्होंने मुझे दिया है, उसी को लेने के लिए बैठता हूं। मैं उन लेखकों को शिक्षा देने का अभिनय नहीं करता, परन्तु एक बच्चे के समान उनके द्वारा सीखना चाहता हूं --- मैं कठिन परिश्रम इसलिए करता हूं ताकि पवित्रशास्त्र में दिये गए विषय को जान सकूं; यह नहीं कि मैं अपने विचार से उन बातों को पवित्रशास्त्र में ठूसूं जो उस में नहीं हैं। मैं इस बात पर बड़ी जलन रखता हूं कि जिस खण्ड की व्याख्या मैं कर रहा हूं उसमें दिये गए पवित्र आत्मा के विचार को न तो कम करूं और न ही उससे अधिक बढ़ाऊं।'

2-श्रोताओं की चुनौति के प्रति संवेदनशील हों।

खण्ड में दिये गए किसी भी प्रकट समस्या को अनदेखा मत कीजिए। बल्कि अधिक सावधान रहिए कि आप किन लोगों के बीच सन्देश सुना रहे हैं। प्रेरितों के काम 17 में पौलुस का उदाहरण।

यह महत्वपूर्ण है कि आप खण्ड में से किसी समस्या को बाहर न करें। खण्ड में समस्या का पता चलाना, समझने के लिए नए दरवाजे खोलता है। प्रचार के अनुसार तैयारी में तालमेल कायम करना भी महत्वपूर्ण है। जब पौलुस ने एथेन्स में प्रचार किया प्रेरितों० 17 अध्याय में तो जैसे यहूदियों को प्रचार करता था वैसे नहीं किया। एक खण्ड में सिद्धान्त की खोज करना, लागूकरण के लिए विशेष रुप से महत्वपूर्ण है।

4 सन्देश को लिपिबद्ध करना।-

1-संदेश को लिखें।ः-

इसके बारे में लोगों के भिन्न-भिन्न विचार और तरीके हैं। कुछ लोग संदेश को घर पर छोड़ देते हैं और बिना नोट्स के प्रचार करते हैं। मैं इससे अत्यन्त प्रभावित हूं लेकिन मैं स्वयं के लिए यह नहीं कर सकता। कुछ दूसरे लोग प्रचार करते समय एक सीमित रुपरेखा का उपयोग करते हैं। व्यक्तिगत

Creation Autonomous Academy

रुप से मैं सम्पूर्ण संदेश का लेख अपने साथ लेता हूं। यद्यपि मैं जानता हूं कि यह अच्छा है परन्तु मैं एक-एक शब्द को नहीं पढ़ता। मैं प्रार्थना से आरम्भ करता हूं कि प्रभु मुझे केवल सही विचार ही न दे बल्कि सही वचन, सही शब्द दे। संदेश को लिखते समय ध्यान दें कि कैसे आप अपने संदेश को प्रस्तुत करें, जिससे कि श्रोतागणों को आपको सुनना सरल हो और वे संदेश को देख सकें, प्राप्त कर सकें। आप सोचें कैसे आरम्भ करें, कैसे व्याख्या करें, कैसे लागू करें, कैसे जाएं और कैसे समाप्त करें।

लेख के बारे में लोगों की पहल भिन्न-भिन्न प्रकार से है।

भूमिकाः -

जब पौलुस ने एथेन्स में प्रचार किया उसने श्रोताओं के संसार के साथ सम्बन्ध बनाते हुए आरम्भ किया।

एक रूसी कहावत इस प्रकार हैः *''जैसा गदहों के साथ है वैसा पुरुषों के साथ भी हैः जो उन्हें जकड़ कर पकड़ना चाहता है उसे चाहिए कि वह उनके कानों को कसकर पकड़ ले।'*

जॉन चैपमैन ने लिखा हैः ''जबकि भूमिका बताने में बहुत कम समय लगाना चाहिए, फिर भी यह जानना चाहिए कि यह भाग अत्यन्त महत्वपूर्ण है। ध्यान दें कि यह लोगों के ध्यान को खींच ले, इसलिए इसमें रोचक बिन्दु हो या श्रोताओं की आवश्यकता व्यक्त हो --- तैयारी करने के इस महत्वपूर्ण कदम में मुझे काफी समय देना और कठिन परिश्रम करना पड़ता है।'

उदाहरण देनाः-

उदाहरण के साथ कुछ खतरे हैं। कुछ उदाहरण अच्छे हैं। गलत उदाहरण का चुनाव न करें। एक अच्छा उदाहरण श्रोताओं को याद हो जाता है और घर चले जाने के बाद भी याद रहता है। प्रभु यीशु याद रखने योग्य उदाहरण देने का स्वामी था।

चार्ल्स स्पर्जन ने कहा था, ''बिना उदाहरणों के प्रचार बिना खिड़कियों वाले कमरे के समान है।'

लागूकरणः-

लागूकरण अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

यह इतना महत्वपूर्ण है कि जिसके लिए पूरा सन्देश दिया जा चुका है।

परमेश्वर के वचन को दूसरों को प्रचार करने से पहले अपने ऊपर लागू करें।

खण्ड से सावधानीपूर्वक लागूकरण निकालकर लिख लें।

Creation Autonomous Academy

उपसंहार (अन्त):-

हमारे संदेश का तत्काल अन्त नहीं है, अन्त बल सहित है। संदेश के साथ कुछ याद रखने योग्य बातें हैं। जिनको कि व्यवहार में लाना है। संदेश का प्रतिउत्तर देने के लिए चुनौती क्या है?

शिक्षक की सबसे अच्छी पहचान है कि वह कठिन बातों को असानी से समझा देता है।

संदेश का सबसे ज्यादा प्रभाव संदेश के आरम्भ के पांच मिनट में दिया जाता है।

2-अपने सन्देश को समाप्त करें और बाद में फिर इसकी ओर लौटें।-

संदेश तैयार करने के बाद कुछ देर आराम करें और फिर पुनः अवलोकन करें।

पीटर ऐडम ने लिखा है, ''तैयारी करने के लिए कई दिनों के समय का निर्धारण करें --- ताकि जब आप कोई अन्य काम कर रहे हैं तो उस समय आपका अवचेतन मस्तिष्क कार्य कर सके।'

3-प्रार्थना करें।-

अपने स्वयं के जीवन के लिए प्रार्थना करें। निश्चितता तैयारी अथवा नोट्स में नहीं है यह हमारे परमेश्वर में है।
प्रार्थना करें कि संदेश आपके स्वयं के जीवन का अंग हो जाए।

जॉन स्टॉट् ने कहा, ''हृदय की तैयारी सन्देश की तैयारी से बढ़कर महत्वपूर्ण है। प्रचारक के शब्द यद्यपि स्पष्ट और बलपूर्वक हैं, फिर भी उनसे कोई फायदा न होगा जब तक कि वे शब्द प्रचारक की कायलता और अनुभव से न बोले जाएं।'

निदान, चार्ल्स स्पर्जन ने सन्देश को घिसा-पिटा बनने के खतरे के बारे बुद्धिपरक चेतावनी दी है, *''हमे ज़्यादा गम्भीर नहीं परन्तु सजीव उत्साही बनना चाहिए। क्या आप यह नहीं सोचते कि बहुतेरे सन्देश उस समय तक तैयार किये जाते हैं जब तक वे प्रचारक थक कर चूर न हो जाएं। जैसे कि फलों को निचोड़ कर उनमें से रस निकाल लिया गया हो, और तब बचे हुए भूसे से क्या कोई रस निकलेगा? सन्देश जो कई दिनों से अध्ययन किये जाते, लिखे जाते, पढ़े जाते, संशोधन किये जाते, और पुनः संशोधन किये जाते, ऐसे सन्देशों में नीरसता व सूखापन का बड़ा खतरा रहता है। यदि आप उबले हुए आलू बोएं तो आपको फसल कभी नहीं मिलेगी। आप किसी सन्देश को इतना उबाल सकते हैं जिससे कि उसका जीवन ही समाप्त हो जाय --- हमें सन्देश दें और लेखों से हमें बचाएं --- जब मैं बोलता हूं तो मैं सुझाव देते हुए बोलता हूं कि कुछ प्रचारक अपने अध्ययनों को रोक कर अपने सदस्यों से मुलाकात करने जाते हैं --- जहां तक आपकी तैयारी सन्देश को बल प्रदान करती है वहां तक तैयारी करें। परन्तु यदि आपकी आत्मा तैयारी करने के कारण सूखने लगे तो इस कठिन परिश्रम से क्या फायदा? इस प्रकार आपने अपने सन्देश को सुखाकर उसे मार डाला है। यह तो सन्देश की हत्या है।'*

ज-प्रचार को प्रस्तुत करना

Delivry of the sermon

1 तीमुथियुस 3:1-7, तीतुस 2:7; 1 पतरस 5:3, 1 तिमुथियुस 4:16, प्रेरित 20:28
वचन का प्रचार कैसे करें? परमेश्वर के वचन को कैसे सुनाया जाए?

Creation Autonomous Academy

1- नम्र बनें।:-

हम प्रचारक मात्र परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा हैं और हम उसके ऊपर निर्भर हैं। हमारी तैयारी समय लेती है प्रार्थना करने, खण्ड को समझने और खण्ड का लागूकरण निकालने में। हमारी स्वयं की प्रार्थना और दूसरे समर्पित लोगों की प्रार्थना हमारी सेवा के लिए आवश्यक है। जब आप तैयारी करते हैं प्रार्थना करें, प्रचार करने से पहले प्रार्थना करें, प्रचार करने के बाद प्रार्थना करें।

परमेश्वर पर निर्भरता नम्रता लाती है। परमेश्वर पर भरोसा करें कि वह हमारे लिए बोलेगा। तब हम दूसरों को प्रचार कर सकते हैं। यदि हमने परमेश्वर के वचन के नीचे बैठकर तैयारी नहीं की है तो हम प्रचार न करें।

2- निश्चित हों।:-

परमेश्वर के वचन में विश्वस्त/निश्चयी हों। परमेश्वर के वचन में विश्वास रखें। अपने अच्छे विचारों को प्रचार करने की परीक्षा में न पड़ें-परमेश्वर के वचन की व्याख्या करें और उसे लागू करें।

प्रचार में निश्चित हों, प्रचार की विधि परमेश्वर की है। परिणाम के लिए परमेश्वर जिम्मेदार है। (यशा० 55:10-11) परमेश्वर हमारे लिए बोलेगा। परमेश्वर का वचन न्याय और उद्धार के लिए है।

निश्चित हो जाएं, परमेश्वर की सामर्थ्य पर पूर्ण भरोसा रखें।

3- स्पष्ट हों।:-

जिस भाषा का आप इस्तेमाल करते हैं उसमें स्पष्ट हों। अपने भाषा और व्याख्या में जो आप उपयोग करते हैं उसमें स्पष्ट हों। ताकि लोग उसे समझ सकें। 'अध्यात्मवैज्ञानिक शब्दों' के साथ स्पष्ट बनें। यदि आप उनका प्रयोग करते हैं तो उनके अर्थ की व्याख्या करें।

संदेश के ढांचे में आप स्पष्ट हों,-विचारों को स्पष्टता से प्रस्तुत करें। श्रोताओं को भ्रमित करने वाली चीजों का उपयोग न करें।

बोलने के तरीके में आप स्पष्ट हों,-न तेज -न धीमा। रुचि रखें और अपनी आवाज में जोशीलापन रखें। सुनने योग्य बोलें।

आपके शीर्षक स्पष्ट हों, उसे दोहराएं ताकि लोग याद रख सकें। हमारी भाषा, शब्द आसान हों जिससे कि लोग उसे समझ सकें। उस पर हम स्वयं स्पष्ट हों जिससे कि लोगों को समझा सकें। किस तरीके से प्रचार करते हैं उस सम्बन्ध में भी हम स्पष्ट हों। हमारा प्रचार सुनने वालों के लिए रोचक होना चाहिए।

4- आप जोशीले हों:-

परमेश्वर के लिए जोशीले बनें। (2 तीमु० 1:6)

परमेश्वर - और भक्ति के प्रति जोशीले बनें। (भजन 119)

परमेश्वर के वचन के प्रति जोशीले बनें।

लोगों के प्रति जोशीले बनें। (इफि० 3:14-19)

एक प्रचारक व शिक्षक के रुप में जो आपकी जिम्मेदारी है उसके प्रति जोशीले बनें।

संदेश प्रस्तुत करने में उत्साहवर्धक बने रहें। जोशीले हों। प्रचारक चाहता है कि लोग प्रतिउत्तर देने के लिए आगे बढ़ें, कदम उठाएं और लोगों की इच्छा परमेश्वर की तरफ लगे।

Creation Autonomous Academy

5- सावधान हों।:-

बोले जाने वाला शब्द सामर्थ्य पूर्ण है। आप सामर्थ्य पूर्ण स्थिति में हैं। हमें बहुत ही सावधानी वरतना है, क्योंकि हम जो प्रचार कर रहे हैं वह परमेश्वर का वचन है। जो कुछ परमेश्वर के वचन में नहीं है उसका प्रचार हम कभी भी न करें। हमें पुलपिट का उपयोग लोगों को गुमराह करने के लिए नहीं करना चाहिए। सावधान हो जाएं, ये बहुत ही महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है जिसे परमेश्वर ने हमें सौंपा है। अपने पदवी का दुरुपयोग न करें।

6-तैयार हों।:-

अन्तिम मिनट में तैयारी परमेश्वर के प्रति ईमानदारी नहीं है। तैयारी के लिए समय दें। इसका अर्थ है दूसरे कार्यों को न करें। (प्रेरितों० 6अध्याय) बल्कि संदेश को तैयार करें। आरामदायक अनुभव करें। अपने लेख के बारे में बिना चिन्ता किए बोलें। आप व्याख्या करें आप क्या कहना चाहते हैं।

हमें पूर्ण रुप से तैयार होना है। तैयारी के लिए हमें समय देना है। आवश्यक है प्रार्थना में समय बिताना, तैयारी करना व अन्य कार्यों को न करना। यदि हम वचन का प्रचार करने जा रहे हैं तो हमें अच्छी तरह तैयार होना है।

7-स्वयं के बनें।:-

'परमेश्वर प्रचारक के व्यक्तित्व द्वारा बोलता है।' परमेश्वर ने आपको इस कार्य के लिए बुलाया है।

स्वयं के बने रहें, दूसरों की नकल न करें। परन्तु इतना ज्यादा स्वयं में न खो जाएं कि महत्वपूर्ण बातें छूट जाएं।

8-व्यवहार।:-

व्यवहारों के प्रति सावधान रहें। हम केवल शब्दों के माध्यम से बात नहीं करते, हम अपने व्यवहार से भी प्रदर्शित करते हैं। आपकी आदतें नुकसान पहुंचा सकती हैं। प्रचार में जो हमारी आदतें बाधक हों उनसे सावधान रहें। 55 प्रतिशत चेहरे के हाव भाव से प्रदर्शित होता है। किस तरह से आप संदेश प्रचार करते हैं वह महत्वपूर्ण होता है।

9-आंखों का सम्पर्कः-

श्रोताओं की आंखों में देखना, संदेश प्रस्तुत करने में बहुत ही मदद करता है। आप उनका ध्यान अपनी तरफ आकर्षित किए रहते हैं। परन्तु सावधानी वरतना है कि किसी एक व्यक्ति की तरफ ही न देखते रह जाएं। सम्पूर्ण समूह पर दृष्टि रखें।

10-आवाजः-

महत्वपूर्ण बात है ऊंची आवाज में बोलना। सही तरीके से जहां ऊंची आवाज की आवश्यकता है वहां ऊंची आवाज में, जहां धीमी आवाज की आवश्यकता है वहां धीमी आवाज का प्रयोग करें। समय के साथ उतार-चढ़ाव में परिवर्तन लाते रहें। विशेष वाक्य को बार-बार दोहराएं व जोर देकर बताएं। नकली भावनाएं पैदा करना खतरनाक है। सच्चाई मन मस्तिष्क से सम्बन्धित है। परमेश्वर के आत्मा के कार्य के बिना हम लोगों के विवेक को परिवर्तित नहीं कर सकते।

Creation Autonomous Academy

11-सरल भाषाः-

भाषा का प्रयोग सरल व सीधा-सादा होना चाहिए। कठिन शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। मुहावरे, उलझाने वाले शब्दों का कम प्रयोग करें। अच्छा प्रचार लोगों को प्रभावित नहीं करता किन्तु आत्मिक भोजन प्रदान करता है। ऐसे बोलें कि कलीसिया में उपस्थित सभी स्तर के लोग प्रचार को समझ सकें।

12-निर्भर रहें।:-

शैतान चाहता है कि हम उस पर निर्भर रहें। परमेश्वर पर भरोसा रखने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। तैयारी के बाद प्रार्थना करें कि प्रचार के लिए परमेश्वर एक विशेष अभिषेक दे। परमेश्वर पर भरोसा रखें। हमें आशा करना चाहिए कि परमेश्वर का वचन कार्य करेगा। वचन व्यर्थ नहीं जाएगा परमेश्वर की योजना पूरा करके लौटेगा।

13-इशारेः-

प्रचार को इशारे आकर्षक बनाते हैं, परन्तु इशारों का प्रयोग सावधानी पूर्वक व सही होना चाहिए।

14- बुद्धिमान हों।ः -

विशेष रुप से प्रचार करने के बाद बातचीत करने के लिए उपलब्ध हों। प्रचार करने के बाद संदेश पर पुनः विचार करें। अगली बार प्रचार करने के लिए इससे क्या सीख सकते हैं। आपने क्या गलती की है। संदेश के विषय में अच्छी चीजें क्या थीं?

संदेश के समाप्ति पर शैतान सक्रिय हो जाता है। हम कलीसिया में मनन के लिए समय दें। अपने बारे में भी बुद्धिमान हों। अपनी जिम्मेदारी के अलावा सब कुछ परमेश्वर पर छोड़ दें। अपने आलोचकों को सुनें, उनको अपनी बात कहने दें।

प्रचार समाप्त करने के बाद बुद्धिमान बने रहें। लोग परमेश्वर के वचन को भली भांति समझ जाएं इस बात में बुद्धिमान बनें। हम हमेंशा सीख करके ही बुद्धिमान बन सकते हैं। प्रचार करने के बाद हमें अपने प्रचार पर विचार करना चाहिए। कहां कमी रह गयी ताकि हम बुद्धिमानी वरतें।

झ-मिट्टी के बरतन में रखा हुआ खज़ाना

Treser in the jar of cley

(2 कुरिन्थियों 4:5-10)

भूमिकाः-

परमेश्वर की सच्चाई धन है, परमेश्वर की सच्चाई अनन्त है। परमेश्वर ने हम सबको प्रचारक बनाया यह हमारा सौभाग्य है। जो संदेश है अनन्त जीवन का संदेश है, ले जाने वाले एक कमजोर मनुष्य हैं। हमारे पास धन है परन्तु हम मिट्टी के वर्तन हैं। हम अपना नहीं, यीशु मसीह का प्रचार करते हैं जो प्रभु है। खजाना (धन) सुसमाचार है, हम मिट्टी हैं।

फिलिप ब्रुक्स (येल 1877) ने अपने विद्यार्थियों से कहा, *''हम एक दूसरे के साथ आनन्दित हों क्योंकि संसार में पुरुषों के लिए अच्छे और सुखद कार्य अधिकाई से हैं जिन्हें वे कर सकते हैं, परमेश्वर ने करने के लिए हमें सर्वोत्तम एवं सुखद कार्य दिया है और हमें अपनी सच्चाई के प्रचारक बनाया है।'*

1- हम मांग का सामना करेंः-

Creation Autonomous Academy

क-भक्तिः-

पौलुस ने तीमुथियुस को लिखा, 1 तीमुथियुस 4:12-16 औरों के लिए उदाहरण बन, मेरे आने तक प्रचार कर। अपने जीवन और सिद्धान्त का ख्याल रखें। बोलचाल, उपदेश, हर बात में लोगों के लिए उदाहरण हों। जीवन और सिद्धान्त दोनों अलग-अलग हो जाएं तो हम गिर जाएंगे। हमें गिरा देने का यह शैतान का तरीका है। एक पवित्र प्रचारक परमेश्वर के हाथ में एक बहुत बड़ा हथियार है। सबसे जरुरी है हमारी व्यक्तिगत पवित्रता। बिना परमेश्वर के हम मृतक के समान हैं। हमारी सेवा बिना परमेश्वर के मर जाएगी। प्रचार और सेवा हमारे जीवनों के साथ घुली हुई है। प्रभु यीशु ने प्रचार ही नहीं किया परन्तु वह स्वयं उसका पालन करता था। लोग आपके जीवन और आपकी शिक्षाओं को जानेंगे। हमें प्रचार के अधिकार को दिखाने के साथ उसके प्रतिउत्तर को भी दिखाना है। आत्मिक परिपक्वता आवश्यक है।

***जॉन पाइपर** ने लिखा है, "प्रचारक बनने के लिए प्रयत्न न करें, सुयोग्य व्यक्ति बनने का प्रयत्न करें।'*

***रॉबर्ट मूरे मैक्चीन** (1843 में 30 वर्ष की उम्र में मृत्यु) ने कहा था, "परमेश्वर बड़े वरदानों को इतना आशीषित नहीं करता जितना कि मसीह की समानता में अधिक से अधिक आने की। एक पवित्र सेवक परमेश्वर के हाथ में एक प्रभावशाली हथियार है --- मेरे लोगों की सबसे बड़ी ज़रूरत मेरी व्यक्तिगत पवित्रता है।'*

***जॉन फ्लेवेल** ने लिखा, "भाइयो, दूसरों के 1000 पापों की निन्दा करना अपने जीवन के एक पाप को अपमानित या उसका दमन करने से आसान होता है।'*

***जिम पैकर** ने कहा है, "एक प्रचारक अपने सन्देश का एक भाग है जिस से वह स्वयं को अलग नहीं कर सकता। उसे चाहिए कि वह प्रचार किये जाने वाले सच्चाई के अधिकार और उसके प्रति प्रत्याशित प्रत्योत्तर दोनों का नमूना बने। इसका कोई विकल्प नहीं है: आत्मिक वास्तविकता ज़रूरी है।'*

***रिचर्ड बैक्सटर** ने लिखा है, "अपने बारे में सावधान हों --- कहीं ऐसा न हो कि जिसे आप अपनी जीभ से बताते हैं उसे स्वयं के जीवन से न बताते हों; इस रीति आप अपने कठिन परिश्रम के प्रति सबसे बड़े रूकावट के कारण होंगे --- अच्छा जीवन बिताने और अच्छा प्रचार करने के लिए हमें कठिन परिश्रम करना होगा।'*

ख-बलिदान

प्रभु यीशु ने क्रूस पर जीवन बलिदान किया। मसीही सेवा का मार्ग हमेंशा से दाम चुकाने में है। (2 कुरिन्थियों 4:8) यीशु को हमेंशा लिए फिरते हैं कि यीशु का जीवन हमारे जीवन में प्रकट हो। (2 कुरिन्थियों 4:10) मसीही सेवा का अनुभव बताता है, जिम्मेदारियों के भार से हम कभी बच नहीं सकते। अपने जीवन में पाप के संघर्ष से नहीं बच सकते। हम कार्य शुरु करें इसके पहले मूल्य आंक लेना चाहिए। परमेश्वर का राज्य हमेंशा परमेश्वर के सेवक को क्रूस पर ले जाता है।

2 कुरिन्थियों 4:8-12, 6:3-10
परमेश्वर के सेवकों के उदाहरण जिन्होंने भयंकर संघर्षों का सामना किया है:

***हडसन टेलर** ने भक्तिपूर्ण नियम की परिभाषा दी है, "सहायता करने की खोज, प्रभुत्व जमाने का प्रयत्न न करना, ग़लत मार्गों से अलग रहना और सही मार्गों पर चलना व अगुआई करना, परमेश्वर की महिमा और अगुआई पाए हुओं की भलाई के लिए, प्रभुता करनेवाले के संतोष के लिए नहीं - इस प्रकार का नियम प्रभुता करनेवाले को क्रूस की ओर ले जाता है और प्रभुता करनेवाले के मूल्य चुकाने के द्वारा प्रभुता किये गए लोगों को बचाता है।'*

Creation Autonomous Academy

ग-जवाबदेही

प्रभु यीशु स्वयं नींव है परन्तु हमेंशा देखना है कि उस पर हम कैसा निर्माण कर रहे हैं। (2 कुरि० 4:3) हर एक न्याय जो समय से पहले है वह गलत है। परमेश्वर ने कहा आगे वाले पीछे और पीछे वाले आगे हो जाएंगे।

2 तीमुथियुस 4:2

1 कुरिन्थियों 3:10-15

याकूब 3:1

2- हम दुश्मनों के आक्रमण का सामना करते हैं।

सभी मसीही शैतान के आक्रमण का सामना करते हैं। (इफि० 6:12) शैतान तीन सामान्य हथियारों का इस्तेमाल प्रचारकों के विरोध में करता हैः

क-घमण्डः-

ख्याति (प्रसिद्धि) हमें बरबाद कर दे सकती है। ये जलती हुई भट्ठी के समान है। घमंड से मिला हुआ प्रचार को बहुत सम्मान दिया जाता है और बड़ी आसानी से ये महत्वपूर्णता हमें अच्छी लगने लग जाती है। परमेश्वर घमंडी का विरोधी और नम्र पर दया करता है। ख्याति और घमंड ये शैतान का सबसे बड़ा हथियार है। यही तरीका शैतान ने आदम और हव्वा पर प्रयोग किया। घमंड हमारे जीवन में शैतान का एक बहुत बड़ा प्रवेश है। घमंड हमें परमेश्वर से दूर ले जाता है और दूसरे लोगों से दूर ले जाता है। घमंड हमारा सम्बन्ध परमेश्वर से और दूसरे लोगों से बिगाड़ देता है। प्रभु यीशु ने कहा,'किसी को अपना पिता और मालिक न कह क्योंकि हमारा एक ही पिता और एक ही मालिक है परमेश्वर।'

जार्ज व्हाइटफील्ड के अनुभव को सुनें। 1737 ई० की बात है और उनकी उम्र केवल 22 साल हैः *''प्रसिद्ध बनने की लहरें ऊंची उठने लगीं। कुछ ही समय में, मैंने पैदल चलना छोड़ दिया, और विवश होकर भीड़ की होसन्ना आवाज़ से बचने के लिए, एक स्थान से दूसरे स्थान तक, वाहनों में जाने लगा। उनकी तालियों की गड़गड़ाहट के साथ मैं मनमानी चाल चलने लगा; और, यदि मुझे एक अच्छे दयालु महायाजक न मिले होते तो मेरी प्रसिद्धि मुझे नष्ट कर देती। मैं उनसे आग्रह किया करता था कि वे मुझे अपने हाथों से पकड़ कर मेरे इस धधकते भट्टे से होकर बिना हानि पहुंचे मेरी अगुआई करें। उन्होंने मेरे निवेदन पर ध्यान दिया और मुझे मेरी व्यर्थ महिमा और अपनी महिमा देखने में सहायता की।'*

''परमेश्वर घमण्डियों का सामना करता है परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है।' ''मैं ऐसे व्यक्ति पर दृष्टि करूंगा, जो दीन और टूटे मन का हो और जो मेरे वचन के कारण थरथराता हो।' (यशायाह 66:2)

जौनाथन एडवर्ड्स *ने वर्णन किया है, ''आत्मिक घमण्ड मनुष्यों के हृदयों में शैतान के प्रवेश करने का एक बड़ा दरवाज़ा है।'*

जिम पैकर *ने लिखा है, ''एक मसीही कार्यवाहक होते हुए आत्मिक उन्नति करना आसान नहीं, परन्तु कठिन है --- उसका कारण यह है कि कार्यवाहकों की प्रत्याशा की जाती है --- कि वे कुछ कर दिखाएं --- कार्यवाहक मुखौटा पहनने की परीक्षा में जा पड़ते हैं - जिसमें उनका व्यक्तित्व गुप्त होता है - मज़बूत दिखायी देते हैं - परन्तु उनका मुखौटा उनके व्यक्तिगत पहिचान को गुप्त कर देता है, इसलिए अब वह किसी दूसरे के साथ निकटता से सम्बन्धित नहीं होता, न तो किसी मनुष्य के साथ और न ही परमेश्वर के साथ।'*

ख-यौन अनैतिकताः-

यौन सम्बन्धित पाप शैतान का एक और हथियार है। हमें इससे अपनी रक्षा करना है। इसको भी शैतान बहुतायत से हमें गिराने के लिए और परमेश्वर से दूर हटाने के लिए प्रयोग करता है। शिमशोन, दाऊद, सुलेमान को शैतान ने गिरा दिया। यह बहुत बड़ा खतरा है जिससे हमें सावधान रहना है।

Creation Autonomous Academy

1 तीमुथियुस 4 में पौलुस ने तीमुथियुस को लिखा था, “भक्ति के लिए अपने आप को अनुशासित कर’ (पद 7), “पवित्रता में आदर्श बन जा’ (पद 12), “वृद्ध महिलाओं को माता और युवतियों को बहिन जानकर पूर्ण पवित्रता से समझा (5:2), “अपने आप को पवित्र बनाए रख’ (5:22)।

बाइबल में उन लोगों के उदाहरण जो इस क्षेत्र में असफल हुए हैंः शिमशोन, दाऊद, सुलेमान आदि

ग-लोगों के प्रति उदासीनता

प्रचारकों के दिमाग में एक बहुत बड़ी भ्रान्ति है कि परमेश्वर को लोगों के दिमागों में घुसेड़ दे ंतो आत्मा स्वयं प्रवेश कर जाएगी। कई प्रचारक लोगों की समस्याओं से दूर रहते हैं। वे लोगों के घरों को जाते हैं क्योंकि वह उनका कार्य है। यह भी एक बड़ा खतरा और शैतान का हथियार है जिससे हमें हमेंशा सावधान रहना है। हमारे अन्दर रुखापन नहीं होना चाहिए। हमें लोगों की समस्याओं के निकट जाना चाहिए।

पीटर ऐडम *ने टिप्पणी की है, “यह उन लोगों की विशेषताओं में से एक विशेषता है जो अपने प्रचार को इतना गम्भीर लेते हैं कि वे अकसर लोगों की अपेक्षा पुस्तकों से प्रीति रखते हैं।”*

लैरी क्रैब *चेतावनी देते हैं, “इव्हेंजेलिकल लोगों के बीच एक भयंकर पूर्वधारणा होती है कि बस परमेश्वर के वचन को लोगों के दिमाग में घुस जाना चाहिए, परन्तु यह नहीं कि पवित्र आत्मा उनके हृदयों में इस वचन का पालन कराए --- इस पूर्वधारणा ने पासबानों और अगुओं को लोगों के जीवनों में वचन को लागूकरण कराने की ज़िम्मेदारी से दूर कर दिया है। उनमें से बहुतों ने स्वयं को पुलपिट के पीछे छिपा रखा है और अपनी मण्डली के संघर्षों से दूर हैं। ऐसी स्थिति में होते हुए वे वचन का प्रचार परिशुद्धता से करते तो हैं परन्तु उसका प्रभाव किसी के जीवन पर नहीं पड़ता।”*

जॉन एफ० बेटलर *ने लिखा है, “अच्छे प्रचारक लोग पासबान, सलाहकार और प्रोत्साहन देनेवाले होते हैं, वे लोगो को जानते हैं और उनके साथ कार्य करते हैं अर्थात् इतनी निकटता से जिससे कि वे उन के सन्देहों, भय, चोट, और आनन्द को समझ सकें। एक अच्छे प्रचारक को मनुष्यों पर महत्व देनेवाला होना चाहिए --- पासबानी सम्पर्क के बगीचे में केवल जीवन-शक्ति, निकटता और उत्सुकता को सींचा और उनका पोषण किया जाता है --- लोग मुझे पवित्रशास्त्र में ले जाते हैं और पवित्रशास्त्र मुझे लोगों में ले जाता है। आपके पास इन दोनों में से जब एक है तो वह दूसरे के बिना नहीं होता।”*

Creation Autonomous Academy

2 कुरिन्थियों 2:4, 1 कुरिन्थियों 13:1-3

3- हम परमेश्वर की तरफ दौड़ें।ः-

जब हम शैतान का सामना कर रहे हैं तो केवल एक स्थान जाने का है। हम परमेश्वर के पास जाते हैं।

इन सब बातों के होते हुए हम कैसे इस ज़िम्मेदारी को क़ायम रख सकते हैं? “कौन इस कार्य के योग्य है?’ (2 कुरिन्थियों 2:16)। केवल परमेश्वर।

क-यह परमेश्वर का विचार है

यह परमेश्वर की योजना है कि हम क्या करें? (इब्रा० 11 अध्याय) अब्राहम, याकूब, मूसा, शिमशोन, दाऊद, शमूएल ये सब ठोकर खाने वाले थे और ये विश्वास के योद्धा भी थे। रोमियों 10 अध्याय वे कैसे सुनेंगे जब तक लोग प्रचार न करें, कैसे प्रचार करेंगे जब तक कि भेजे न गए हों। वे परमेश्वर की आत्मा द्वारा लाए गए हैं। जब तक कि हमारे जीवन पर परमेश्वर विजयी न हो स्वयं कायल हो जाना काफी नहीं है। मूसा, यिर्मयाह, योना पीछे हटे परन्तु परमेश्वर ने उन्हें आगे बढ़ाया। परमेश्वर की बुलाहट केवल अपनी ही ओर नहीं है। परन्तु परमेश्वर के लोगों द्वारा भी सुना जाना आवश्यक है कि यह ठीक है। जरुरी है कि लोग हमारी बुलाहट को पहचानते हों।

"हम सब कई बातों में चूक जाते हैं' (याकूब 3:2)।

इब्रानियों 11 अध्याय में विश्वास के योद्धाओं की सूची दी गई हैः कमज़ोरियों के साथ संघर्ष करने के बारे में उन लोगों में कौन कौन से उदाहरण आप देख सकते हैं?

हमें व्यक्तिगत रूप से यह जानना होगा कि परमेश्वर ने हमें बुलाया है।
याकूब 3:1

रोमियो 10:14-15

आवश्यक रूप से ऐसा नहीं है कि जो हम करना चाहते हैं वही परमेश्वर की बुलाहट हो। उदाहरण?

हमारे वरदानों को उपयुक्त, परीक्षित और विकसित होना चाहिए।

आवश्यक है कि दूसरे लोग हमारी बुलाहट को पहिचानें, हमें जवाबदेह बनने की ज़रूरत है, ताकि प्रेरितों के काम 13:2-4 में पौलुस और बरनाबास के समान हम कलीसिया (पद 3) और पवित्र आत्मा (पद 4) के द्वारा अलग किये गए और भेजे गए लोग हैं।

जॉन न्यूटन *ने एक युवक को उस समय सुझाव दिया जब वह अपने बारे में परमेश्वर की बुलाहट के सम्बन्ध में सोच रहा था, "एक सही बुलाहट का प्रमाण अन्त में दिखाई देता है जब ज़रिया, समय, स्थान और अन्ततः कार्य में लगने हेतु परिस्थितियों द्वारा तैयार होने की प्रक्रिया द्वारा उसके लिए एक उपयुक्त मिलता-जुलता खुला हुआ दरवाज़ा दिखाई देता है। जब तक ये सभी बातें पूर्ण होती हुई दिखायी न दें आपको अपने मस्तिष्क में स्पष्ट होने की ज़रूरत नहीं है। इस विषय के बारे में ख़ास सावधानी बरतनी चाहिए कि पहले दिखने वाली बातों के प्रति तुरन्त आपका झुकाव न हो। यदि आपको सेवकाई में लाने के लिए परमेश्वर की इच्छा होगी, तो आप यह निश्चित रूप में जान लें कि परमेश्वर ने पहले से आपके लिए स्थान और सेवा ठहरा दिया है; और यद्यपि आप इसे वर्तमान में नहीं जानते हैं, तो आप उपयुक्त समय में जान लेंगे। यदि आपके पास एक स्वर्गदूत के वरदान हैं, तो आप उन वरदानों को उस समय तक नहीं इस्तेमाल कर पाएंगे जब तक कि इस्तेमाल करने का समय न आ जाय, और जब तक कि वह आपको लोगों तक न ले जाए जिन्हें उसने आपके द्वारा आशीषित होने के लिए ठहराया है।"*

Creation Autonomous Academy

ख-परमेश्वर पर्याप्त है।

जो जल्दी से दिखाई पड़ता है उसे पकड़ने की कोशिश मत करें। परमेश्वर ने प्रत्येक के लिए सेवा नियुक्त किया है। अन्ततः इस कार्य के लिए परमेश्वर पर्याप्त है। हमारे कार्य की सफलता परमेश्वर की ओर से है। बिना परमेश्वर के हम पर्याप्त नहीं हैं। सामर्थ्य परमेश्वर में है। मेरी शक्ति मेरी कमजोरी में परिपूर्ण है। बिना परमेश्वर के अभिषेक के हम प्रचार नहीं कर सकते। परमेश्वर हमारी सहायता करेगा। उससे मांगें, अपनी असफलताओं को उसे दिखाएं। हम प्रार्थना और वचन के व्यक्ति बनें।

‘‘इस कार्य के लिए कौन योग्य है?’ (2 कुरिन्थियों 2:16)
‘‘हमारी क्षमता परमेश्वर से मिलती है। उसने हमें सक्षम बनाया है’ (2 कुरिन्थियों 3:5-6)
‘‘सामर्थ्य की असीम महानता परमेश्वर की ओर से है’ (2 कुरिन्थियों 4:7)।

‘‘मसीही संचारक को यह सीखना चाहिए कि यदि वह परमेश्वर को महान परमेश्वर और मसीह को महान उद्धारकर्ता के रूप में प्रस्तुत करता है तो वह स्वयं को महान प्रचारक और शिक्षक के रूप में प्रस्तुत नहीं कर सकता’ ***(जिम पैकर)****।*

2 कुरिन्थियों 12:9-10

चार्ल्स स्पर्जन *ने लिखा है, ‘‘यहां सबसे अच्छा व्यक्ति, यदि वह जानता है कि वह है, तो वह यह जानता है कि वह पवित्र बुलाहट की गहराई से दूर है --- सब कार्य हमारी क्षमता से बाहर है और हमें परमेश्वर की सामर्थ से ही आश्चर्यकर्म करना चाहिए, अन्यथा पूर्णरूप से असफल होंगे।*

Creation Autonomous Academy

अध्याय-6
प्रचारक

1-कार्यः-

1-सावधानीपूर्वक पवित्र शास्त्र का उपयुक्त लेखांश चुनें।ः-

इस बात का निश्चय करें कि यह खण्ड वह है जो आपके सुनने वालों को जीवन और बल देगा। किसी विषय को मात्र इसलिए मत चुनें कि इसमें आपकी रुचि है या यह आप में जिज्ञासा उत्पन्न करता है। कभी भी ऐसा विषय मत चुनें जो भेदभाव, फूट या झगड़ा उत्पन्न करता हो।

आप परमेश्वर के लिए सोता बनना चाहते हैं, कि वह अपने लोगों से अपना वचन आपके द्वारा बोले। इसलिए आपका दायित्व है कि उन लोगों के लिए परमेश्वर का मन पाएं जिन पर उसने आपको दायित्व सौंपा है। यह सेवा उन सबसे महान सौभाग्यों में से एक है जो नाशमान मनुष्य को दिया गया है। यह सबसे अधिक विस्मयकारी दायित्वों में से एक है।

2-लोगों की वर्तमान स्थिति से सम्बन्धित शीर्षकों को खोजेंः-

परमेश्वर के पास सर्वदा वर्तमान सत्य होता है जो वह अपने लोगों से कहना चाहता है। (2 पत० 1:12) परमेश्वर के लोगों के मध्य निरन्तर परमेश्वर के उद्देश्यों का विकास और बढ़ोत्तरी होती रहती है। विश्वासियों की प्रत्येक देह के लिए उसके पास विशिष्ट उद्देश्य है।

प्रत्येक कलीसिया को परमेश्वर के उद्देश्यों में आगे बढ़ना चाहिए जिसको उसने उनके लिए स्पष्ट किया है। यह सम्पादित करने के लिए, यह आवश्यक है कि उससे सत्य का विशिष्ट वचन उनको निरन्तर दिया जाए।

कभी-कभी अपने आप से यह पूछना एक उपयोगी अभ्यास है कि 'यदि इन लोगों से बोलने का यह मेरा अन्तिम मौका होता तो सबसे महत्वपूर्ण बात क्या है जो उनको सुननी चाहिए?'

इस प्रकार के विचार को मन में रखकर उपदेश देना आपकी सहायता करता है। यह इस बात का आश्वासन देगा कि आपके शीर्षक उन लोगों को परिपक्व बनाने और उनके विकास के लिए उपयोगी और आवश्यक हैं, उन उद्देश्यों के लिए जो उनके लिए परमेश्वर के पास हैं।

3-सावधानीपूर्वक प्रत्येक दृष्टिकोण से खण्ड का अध्ययन करें।ः-

Creation Autonomous Academy

इसको कई बार पूरे तरीके से पढ़ें जब तक आप इसको बहुत अच्छे से समझना आरम्भ न कर दें। तब ध्यान पूर्वक पद-पद करके इसका अध्ययन करें। जब भी पवित्र शास्त्र के अन्य भाग का इससे स्पष्ट सम्बन्ध दिखायी दे, तो उस भाग को भी पढ़ें।

यदि आपके पास संदर्भ पुस्तकें हैं, तो उनको अवश्य पढ़ें। परन्तु इन सबसे ऊपर अपने मन और हृदय को पवित्र आत्मा के लिए खुला रखें, उन विचारों को इकट्ठा करने के लिए जो वह आपको दे।

4-अपने शीर्षक को पूर्णतया समझने के लिए परिश्रम करें।ः-

खण्ड के छिपे हुए शीर्षक को खोजने के लिए हमेशा प्रयास करें। जब पवित्र आत्मा ने इस खण्ड को प्रेरित किया तो वह क्या कहना चाह रहा था? इस शिक्षा का मूल सार क्या है? वह क्या है जो परमेश्वर अपने लोगों से इसके द्वारा कहेगा?

5-मन में एक निश्चित लक्ष्य रखें।:-

आपका लक्ष्य परमेश्वर के लक्ष्य के पूर्णतया अनुरुप होना चाहिए।

इस बात को जानने के पश्चात कि आपने क्या पाया, कि वह पवित्र शास्त्र के इस भाग के द्वारा क्या बताना चाहता है, आपका कार्य यह है कि जितना सम्भव हो सके उतना निष्ठावान रहें। अतः आपको चाहिए कि आप अपने में उपदेश को सोख लें।

परमेश्वर क्या कह रहा है उसे मानसिक रुप से समझना ही काफी नहीं है। आपको वह महसूस करने की आवश्यकता है जो वह महसूस कर रहा है। वह अपना हृदय और साथ ही अपना मन संचारित करना चाहता है। अतः उसका वचन आपके हृदय और आपके मन से उमड़ना चाहिए।

परमेश्वर के संदेश को उसके लोगों तक प्रसारित करने के लिए आपको परमेश्वर का साधन होना है। आप उसका मुंह हैं।

आपको इसलिए नहीं बुलाया गया कि आप अपना मन लोगों के साथ बांटें। आपको इसलिए बुलाया गया है कि उसका मन लोगों के साथ बांटें। यह जानकारी आपके लिए प्रेरणादायक कारक होना चाहिए। इसे आपके उपदेश देने का अकाट्य कारक होना चाहिए।

6-अपने अनुभव से बोलें।:-

ताकि आप सत्य को प्रभावशाली तरीके से बता सकें, यह कुछ वो होना चाहिए जिससे परमेश्वर ने आपके जीवन में कार्य किया हैं।

बहुत से उपदेशक सिद्धान्त प्रस्तुत करते हैं। वे सामान्योक्ति का प्रचार करते हैं, जिसकी कभी -कभी कोई भी व्यवहारिक उपयोगिता नहीं होती। कोई भी व्यक्ति विश्वासोत्पादक तरीके से 'नये जन्म के अनुभव' का प्रचार नहीं कर सकता जब तक स्वयं उसने इसका अनुभव न किया हो।

इसके पहले कि आप इसे प्रभावशाली तरीके से दूसरों को बताएं, आपको इस अनुभव को वास्तविकता में अपने स्वयं के जीवन में जानना है। प्रचारक को बुलाया गया है कि वह लिखित पत्री बन जाए। उससे केवल सत्य का प्रचार करने की ही अपेक्षा नहीं की गयी। उससे यह भी अपेक्षा की गयी है कि इसे व्यवहार में लाए और इसका प्रदर्शन करें। जो कुछ वह उपदेश देता है उसे उस सबका जीवित उदाहरण होना है।

7-इसे अर्थपूर्ण बनाएं।:-

व्याख्या का अर्थ है 'सही अर्थ निकालना'। यह निश्चित करना आपका दायित्व है, अपनी सारी क्षमता के अनुसार कि आपके सुनने वालों को पवित्र शास्त्र का सही अर्थ और उसकी सार्थकता सुस्पष्ट हो जाए।

सर्वदा प्रयास करें कि आपका विषय सीधा-सादा हो। स्पष्ट रुप से यह वही है जो यीशु ने किया। यह एक महत्वपूर्ण कारण था कि क्यों उसकी सेवा इतनी सामर्थी और प्रभावशाली थी। उसने गूढ़ विषयों को लिया और उनको सामान्य बनाया।

बहुत से वर्तमान उपदेशक इसके ठीक विपरीत करते हैं। वे सामान्य विषयों को लेते हैं और उनको इतना जटिल व उलझा हुआ बना देते हैं कि जो वे कहते हैं सुनने वाले बहुत थोड़ा समझ पाते हैं। याद रखें: सरल अच्छा होता है।

8-इसे व्यवहारिक बनाएं।:-

सर्वदा प्रयास करें कि अपने उपदेश की स्पष्ट रुप से व्यवहारिक प्रासंगिकता बताएं जिसे लोग अपना सकें। मसीहियों के मध्य प्रायः सबसे गम्भीर खतरा है 'बहुत अधिक ज्ञान, बहुत थोड़ी व्यवहारिकता।'

बहुत से मसीहियों ने उपदेशों को वर्षों तक सुना है। तो भी उनके जीवन में बहुत थोड़ा सा परिवर्तन या शिक्षा की व्यवहारिक अभिव्यक्ति पायी जाती है।

लोगों से बोलने मात्र से ही संतुष्ट मत हो जाएं। अपने निष्कर्ष को पूर्णतया स्पष्ट करें। व्यवहारिक परामर्श देने के लिए परिश्रम करें जैसे लोगों को परमेश्वर के प्रति अर्थपूर्ण तरीके से किस प्रकार प्रतिक्रिया करनी चाहिए।

उपदेशों के पश्चात व्यवहारिक कार्यक्रम बनाएं जिसमें लोग सम्मिलित हों ताकि वे वचन के सुनने वाले ही नहीं बल्कि करने वाले भी बनें।

2-विषय वस्तु को इकट्ठा करनाः-

पवित्र शास्त्र के खण्ड को पढ़ने के साथ-साथ हम सम्बन्धित सामग्री को किस प्रकार इकट्ठा करें?

1-विषय पर पहले क्या पढ़ा या सुना?ः-

अपनी स्मृति को चलाना आरम्भ करें। हो सकता है कि आपने इस विषय पर पुस्तक पढ़ी हो। वह पुस्तक क्या थी? इस विषय में उसमें क्या कहा गया? अपनी स्मृति को तब तक टटोलते रहें जब तक आपके जागृत मन में विचार पुनः वापस न आ जाएं।

हो सकता है आपने एक बार किसी को इस विषय पर उपदेश देते सुना हो। उसमें क्या कहा गया? उसे किस प्रकार प्रस्तुत किया गया? बहुधा जो कुछ कहा गया था वह विचार आपके मन में बीज रुप बन जाता है। इसी से, नए विचारों का पूरा कारवां आएगा।

2-विषय पर पहले पवित्र आत्मा ने क्या दिखाया?ः-

यह वह स्थिति है जहां पर लिखित नोट की कापी रखने के लाभ को स्वीकारा जाता है।

कभी-कभी महीनों या वर्षों पूर्व, परमेश्वर ने आपको इसी शीर्षक पर कुछ रुचिकर विचार और अन्तर्दृष्टि दी। यदि आपने उन विचारों को नहीं लिखा, तो हो सकता है कि उनको पुनः याद करने में आपको परेशानी हो।

परन्तु यदि आपके पास लिखित नोट की वह कापी है जिसमें आपके मनन किए गए विचार लिखे हुए हैं, तो आप इससे सुपरिचित होने के लिए अपने मन में पुनः वापस जा सकते हैं कि पवित्र आत्मा ने आपको उस समय क्या दिखाया था।

यदि आपने ऐसी कोई कापी नहीं बनायी, तो कहीं शांतिमय स्थान पर चले जाएं ताकि आपका मन उस विषय पर निर्विघन मनन कर सके। मनन करना उन बातों को स्मरण करने में आपकी सहायता करेगा जो आपको आत्मा के द्वारा सिखाई गयीं।

Creation Autonomous Academy

3-विषय से सम्बन्धित क्या कुछ ध्यानपूर्वक देखा?ः-

बहुधा हमने उन बातों को देखा है जो इस विषय पर प्रकाश डालती हैं जिसको हम देख रहे हैं। हम अपने अनुभव से उन घटनाओं को याद कर सकते हैं जो उस सत्य को किसी न किसी कोण से प्रकट करते हैं जिसे हम अब देख रहे हैं।

प्रकृति से लिए गए दृष्टांत प्रायः पवित्र शास्त्र पर आश्चर्यजनक प्रकाश डालते हैं। प्रकृति का परमेश्वर बाइबल का भी परमेश्वर है।

4-विषय पर पहले क्या सोचा?:-

दिए गए विषय पर हमारे बहुत से पहले विचार अवचेतन मन में दबा दिए गए। उनको पुनः ऊपरी स्तर पर लाने की आवश्यकता है। इसे प्रायः गहन मनन के समय में सम्पादित किया जा सकता है।

जैसे ही हम अपने मनों को बाइबल पर केन्द्रित करते हुए शांति से बैठेंगे, दबे हुए विचार फिर से ऊपरी सतह पर आ जाएंगे।

बैठें और ध्यान मग्न हों। उनको याद करने की इच्छा करें जो आपके विचार थे। उनके द्वारा अपने मन को पुनः ताजा करें।

5-विषय पर किससे या क्या परामर्श ले सकते हैं?:-

बाइबल के शीर्षकों को सह उपदेशक के साथ विचार-विमर्श करना सर्वदा प्रेरणादायक और उपयोगी अनुभव होता है। यदि आपको ऐसा करने का मौका मिले, तो उससे लाभ उठाएं इससे सब की उन्नति होगी और सबको ज्योंति मिलेगी।

3-विषय वस्तु की तैयारी:-

उपयुक्त, प्रासंगिक खण्ड पाने के पश्चात उसको निम्न तरीके से जांचें-परखें :

1-खुला विचार रखें :-

इस बारे में पहले से सोचे गए विचारों को अलग रख दें। कुछ नया सीखने और प्राप्त करने के लिए अपने मन को खुला रखें।

किसी ने इस प्रकार कहा है, 'यदि हम सचमुच आत्मिक रुप से बढ़ना चाहते हैं, तो हमको बाइबल के सभी उन भागों को अवश्य पढ़ना चाहिए जिनको हमने कभी भी रेखित नहीं किया।'

बार-बार हमने विचारों को दृढ़ किया है और हम उन बातों को देखने के लिए प्रवृत्त हैं जो उनको प्रमाणित करती हैं जिस पर हम पहले से विश्वास करते हैं। हमें परमेश्वर के वचन के पास निष्कपटता और खुलेपन से जाना चाहिए। परमेश्वर के वचन को निष्प्रभावी या 'अमान्य' मत ठहराएं क्योंकि आपके धार्मिक रीति-रिवाजों ने किसी भी अन्य बात की ओर आपका मन बन्द कर दिया है जो उससे भिन्न है जो आप विश्वास करते हैं। (मर० 7:13)

निश्चय आपके पास वह सारा ज्ञान नहीं है जो परमेश्वर आपको देना चाहता है। जो भी नया सत्य परमेश्वर आपको देना चाहता है उसे सीखने के लिए तैयार रहें।

Creation Autonomous Academy

2-पूर्णतया जांचें।:-

खण्ड का विश्लेषण करें। उसकी जांच करें। इसकी पूर्ण रीति से जांच करने के लिए इसके टुकड़े करें। अपने मन को पवित्र आत्मा के समक्ष खुला रखते हुए ऐसा करें। परमेश्वर से नए विचार और प्रकाशन पाने के लिए तैयार रहें। उस सत्य को पहचानने की अपेक्षा करें जिसको आपने पहले कभी नहीं पहचाना।

परमेश्वर का वचन समुद्र के समान है। जितने गहरे आप जाएंगे उतने ही बहुमूल्य भण्डार आप पाएंगे। बहुत से लोग धरातल के आस-पास खोदने से ही संतुष्ट रहते हैं। उनके निष्कर्ष हमेंशा सामान्य उथले होते हैं। वे केवल वही बता पाने में सक्षम होते हैं जिनको लोग पहले से जानते हैं।

प्रभावशाली शिक्षा का रहस्य है सत्य के उन क्षेत्रों को देखा जाए जो पहले कभी लोगों पर प्रकट नहीं हुए। इस तरीके से, आप उनको जोश में लोने के लिए नए सत्य को बांट सकते हैं।

3-नया सोचें।:-

ऐसा मत होने दें कि आपके मन उस लीक पर रुके रहें जो आपने बनायी है। पवित्र आत्मा पर भरोसा करें कि वह आपके मन को प्रकाशमान करे। मुझे आशा है कि वह आपको कुछ देगा जिसको आपने पहले कभी नहीं जाना।

इसे बाकी बाइबल के साथ परखें। कोई भी सत्य, उस सम्पूर्ण सत्य के प्रतिकूल नहीं होता जो पवित्र शास्त्र में प्रकट किया गया है। इसे अपने उपदेशक साथी के साथ भी परखें उसके साथ जो बाइबल के विषय में आप से अधिक जानता हो, उसके साथ नहीं जिसे आप जानते हो कि वह आपके साथ हमेंशा सहमत रहता है।

कोई भी मूल विचार पाने से मत डरें। ऐसा होने दें कि पवित्र आत्मा की आंधी आपके मन के जालों को उड़ा ले जाए।

4-सृजनात्मकता तक पहुंचें।:-

परमेश्वर सृष्टिकर्ता है। उसका वचन रचनात्मक है। प्रत्येक जो कुछ परमेश्वर द्वारा रचा गया, उसने अपने वचन के द्वारा इसे बनाया। परमेश्वर के वचन को बांधा नहीं जाना चाहिए। यह अभी भी रचना करने वाला और शक्तिशाली वचन है। जब यह छुड़ाए हुए हृदयों में जाता है, तो यह बनाता और नया करता है।

सर्वदा परमेश्वर के वचन की रचनात्मक सम्भावना से परिचित रहें। इस पर विश्वास रखने और इससे कुछ अपेक्षा करने की मनोवृत्ति से इसे व्यवहार में लाएं।

इसमें उससे कहीं अधिक शक्ति व क्षमता है जो आप समझ सकेंगे। यह सर्वदा उस सबसे अधिक उत्पन्न करने में सक्षम है जिसे आप समझते हैं।

याद रखें यह अद्भुत वचन है। परमेश्वर अपने वचन में है। उसका रचनात्मक स्वभाव उसमें है। आपकी सेवा का यह लक्ष्य होना चाहिए कि इस सृजनात्मक क्षमता को आप अपने सुनने वालों के जीवन में दे सकें।

5-सृजन करें।:-

आप परमेश्वर के साथ सहकर्मी हैं। परमेश्वर के अधीन आपका कार्य है मसीह की देह को बनाना। इसलिए आपके उपदेश भी सृजनात्मक होने चाहिए।

हो सकता है कि कभी-कभी आप जिस बात पर जोर दे रहे हैं वह बहुत भेदक हो। हो सकता है कि जो वचन आप उनको देंगे उससे श्रोता अपने हृदयों को जांचें और पश्चाताप करें। हो सकता है कि इसके प्रति उनकी प्रतिक्रिया में वे टूट जाएं और आंसुओं से रोएं, परन्तु उनको ऐसे ही नहीं छोड़ा जाना चाहिए।

Creation Autonomous Academy

एज्रा और नहेमायाह को देखो। (नहे० 8:5-12) दासता से वापस आए लोगों के लिए परमेश्वर ने भारी वचन दिया। जब उन्होंने व्यवस्था की व्याख्या को सुना, तो उन्होंने महसूस किया कि वे उन वर्षों में जब वे दासता में थे तो इससे कितना दूर चले गए।

इस कारण वे रोए और उन्होंने अपने सिरों को पश्चाताप में झुकाए रखा। भविष्यद्वक्ताओं ने उनको यह करने की अनुमति थोड़े समय के लिए दी। उन्होंने उनके विलाप में विघन डाला और उनको फिर से उनके पावों पर खड़ा किया।

उन्होंने कहा : 'जाओ---चिकना भोजन करो, मीठा-मीठा रस पिओ---। शोकित मत हो, क्योंकि यहोवा में आनन्दित रहना ही तुम्हारा सामर्थ्य है।' (नहे० 8:10)

बार-बार लोगों को दण्ड के नीचे मत लाएं। आपका परम लक्ष्य है कि उनको बनता हुआ, बलवन्त होता हुआ और उन्नत होता हुआ देखें। इसे सम्पादित करने के लिए आपको रचनात्मक रुप से सेवा करना चाहिए।

6-तुलनात्मक अध्ययन करें।:-

पवित्र शास्त्र के एक भाग की पवित्र शास्त्र के दूसरे भाग से तुलना करें। सर्वदा इसकी व्याख्या बाइबल के पूर्ण संदर्भ में की जानी चाहिए। इसकी मांग है सम्पूर्ण बाइबल की समझ की परिपक्वता।

आपको बाइबल का अध्ययन निरन्तर, नियमित रुप से करना चाहिए। 'अपने आप को परमेश्वर के ग्रहणयोग्य ऐसा कार्य करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर जिससे लज्जित न होना पड़े और जो सत्य के वचन को ठीक-ठीक काम में लाए।' (2 तीमु० 2:15)

7-व्यवहारिक उपसंहार लिखें।:-

सभी प्रभावशाली बाइबल उपदेश और शिक्षा का व्यवहारिक उपसंहार होना चाहिए। सेवकाई मन को जानकारी मात्र देना ही नहीं है, परन्तु जीवन को बनाना है। आपको सर्वदा व्यवहारिक उपसंहार बनाना चाहिए। अपने श्रोताओं को कुछ अर्थपूर्ण उत्तर दें। लोगों को उस वचन का उत्तर देना है जो आपने उनको दिया है।

4-उपदेश देना:-

1-खण्ड खोलें।:-

कलीसिया को कहना है कि वे पवित्र शास्त्र के उस भाग को खोल लें जहां से खण्ड लिया गया है।

2-खण्ड को उच्च स्वर से पढ़ें।:-

यदि आप एक विशिष्ट अध्याय की व्याख्या करने की योजना बना रहे हैं, तो इसे लोगों के सामने पढ़ें। हो सकता है कि कलीसिया आपके साथ पढ़ने में सहभागी हो, प्रत्येक जन एक या दो पद पढ़ें।

3-शीर्षक का परिचय कराएं।:-

यह बताएं कि आप इसे किस प्रकार व्यवहार में लाएंगे। अपने उद्देश्य और मानसिकता को बताएं ताकि लोग आपके साथ सहयोग दे सकें। तब वे समझ जाएंगे कि आप किस ओर जा रहे हैं और वे आपके साथ-साथ जाने में सक्षम होंगे।

Creation Autonomous Academy

4-सात सिद्धान्त:-

1) -स्पष्टता:-

इस बात का निश्चय करें कि आपकी व्याख्या आसानी से समझी जाए। बहुत गूढ़ या रहस्यमय बनने का प्रयास मत करें। प्रभावशाली उपदेश का उद्देश्य होता है कि सम्बन्धित खण्ड को समझने में उतना आसान बनाया जाए जितना सम्भव हो सके।

प्रवीण बनने या अपने ज्ञान का प्रदर्शन करने का प्रयास मत करें। जीवन की रोटी को इस तरीके से जोड़ने का प्रयास करें कि श्रोता इस बात को आसानी से समझ सकें जिस बात पर आप जोर देना चाह रहे हैं।

2) -सामंजस्यः-

अपने विचारों को उस शीर्षक के साथ समनुरुप रखें जिसकी व्याख्या आप करना चाह रहे हैं। अपने विषय में निष्ठावान बने रहने के द्वारा आप इसे अपने श्रोताओं के मन में प्रभावी बनाएं।

किसी भी बात को दोहराने से न डरें। कुछ सीमा तक यह आवश्यक है ताकि सत्य को श्रोताओं के हृदय में स्थापित किया जाए।

3) -सम्बन्धताः-

'सम्बन्ध' का अर्थ, एक साथ होना। अतः इस बात का निश्चय करें कि विचारों में परस्पर सम्बन्ध पाया जाता है। एक व्यक्ति जो असंगत बोलता है, वह वो व्यक्ति है जिसकी बातों में परस्पर समनुरुपता की कमी पायी जाती है। उसके लिए यह प्रायः असम्भव होता है कि जो विचार वह प्रकट करने की कोशिश कर रहा है उसके साथ वह उनको जोड़े।

ऐसा हो कि आपके विचारों की अभिव्यक्ति में स्पष्ट एकत्व हो। विचार से विचार के लिए मत भटकें। स्पष्ट और संक्षेप में कहें। इस बात का निश्चय करें कि आपके विचारों में सम्बन्धता पायी जाती हो। और वे अच्छे से एक साथ हों, प्रत्येक विचार एक दूसरे का सहायक हो और एक दूसरे का पूरक हो।

4) -निरन्तरताः-

विचारों का सही गठन श्रोताओं को विषय की ओर ले जाएं, हर एक बात पहली बातों से जुडी होनी चाहिए।

आपका बयान एक से दूसरे तक स्वतंत्रता से चलें जिसमें एकता और स्पष्टता हो। धीरे-धीरे अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते जाइए।

5) -संक्षेपः-

संक्षेप आपका लक्ष्य हो, यह बेहतर होगा कि श्रोता चाहें कि आप बोलते रहें। असम्बन्ध बातचीत करने से बचें क्योंकि इससे श्रोतागण भ्रम में पड़ जाते हैं।

6) -समझनेयोग्यः-

ऐसा एवं इतना बोलें कि श्रोता आपके संदेश को समझ जाएं। विषय को पूरा समझाएं परन्तु आपका वक्तव्य संक्षिप्त हो।

Creation Autonomous Academy

7) -निश्चितः-

यह बहुत महत्वपूर्ण है, जो कुछ आपने कहा है उसका निचोड़ है। अन्त का प्रतिफल क्या है? आपके शब्द क्या प्राप्त करेंगे? विश्वासपूर्वक सेवा करें परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार विषय को पूरा करेगा। परमेश्वर पर निर्भर रहें।

5-महत्वपूर्ण तथ्यः-

क-व्यक्तित्व मार्गदर्शनः-

प्रचार करना मानवीय व्यक्तित्व के द्वारा दैवीय सच्चाई को बताना है, इसलिए विकास और सही व्यक्तित्व का प्रयोग महत्वपूर्ण है।

1-अपने आप में:-

आप स्वाभाविक एवं आराम से रहें। दबाव घबराहट पैदा करता है और इसमें स्मरण शक्ति काम नहीं करती। शब्द एक के बाद एक नहीं निकलते। आपकी घबराहट श्रोताओं तक पहुंचेगी और वे भी दबाव में आ जाएंगे।

शिथिल होने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि अपने संदेश प्रचार को परमेश्वर को सौंप दें। अपनी ओर से उत्तम कार्य करें और परिणाम को परमेश्वर पर छोड़ दें।

2-नकल न करें:-

परमेश्वर ने आपको चुना है आपके व्यक्तित्व व गुणों के साथ उपयोग करने के लिए। किसी दूसरे प्रचारक की नकल न करें। नकल करना दाऊद का शाऊल के हथियार पहनने के समान है जो मदद की अपेक्षा बाधा डालते हैं। (1 शमूएल 17:38-39)

3-सत्यवान रहें:-

सच्चाई और अखण्डता प्रचारक के लिए आवश्यक है, आप परमेश्वर के लिए एक श्रोत हैं, वह आपके द्वारा श्रोताओं से बात करता है। इसलिए वह चाहता है कि आप सच्चा वर्तन बनें।

4-स्वच्छ वर्तन बनें:-

जैसा व्यवहार आप करेंगे वैसे ही श्रोता भी करेंगे। यदि आप नकारात्मक व्यवहार करेंगे तो वे भी नकारात्मक होंगे। आप जैसे हैं वैसा ही कार्य होगा। (उत्पत्ति 1:12-21) इसलिए स्वच्छ वर्तन बनिए।

5-निष्कपट रहिए:-

दिखावटीपन न हो जैसे आप हैं वैसे ही वास्तविक रहें। आप सच्चे और निष्कपट रहिए।

6-स्पष्ट उद्देश्य रखिए:-

व्यक्तित्व का सही ढांचा उस समय होता है जब जीवन के उद्देश्य स्पष्ट हों। पूर्ण समर्पित जीवन सत्य को प्रकट करने में उत्तम रुप लेगा। इससे आप परमेश्वर के अच्छे वक्ता बन सकेंगे। बुलाहट महत्वपूर्ण है।

Creation Autonomous Academy

7-सम्पूर्ण हृदय से करें:-

आधे हृदय से कार्य करने से सफलता नहीं प्राप्त होती। बहुमूल्य वस्तु बिना कीमत चुकाए नहीं मिलती। स्वयं को पूर्ण रुप से प्रचार के लिए दे दीजिए।

ख-स्वयं के बनें:-

1-यर्थाथ:-

परमेश्वर आपके व्यक्तित्व को अपने वचन को फैलाने में उपयोग करना चाहता है, इसलिए उसने आपको बुलाया और चुना है। आप भिन्न हैं यथार्थता धारण करें। स्वयं के बने रहें।

2-मौलिकः-

जो प्रचार कर रहे हैं वह आपका उत्पादन होना चाहिए। अपने विशेष व्यक्तित्व का उपयोग करें। परमेश्वर को अपनी इच्छा आपके जीवन द्वारा प्रकट करने दें।

3-साधारणः-

साधारण रहें, अधिक तेज और पेचीदा न बनें।

4-आकर्षकः-

संसार का सबसे आकर्षक व्यक्तित्व केवल प्रभु यीशु मसीह में देखने को मिलता है। मसीह का आकर्षण उसकी शारीरिक बनावट में नहीं, यह उसका चरित्र और व्यक्तित्व का आकर्षण था। उसके समय में बहुत लोगों ने उत्साह दिखाया। बाइबल कहती हैः 'साधारण लोग उसकी सुनकर बहुत प्रसन्न हुए।' (मर० 12:37) वे उसके पीछे ऐसे खिंचते जैसे लोहा चुम्बक की ओर खिंचता है। उसकी दया उसके व्यक्तित्व की चुम्बकीय शक्ति थी। जहां कहीं वह गया बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गयी। पवित्र आत्मा आपको ऐसे ही आकर्षक बना सकता है।

5-स्वच्छन्दः-

अस्वाभाविक रुप से कार्य न करें, स्वतंत्र होकर स्वाभाविक कार्य करें। स्वच्छन्दता का अर्थ है कि चीजें बिना किसी दबाव के अपने आप हों।

6-स्वीकारिताः-

एक अच्छे प्रचारक को विभिन्न परिस्थितियों से गुजरने की क्षमता सीखना चाहिए। पवित्र आत्मा का मार्गदर्शन प्राप्त करें।

मसीही आराधना की सफलता की कुंजी है, 'जिस मार्ग में परमेश्वर चल रहा है उसमें उतर कर उसके साथ आगे बढ़ जाओ।'

7-शक्तियुक्तः-

सामर्थ्य पवित्र आत्मा प्रदान करता है। प्रचार एक बहुत उच्च कार्य है। बुलाहट प्राप्त प्रचारक सम्पूर्ण हृदय से अपने आपको समर्पित करे, जिससे सबसे उच्च स्वर का प्रभावशाली बन जाए। पतरस की तरह का प्रचारक बन जाए। (प्रेरितों० 2)

Creation Autonomous Academy

ग-अति आवश्यक साधनः-

प्रभावशाली प्रचार के लिए तीन आवश्यक बातें-

1-दर्शनः-

हर प्रचारक को दर्शन की आवश्यकता है। वह उद्देश्य जो उसमें उत्तम रीति से पूर्ण होगा। जब तक आपके अन्दर परमेश्वर के उद्देश्य का ज्ञान नहीं है तब तक आत्मिक, दैवीय उद्देश्य की प्राप्ति में असफल रहेंगे।

2-शब्दावलीः-

प्रचारक की भाषा उन शब्दों से बनती है जो वह जानता है और जिनसे वह परिचित है। शब्द ही वह हथियार है जिन्हें प्रचारक अपनी बुलाहट में लगा देता है। जितना अधिक शब्दों को वह जानता है उतना ही अधिक वह अपने विचार प्रकट कर सकेगा।

शब्द प्रचारक के लिए ऐसे हैं जैसे चित्रकार के लिए ब्रश या रंग। एक प्रचारक शब्दों से एक सुन्दर तस्वीर खींच सकता है। जब वह दृश्य का वर्णन करता है श्रोतागण समझ लेते हैं कि वह क्या वर्णन कर रहा है। शब्द वर्णन के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।

अपनी शब्दावली का विकास कीजिए आप पहले से अच्छा बोल सकेंगे। लोग आपको बड़ी रुचि से सुनेंगे-यदि आप अपने विषय को ठीक तरह से उन्हें समझा सकें।

3-आवाजः-

वास्तव में प्रचारक के लिए आवाज तो एक धरोहर है। इसलिए उसकी अच्छी देखभाल कीजिए। अपनी आवाज के प्रति जागरुक रहिए और समय -समय पर इसमें सुधार लाते रहिए।

घ-लोगों के मध्य बोलने के सिद्धान्तः-

1-सांसः-

सही सांस प्रचारक के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

2-स्पष्ट उच्चारणः-

स्पष्ट उच्चारण सही प्रचार की एक कला है। सही उच्चारण करने वाला स्पष्ट बोलता है। उसे आसानी से समझा जा सकेगा। वह अपने शब्द ठीक-ठीक बोलता है।

3-रुपः-

बोलने में विभक्ति या रुप आवाज पर आधारित है। आवाज में उतार-चढ़ाव होना चाहिए। यदि आपकी आवाज ऊंचे स्वर की है तो नीचे स्वर का अभ्यास कीजिए। अपनी आवाज में भिन्नता लाने का प्रयास कीजिए।

4-उच्चारण की गतिः-

एक ही गति से बोलते रहना नीरस हो सकता है। अपनी गति में भिन्नता रखिए। बहुधा प्रचार साधारण गति में सुनाए जाएं ताकि लोग आसानी से सुन सकें। बीच-बीच में समय-समय पर कभी धीमा व कभी तेज बोलना चाहिए।

Creation Autonomous Academy

5-विस्तारः-

आप जो कहना चाहते हैं उसमें आपकी आवाज का विस्तार बहुत महत्वपूर्ण है। प्रचार का अधिक भाग विस्तार में होना चाहिए। परन्तु यह श्रोताओं के सुनने और समझने लायक हो।

आप अपने प्रचार का अरम्भ इस प्रकार करें जैसे साधारण बोलचाल प्रारम्भ कर रहे हैं। आवाज को ऊंचा केवल उस वक्त करें जब कोई विशेष बात कहना हो।

यदि आप समय-समय पर अपने विस्तार को ऊंचा-नींचा करेंगे तो श्रोतागण विशेष ध्यान देंगे। जब आपकी आवाज धीमी हो जाती है, वे हर एक शब्द को पकड़ लेंगे।

6-रुकनाः-

रुकने से घबराइए मत, यह आपके प्रचार में सहायक है। बिना रुके तेज गति का प्रचार लोगों को समझने में कठिनाई उत्पन्न करता है। श्रोताओं को विचार करने के लिए समय चाहिए कि आप ने क्या कहा। यह सत्य को ग्रहण करने में सहायक होता है।

7-दोहरानाः-

महत्वपूर्ण वाक्यों को बार-बार दोहराइए। यह विषय को श्रोताओं के मस्तिष्क में डाल देता है। अपने बिन्दु को कई तरीके से प्रस्तुत कीजिए।

ङ -प्रचारकों के लिए कुछ नुस्खेः-

1-स्वयं में रहें।ः-

आप पूरी तौर से आराम से रहें। नकल न करें। हमेशा स्वाभाविक और स्वयं के बने रहें।

2-स्वयं को भूल जाएं।ः-

लोगों के बीच में बोलने के लिए स्वयं की सतर्कता रुकावट पैदा कर सकती है और हिचकिचाहट व अनिश्चितता ला सकती है।

तैयारी के हर क्षेत्र पर ध्यान दें जब प्रचार करने के लिए खड़े हों अपने आपको भूल जाइए। जो आपको कहना है पूरी तौर से उसमें खो जाइए।

3-धार्मिक आवाज न बनाएं।ः-

साधारण आवाज में प्रचार करने का अभ्यास करें। प्रतिदिन के वार्तालाप में प्रयोग होने वाली आवाज वास्तविकता को प्रगट करती है।

4-न धीमें बोलिए न चिल्लाइए।ः-

इतनी स्पष्ट आवाज में बोलिए कि सभी श्रोतागण सुन सकें। न बहुत धीमें बोलिए न बहुत जोर से। बहुत धीमें बोलने से श्रोता सुन नहीं पाएगा इसके विपरीत बहुत जोर से बोलने पर ध्वनि प्रदूषण हो जाएगा। आवश्यकता के अनुसार आवाज का प्रयोग करें। छोटे समूह के लिए धीमी व बड़े समूह के लिए ऊंची आवाज ताकि सभी सुन सकें।

Creation Autonomous Academy

5-आवाज में उतार-चढ़ाव लाएं।ः-

प्रचार के दौरान प्रचारक की आवाज में आवश्यकता अनुसार उतार-चढ़ाव होना चाहिए।

6-अपने को ग्रहणयोग्य बनाएं।ः-

श्रोताओं के आत्मविश्वास को जीतें ताकि वे आपको ग्रहण कर सकें।

7-स्वच्छ साधारण वस्त्र पहनें।ः-

आपके कपड़े लोगों का व्यर्थ ही ध्यान न खींचें यथासम्भव स्वच्छ, उपयुक्त और साधारण वस्त्र ही पहनें। अपने वस्त्रों से श्रोतागणों की संस्कृति पर कोई बुरा प्रभाव न डालें।

8-सीधे खड़े हों।:-

जब आप किसी भीड़ को सम्बोधित करें तो दोनों पांव पर सीधे खड़े हों, जिससे आप सही दिखें।

सीधे खड़े होकर भीड़ की ओर अपना मुंह करके किसी भी चीज पर न झुकें, पुलपिट है तो उस पर अपने नोट्स और बाइबल ही रखें पर झुकें नहीं। सीधा खड़ा होने से आपकी सांस में सहायता मिलेगी। और जब श्रोताओं का सामना कर रहे हैं आपकी आत्मनिर्भता बढ़ेगी।

9-स्वाभाविक रुप से हिलें-डुलें।:-

आपकी आवाज के साथ-साथ आपकी शरीर भी प्रचार प्रगट करती है। यह महत्वपूर्ण है कि जब आप बोल रहे हैं स्वाभाविक रुप से हिलें डुलें। शरीर का अधिक हिलना डुलना नियंत्रण में रखें, जब आप किसी बात को शब्दों में वर्णन कर रहे हैं तो यह स्वाभाविक है कि आपके हाथ भी प्रचार प्रगट करें। आपके इशारे सही होने चाहिए।

10-आंखों का सम्पर्क स्थापित करें।:-

सीधे श्रोताओं की ओर देखिए। आपकी दृष्टि श्रोतागणों के ऊपर लगी रहे जिससे वे महसूस करें कि आप उनसे ही बातें कर रहे हैं। इस प्रकार आप लोगों के साथ अच्छा सम्बन्ध स्थापित कर सकेंगे।

11-चेहरे के हाव-भाव स्वाभाविक हों।:-

आपका चेहरा भी समाचार देता है। अपने चेहरे के हाव-भाव को रोकिए जब तक कि आप किसी विशेष बात को न कर रहे हों। चेहरे का प्रदर्शन स्वाभाविक होना चाहिए। यदि आपका विषय दुखित व गम्भीर न हो तो हमेशा प्रसन्न रहें।

प्रचार हेतु परमेश्वर की उपस्थिति, उसका अभिषेक एवं उसकी आशीष आवश्यक है। परमेश्वर तैयार लोगों को आशीषित करता है।

ऐसे सिद्धान्तों का तिरस्कार न कीजिए साथ ही इन पर निर्भर भी मत रहिए। जो आप अपने प्रचार के द्वारा कहना चाहते हैं उसे परमेश्वर ही पूरा कर सकता है। आपका विश्वास परमेश्वर पर दृढ़ हो, आपके प्रचार की योग्यताएं परमेश्वर ही पूरा कर सकता है।

Creation Autonomous Academy

Bibliography

1. Gibson,RJ, Interpreting God,s Plan, Paternoster,1997
2. Klein,William W, Blombrg, Craig L and Hubbard, Robert L Jr, Introduction to Biblical Interpretation, Dallas: Word 1994
3. Henry A.Virkler, Hermeneutics, Principles and Processes of Biblical Interpretation,
4. Baker Books a division of Baker Book House Company, Grand Rapids, Michigan 49516-6287
5. Mark, Rene Introduction to Hermeneutics, New York: Herder and Herder, 1967
6. Palmer,R.E., Hermeneutics, Evanston,Ill: Northwestern University Press, 1969
7. Donald K.Mckim, The Authority and Interpretation of the Bible, San Francisco: Harper & Row, 1979
8. Berkhof,Louis, Principles of Biblical Interpretation, Grand Rapids: Baker, 1950
9. Mickelsen,A.Berkeley, Interpreting the Bible, Grand Rapids: Erdmans, 1963
10. Ramm, Bernard, Hermeneutics, Grand Rapids: Baker, 1971
11. Terry, Milton S., Biblical Hermeneutics, Grand Rapids: Zondervan, 1974
12. Roy B.Zuck, Interpretation, OM Secandrabad, 2002
13. Rev. Ian Lewis, Expository Preaching Course Notes, 1996
14. Rev.Rupert Bentley-Taylor, Expository Preaching Course Notes, 1996
15. Rev. David Seral, Expository Preaching Course Notes, 1996
16. Rev.Philip Heair, Expository Preaching Course Notes, 1998
17. Preaching, Allahabad Bible Sminary, Allahabad,1999
18. Sephard Staf, India Bible Litreture, Kilpak, Chennai
19. JONES, D.Martyn Lloyd, Preaching and Preachers, London, Hodder and Stoughton, 1985
20. ADAM Peter, Speaking God,s Words, England:IVP, 1996
21. STOTT, John, I Belive in preaching, London, Hodder & Stoughton, 1983
22. ROBINSON, Haddon W, Expository Preaching Principles and Practice,Leicester:IVP, 1980
23. Lane, Denis, Preach the word, England: Evangelical Press, 1986
24. Blackwood, Andrew, Expository Preaching for Today, Reprint. Grand Rapids: Baker, 1975
25. Broadus, John A., Treatise on the Preparation and Delivery of Sermon, Rev.ed.New York: Harper &Row, 1944
26. Brooks, Phillips, Lectures on Preaching, London: H.R.Allenson, 1877
27. Perry, Lloyd., Manual for Biblical Preaching, Grand Rapids: Baker, 1965

Creation Autonomous Academy

प्रचार
कौशल

Dr. Ram Raj David

Duluvamai, Manikpur, Pratapgarh,
Uttar Pradesh – 230202
Email: drramraj64@gmail.com

Creation Autonomous Academy